मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

अंक—२ अङ्क—६ [illegible] मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

सरकारी पुरस्कार आ मैथिलीक साहित्यकार

कुनू क्षेत्र मे कोनो आ देश मे पैघ आन्दोलन मे साहित्यकारक भूमिका प्रधान रहल-ए। साहित्यकार क्रान्ति द्रष्टा होइत छथि। ई पुरान रूढ़ि-रीति के तोड़ि आन्दोलनक वास्ते तैयार करैत छथि आ पुनः आन्दोलनक सीमा-रेखा करैत छथि। [illegible] बिना [illegible] नहि होइछ। ई सत्य थिक आन्दोलनक बीच मे मारि [illegible] विचारक [illegible] दुःशासन [illegible] कतेक [illegible] करैत छथि, [illegible] छथि। [illegible] साहित्यकारक ई गरिमा अछि। ई सदा सम्मानीय होइत छथि, अनुकरणीय होइत आ समाज के पथ प्रदर्शन करैत छथि।

[illegible] सरकारी पुरस्कार नहि होइत तैं ते साहित्यकार [illegible] छथि। [illegible] दिशा निर्देशक [illegible] भेटल [illegible] करैत छथि। [illegible] सिनेही। [illegible] साहित्यकार [illegible] पर अविराम चलैत रहैत छथि।

"यदि हृदिने मे आतुर मैथिली साहित्यकार दिस तकैत छी पुरा मे [illegible] मिथिला [illegible] मनुष्य [illegible] [illegible] मिथिला-मैथिल-मैथिली [illegible] अधिकार [illegible] रहल-ए। मैथिली आन्दोलन [illegible] रहल-ए।

मानव जीवन मे भाषाक की महत्व छैक से [illegible] आवश्यकता नहि। वर्तमान मे [illegible] आन्दोलन [illegible] 'भाषा' के [illegible] प्रथम [illegible] 'साहित्य' पुरस्कार विजेता साहित्यकार [illegible] छथि। [illegible] बुद्धिजीवी [illegible] छथि। [illegible] मैथिली आन्दोलन मे साहित्यकारक [illegible] रहल-ए। कुनू-कुनू [illegible] आन्दोलन के मुखिया राजनीतिक [illegible] नहि [illegible]। [illegible] मैथिली आन्दोलन [illegible] रहल-ए।

[illegible] हेतु किछु साहित्यकार [illegible] मैथिली विरोधी [illegible] रहलाह। [illegible] साहित्यकार के पुरस्कार देबाक घोषणा कएलक। समाचार-सूत्रक अनुसार श्री नागार्जुन (यात्री जी), आरसी प्रसाद सिंह, श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार [illegible] नाम एहि योजनान्तर्गत अछि। [illegible] साहित्यकार छथि [illegible] ओना ई लोक [illegible] मैथिली विरोधी [illegible] रहलाह। [illegible] मैथिली विरोधी [illegible] सरकारी पुरस्कार [illegible] छथि।

[illegible] महाकवि नागार्जुन [illegible] 'सरकारी [illegible]' [illegible] छथि। 'कविवर आरसी प्रसाद सिंह' [illegible] हिन्दी साहित्यकारक रूप मे [illegible] छथि। [illegible] 'लोक' [illegible] छथि

[illegible]

> कालिदास बिनु मैथिलीक श्री
> नागार्जुन बिनु मिथिला धाम
> छाड़ि जाति मुड़इ काज हम
> विद्रोही मिथिलाक प्राण

❊ मैथिली ❊

मैथिली—माने मैथिली भाषा हिमालय सँ गंगा तक आ कोसी सँ गंडक तक [illegible] मिथिला देशक भाषा, तीन कोटि मैथिलक मातृभाषा।

ओना ई सर्वमान्य अछि जे भाषा कुनू खास व्यक्ति वा वर्गक नहि होइ छइ, परंच मिथिला मे [illegible] मैथिली कुनू विशेष वर्गक भाषा थिक, [illegible] प्रभावक विचार मेटल। [illegible] कएल, [illegible]।

भाषा [illegible] विचार [illegible] आवश्यक। भाषा के [illegible] मनुक्खक सामाजिक प्राणी थिक। [illegible] अन्यान्य [illegible] विचारक आदान-प्रदान करैत, [illegible]। [illegible] [illegible] भाषा के immediate reality of thought कहलनिहें। भाषा बिना विचारक अस्तित्वे ने रहैत। [illegible] मनुक्खक सामाजिक आ विवेकशील प्राणी [illegible] मनुक्खक [illegible] मानसिक [illegible] भाषा [illegible] [illegible] भाषा मनुक्खक [illegible]

आविष्कार [illegible] मनुक्ख, [illegible] भाषा [illegible] [illegible]।'

मनुक्ख विचारशील प्राणी थिक, [illegible] विचार [illegible] [illegible]। [illegible] ओकर सामूहिक प्रयास आ [illegible] विचार [illegible] भाषा [illegible] [illegible] [illegible] अधिकार करै छथि।

विचारक मूल थिक संघर्ष। मानव सभ्यताक आदिकाल सँ आइ धरि [illegible] मनुक्ख के संघर्ष [illegible] संघर्ष [illegible] [illegible] भाषा एहि मे सहायक सिद्ध भेलैक। [illegible] संघर्ष [illegible] सामूहिक रूप मे [illegible]। [illegible] 'भाषा [illegible] माध्यम थिक, [illegible] संघर्षक आ [illegible] विचारक [illegible] भेल।'

आब त विचार [illegible] विचारक [illegible] [illegible]

(शेषांश पृष्ठ [illegible])

[illegible] मैथिली [illegible] हिन्दी साहित्य (?) [illegible] साहित्यकार [illegible]

[illegible] मैथिली आन्दोलन के [illegible] मैथिलीक विकासक हेतु साहित्यकार [illegible] कि साहित्यकार [illegible] ? कि [illegible] ?

[illegible] मिथिला [illegible] मैथिलीक साहित्यकार [illegible] मिथिला-मैथिली विरोधी [illegible] [illegible] मैथिलीक साहित्यकार [illegible] मिथिलावासी [illegible] मिथिला-मैथिली पर [illegible]—[illegible]।

● जय मैथिली

गाम सँ दूर : मिथिलाक मजदूर—४

उषा आ जयाक श्रमिक

बिहुली गंगा आ बिहार महीनक बेस उषा आ जया नहि मात्र देश अपितु बिदेशो मे विख्यात अछि। एकर कारणक कारण छैक जे गंगा आ मशीन उच्च कोटिक होइत छैक जे मिथिलाक बहुत श्रमिकक परी-श्रमक फल थिक। एहि श्रमिक मे अधिकतर तीन टा मिथिलाक श्रमिक अछि।

एहि दुनू कारखाना मे जे कि एके मालिक अछि, श्रमिक वर्ग केँ तीन श्रेणी मे विभाजित कयल गेल अछि—(१) अफसर, (२) स्टाफ, (३) लेबर। मैथिल श्रमिक प्रायः दू श्रेणी मे छथि। ओना एहि कारखाना सब मे व्यावसायिक सम्पूर्ण श्रमिक मे बीच एक विभाजन छैक? एहि प्रश्न आवश्यक छैक जे एखन श्रेणी सँ बहुतोक श्रमिक के कारणे राजि प्रभाव रख देल ? से से हो, मजदूर यातायातिकता दर्शन छैक।

एहि दुनू कारखाना मे कार्यरत श्रमिक (संख्या ६००) मे सँ ओना मैथिल पड़ैत छथि। महत्व प्रयोजन एहि मे अपनाए छोट-छोट काज कारखाना मे काज केनिहार मे हिनक सौभाग्यिक आर्थिक स्थिति ठीक छनि। कम्पनी द्वारा मजदूर मे ओवरटाइम सुविधा, मेला मात्रक शिक्षा हेतु विद्यालयक सुविधा प्रदान कयल गेल-छनि। मजदूर ई नहि बिसरबाक चाही जे ई महिला मैथिल सेहो श्रमिक समुदाय केँ पर्याप्त संघर्ष करय पड़ल छनि। एकटा काज सुचित करबा कि ६ मास कैं दिन नहि कम्पनी हड़ताल चलैत आ मजूरी सँ सम्बन्ध यातायात होइत पहुँचलैन्हि। ओहिठाम नहि, जे मात्र एक हिनका सोचनि मे अछि जे एक प्रति आरम्भ मे सेहो नहियें बिरोध छलनि। कहिया कारखाना सुरक्षा छल, मात्र मैथिलक ताका महिला सब श्रमिक वर्ग काज करैत छलाह। कारखानाक ठाकुरा मे मिथिलाक बीच लाख सब काज करैत मेला लाखक लेल छल। ओना एहि सब काज मे मिथिलाक श्रमिकक वे सम्बन्ध आइ एहि दुनू कारखाना मे अछि, आइ आ बहुत बेसी नहिये छल। कारखाने बीच अवस्था प्रश्न सब संस्था देखरेख हुएत मेल आ काज ओकर बहुतो भ नहि सर्वसम्मति, कहला एकर संख्या बिरादरीक कमिटी सेहो छल अछि।

कहिया एहि कम्पनीक नाम पेश-सिंह में सेहो, महिला एहि मे कार्यरत अधिकार नाम मैथिली प्रयास मे। एहि मे एक काज नाम अधिक संख्या मैथिल श्रमिक छथि सेहो नहि, अपितु कारिगरक श्रमिक अधिकांश बेसी अच्छा छथि। हिनका सौभाग्य मे एहि जातीय चेतना त अछि, तैयो मैथिली प्रतिनिधि मे उपस्थ

महत्व रहलाहि। कम्पनीक अधिकांश मैथिली सेहो संस्थाक पुरस्कारक एहि दुनू कम्पनीक श्रमिक वर्ग मुक्त-ए आ बहुतरास छथि। कतेक दुनू कम्पनीक पर्व होइत, आर्थिक सहयोग देल ओकर जाहि एहि उत्सव श्रमिक सौभाग्य दिन सौंदर्य जाइत छथि। किन्तु से मात्र आर्थिक सहयोग नहि सीमित रहि त ओ मिथिलो सम्बन्ध होइत। मिथिला रंग मंचक सुपरिचित आ कुशल कलाकार गौतम भारती, जनार्दन झा, अवध नारायण कर्ण, सदानन्द झा, कामी कान्त ठाकुर आदि एहि कम्पनीक श्रमिक छथि। गौतम भारती चौधरी नामी होइतहुँ मैथिली मंचक करैत देश आ आइ सहायक तरंग उपस्थित मेल छथि तथा कुछु निबन्ध इतिहासक कहियो मे बिसरि सकैछ। डॉ॰ प्रेमशंकर सिंह कर महान संचय इतिहास लेखक केँ अहि हो त मिथिलो नाटकीकर नाम उपस्थित से विलक्षण भाएत। जनार्दन झा साथ कलाकारे नहि निष्कासित नाटकक लेखक सेहो छथि। हिनका आब दू गोट नाटक विलक्षण प्रकाश छनि, मैथिली बेस्टीहि मञ्चन प्रकाशित नहि भ सकल अछि। दुनियाँतोकि संयोजकक सह-योगी तथा 'मैथिल प्रभा' क सम्पादक सेहो रहल छथि। अहिना काज नारायण कर्ण मात्र कलाकारे नहि, कतेको नाटकक निर्देशन सेहो सुचक छथि। एही कम्पनीक रामचन्द्र मिश्र मुक्ति सौभाग्य मैथिल लावक तथा 'मैथिल प्रभा' क सेहो मे सं एक—नाट्यक छथि।

एहि कम्पनीक मैथिल श्रमिकक तथा एकटा विशेषता ई छनि जे ई कतेको विविध राजनीतिक दल मे सम्बद्ध रहितहुँ मैथिली मिथिलाक मात्र पर एकमत्त छथि। ई कारेल (१) क अधिक कर्मचारी होइतो का व्यापारीक बहुतरास हाथक आ अपनी कुछ एकक महत्व अधिक मे पहुँचा अपन काज पहुँचल छलाह, जेना आब काज मे रहैत छथि।

एहि कम्पनीक श्रमिक सौभाग्य एतो संस्थाक निर्माण मे हो चैती छथि—जे मिथिलाक नाम भाषक बाहर। ई संस्था कुछु मैथिल श्रमिक करब 'भावक प्रश्न' करैत छथि त हिनका सौभाग्य सौभाग्य एवं मिथिलाक व्यवसायसम्बन्ध विवाह करैत अछि। एहि संस्थाक माध्यमे प्रयास मे एहिनो प्रत्येक सामाजिक कार्य मे बहुत बढ़ कामे युक्ति सब भला सुनि, नाम, संस्कृति क प्रचार सुरक्षा महत्व युक्त हिनका सौभाग्य के सब छथि।

—मुकलाका अली

विज्ञापन दाता सौभाग्य सँ—

'मैथिल प्रभा' मे अपन विज्ञापन दय काल उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सँ अभिव्यक्त करबा एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
अमरनाथ प्रकाशन,

मिथिला-विभूति—७

महाकवि गोविन्द दास

'मिथिला-विभूति' महाकवि गोविन्द दासक कथा मधुरमयी शिरनाक संहिता शतो मे अविरति विद्यापतिक देशरक्षनक आधार रहलो भेलो समयए लेल छल। हिनक पिताक नाम कुमरदास ओ छलनि। हिनक छोट भाइ रामदास छा सेहो विद्वान रहैत ओ सम्बन्धार छलाह, जिनक लिखल 'आनन्द विजय नाटिका' उपलब्ध अछि।

कविवर विद्यापतिक समकालिक शिव-सिंह (लखमी) छत्रपति मे रहल छ तेज अइ वादक सब मिथिलाक कठे गोविन्द दास केँ ओहि प्रमाण नहि छथि। हिनक लिखल पदक संख्या हजारक संख्या अछि। ओहिठाम गोविन्द-कविता विषय मे हिनक आनन्द रचनाक संग आइधरि नहि चलि सकैछ अछि।

हिनक पद मुख्यतः राधा-कृष्ण विषयक रहितहुँ भक्तिगति विद्यापतिक तथा शिव-शक्ति तथा अन्यान्य देवी-देवता पर सेहो समर्पित अछि। भक्ति-मधुर सौन्दर्य मिथिला मे प्रमाण कायम नामसँ महासेवी छथि। आइ नाम रचना ई कहाँ छल उदा विलोत छथि—उदात-सेवक आज विद्यापतिक पदेन पद गोविन्द दास?

मिथिल सेवी तथा हिनक रचनाक आधार पर प्रमाणित होइत जे ई तत्व कविक नहि विधि संहित, विविध शास्त्र विशेष, महान दार्शनिक तथा अतय विद्वानो छलाह। एकर समर्थना विद्यापति केँ 'कविपति' कहि सम्बोधित कहल—

कविपति विद्यापति मतिमाने।
जाक गीत जगचीत चोराओल
गोविन्द गौरि-सरस-रस-जाने॥

महाकवि महानतम मिथिलाक सब गौरव देल गए चित्र आइ मे ओ एतय ई स्थापित कौन छथि, ई कुल समय रहितहुँ भाव पर रचना काल नौका, जेना कि कौनाइ (मैथिली) जत काल अतीत हो।

जेना कि गोविन्द कवि आयत सँ महाकवि गोविन्द दासक सम्बन्ध मे हमरा सभ हमरा लोकनि केँ पूर्ण जानकारी नहि अछ कतय कौनाइक शोध-खोज नहि भेलाइ। हमरा लोकनि केँ एहि अन्वेषण करबाक बेल। अस्त कि न रहैत, जे आइ धरि हिनक समस्त पदक संकलनो नहि प्रकाशित भ सकल अछि। १९३६ मे महुरनाथ दीक्षित महाशय 'गोविन्द गीतावली' नामे किछु पद प्रकाशित करब कहैत सदब 'मिथिला मोदा' मे अनुदित हेतक कालो ठहर आहे नहि युक्ति ओकरा भारति आदि मे हेतले जे भरत गोविन्द दास के सम्पादक कवि महत्वपूर्ण आलोकी सौभाग्य सौभाग्य जे औजा-चोल काव्य जे कह महत्ता देखनि। १९७४ मे हर-रामनाथ झा 'गोविन्द भक्तन' नामे किछु पद प्रकाशित भेलनि तकर एहो हिनका सुचि संग्रह न भेलाइ। परिचय कह ले त पद संग्रह क कोनसंद आले गोविन्द दास केँ मैथिल देशक लनाकाओ कर्म प्रधान क सम-कर्मा।' मात्र संदीप तहरा कय लिखा ले)

उत्तर लिखल गेल अछ) हुनका मैथिल माना देखनि।

मैथिल जातिक ई विशेषता छलैक-ए जे अपन विभूति केँ, अपन बालू केँ नहि चीन्हैत। कहिना एहुमान जी केँ सेवी नाम नहि रैनि—का पुन जातिक तीर लगयला ? त हुनका अपन महत्व भान होनि, तहिना हमरो लोकनि केँ जखन केओ देखा देइ, परिचय करा देइ—तखने अपन विभूति केँ चीन्हैत छी। कविपति विद्यापतिक सम्बन्ध मे देल अछि, महा-कवि गोविन्द दासक सम्बन्धहु मे तहिना देल अछि। गोविन्द दास केँ निरूपित करबाक— ई बात सर्वप्रथम बंगला मे आलोचित नगेन्द्र नाथ गुप्त महाशय। १३३१ साल मे 'साहित्य परिषद्' पत्रिकाक कार्तिक संख्या, १३१४ साल मे साहित्य-परिषद् पत्रिकाक २५ म भाग मे १९१६ सालक होइ-अनादि नामक प्रकाशी मे (१९१० ई॰) मुकेश नामक Modern Review मे एहि सम्बन्ध मे हुनक अपन प्रकाशित लेख। ई सब भाषो १९३२ साल मे मिथिलो के ई सत्येन्द्र कवि-सब प्रकाशित भेल हुए त अनेक बाबूह मिथिक मे बताबि पत्र तथा महाशय सत्र विवेक सम्बोधनि। हुनक महत्वक हुनकहि केँ गोविन्द दास मैथिल नहि, बंगाली छलाह। ओ एहि प्रश्न क महाकवि केँ बंगाली घोषित उत्तर करबा ओ कोनाक प्रचार कैल। बंगाली सेहत आ चिन्तन छल मैथिल देखते विद्वान नहि रैल। महा-कवि गोविन्द दास सब सौन्दर्य कविता सहि रैलाइ।

विद्यापति साहित्यिक आ गोविन्ददास क साथ सम्बद्ध शोध आ विचार संस्कार-सम्बद्ध विज्ञान विद्वो महामान महाशय द्वारा भेल अछि। ताहि मे विमान बाबू अमर मुखर्जी तथा कार्यकारिक बंगाली विद्वानक बहुतेरे अर्थ हत गोविन्द दास केँ बंगाली कवि प्रमाणित करैत छथि। स्वयं महाशय श्री रमानाथ झाक तथा दीक्षित महाशयक तर्क केँ सब तरहतरह संग कारि देत छथि ताहुठाम हुनक अपन तथ्य कुछ-ओक तर्क सँ हो नाही महत्वपूर्ण तत्त्व ओकरा भ सकैछ। उदाहरण स्वरूप कुमार सेन महाशय महाकवि गीत—रचित-चिति-प्रति काल-सम्बद्धी—

मैथिल मुख मे रचनाक बात करैत नहि छथि जे ई ले कि सेवक ओहि ठीक ए मिथिल अवैत त मुकुमार बाबूक कथन छल ए कि अंगरेज होइत के महा-कवि लेखक छलाह—का ए जो मैथिल नहि छलाह ? ऐसो जे अपना बहुत लेख-ए के विद्यापति के राधा-कृष्णक लीला गीत लखलनि से मिथिलावासी आदिक नहि कहल जाइत छथि। त कि हुनक गाने लेख के विद्यापति सेहो मैथिल नहि छलाह ? नामक हर्षक विषय ते सुकुमार बाबू बहुत पत्र विद्वान मन्त्रीति बाबू सेहो लिखल—

(शेषांश पृष्ठ बाद मे)

कविता

भावात्मक एकता के सम्बन्ध

तीनटा मुक्तक

(१)

नहि छी केवल मुस्लिम, हिन्दू
नहि हिन्दू छी मुसलमान
"हाशमी" ई अनिवार्य आइ अछि
छी हम पहिने इनसान

(२)

सब छी "आदम" केर औलाद
अथवा "मनु" केर अछि सन्तान
भाग भाग मे बेहल [illegible]
केवल ई [illegible] [illegible]

(३)

सब भारत ई अछि के [illegible]
"आदम" केर अछि [illegible] [illegible]
एतह "सीता" केर अछि [illegible] आ
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

—फजलुर रहमान हाशमी

'ले मशाल सब कलुष जरा दे'

[illegible]

—[illegible]

[illegible] लघु कथा

गिरगिट

[illegible]

भारत रत्न

[illegible]

● [illegible]

डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ थैलीनाथ मिश्र प्रकरण

[illegible]

५०% (४०,००० [illegible]) [illegible] २ [illegible] आ बाकी १% [illegible] [illegible] निर्णय [illegible] [illegible] प्रमाण [illegible] [illegible] १(७४) प्रति [illegible] [illegible] (१२०५) [illegible]। [illegible] [illegible] सरकार [illegible] ७१२ [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible]।

३) [illegible]—[illegible] [illegible] शिक्षा [illegible] परिवर्तन [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] प्रति [illegible] ६६ टाका [illegible]। किन्तु [illegible] [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (टी० आइ० बी०) [illegible] गेलैक।

४) [illegible]—[illegible] [illegible]। शिक्षा [illegible] निगम [illegible] 'पीपुल्स [illegible]' [illegible] [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible]।

५) [illegible]—१९८० मे शिक्षा [illegible] [illegible] ८२ प्रति [illegible]। १२ [illegible] १९८१ [illegible] [illegible] ६ मास [illegible] [illegible] शिक्षा [illegible] ५० [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible]।

६) [illegible]—१९८१-८२ मे [illegible] ८० [illegible] [illegible]। १९८३ मे [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible] Estimate committee of Bihar [illegible] Associated Engineering corporation [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible] (१,४४,४०० [illegible]) ६१,८६१) [illegible] २,१४,५०० [illegible] (१,३६८) [illegible]।

अजगुत-अनटोटल

• [illegible] [illegible] मंत्री डा० [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १, [illegible] [illegible]।

[illegible] Irregulari-ties [illegible] शिक्षा विभाग मे [illegible]।

७) [illegible]—(१५०००) [illegible] शिक्षा [illegible] प्रति [illegible] (१००) [illegible]। [illegible] Engineers Association [illegible]।

८) [illegible] ६००० Asstt. Engineer [illegible] १९७८ [illegible] [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible] Personal Asstt. [illegible] २५ [illegible] शिक्षा [illegible]।

९) शिक्षा [illegible] बी० ए० (Eco. Hons) [illegible] [illegible]।

१०) [illegible] २५ [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible]।

[illegible] राजनीति [illegible] [illegible] १३ मई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ?

केन्द्रीय [illegible] मंत्री श्रीमान् ए० बी० ए० गनी खान चौधरी [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] चौधरी [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] चौधरी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ?

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] चौधरी [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] चौधरी [illegible] मैथिली [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

• [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ४२०८ [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १६ मई [illegible] [illegible] ?

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।

••• [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] ४६, [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible]।

—[illegible]

महाकवि गोविन्द दास

नहि जे मैथिल भानि युक्त छथि आ अन्न त नहिनक हुनु बंगाली विद्वान जे मोड़ नहि देल गेल छनि। सुकुमार सामूह [illegible] सन् १९५७-५८ मे [illegible] बहुत अवनिकृत दासक [illegible] पोथी मे बहुतो पद मैथिल भाषा मे [illegible] अछि [illegible] पूर्वक नहि छैक। गोविन्द दास जे १७म शताब्दी मे मिथिला मे [illegible] कविता [illegible] पोथी मे हुनक [illegible] हुनक कहाँ तर्क मिलान छनि [illegible] राजनीतिक [illegible] अधिक छैक आ [illegible] गोविन्द दास के १६५७ धरि जिवन्त छथि नहि त गेल, अवश्य तखनि कि [illegible]? [illegible] शताब्दीक उत्तर्ष १६६६ विक्रम [illegible] विद्यापति पद संग्रह मे उठे प्रकाशित भऽ [illegible] मैथिलीक तथ [illegible] पदावली-[illegible] [illegible] पहुँचल मे [illegible] नहि [illegible]?

[illegible] तर्क देल गेल अछि जे गोविन्द दास की [illegible] बंगाली [illegible] अपन कविता मे [illegible] छथि, तहिना [illegible] बहुत कविताक [illegible] । श्री [illegible] ५१ टा पद [illegible] मे [illegible] तथा श्री [illegible] २५ टा पद। [illegible] गोविन्द दास धरि हुनु बंगाली कवि [illegible] अपन गीत मे [illegible] बंगाली [illegible]। [illegible] छथि हो, [illegible] गोविन्द दास बंगाली नहि [illegible] मैथिलीक [illegible] मिथिला आ [illegible] विद्यापतिक [illegible] छथि।

[illegible] तर्क उपस्थित कएल गेल-ए। हुनका हुनु बंगालक [illegible] मिथिलाक विद्वान [illegible] 'भारती' मे [illegible] [illegible] प्रकाशित [illegible] आदि [illegible]। [illegible] मिथिलाक [illegible] कि हुनक [illegible] पोथी मिथिला मे सुरक्षित नहि रहल? मिथिला मे [illegible] पोथी सुरक्षित नहि [illegible] [illegible]? [illegible] विद्यापतिक [illegible] पोथी [illegible] मिथिला [illegible]। [illegible] विद्यापति [illegible] नहि [illegible]?

[illegible] अन्तिम तर्क [illegible] शब्द [illegible] मिथिला मे प्रचलित नहि [illegible]। [illegible] 'सजनि' शब्द तथा 'प्रमत' प्रचलित नहि छैक [illegible] विद्यापति [illegible] मैथिल नहि [illegible]? [illegible] मिथिलाक [illegible] मैथिली [illegible] गोविन्द दासक पद मे ही [illegible] महाकवि [illegible] निविवाद [illegible] अपवादि नहि

[illegible] अतिहास [illegible] आवश्यक जे [illegible] बंगाली विद्वान द्वारा प्रकाशित [illegible] [illegible] पूर्ण [illegible] छैक, [illegible] मैथिलीक [illegible] छैक। [illegible] :—

[illegible] पुलकित
[illegible] निकुञ्ज।
[illegible]
[illegible]
[illegible] भ्रमर-भोर।
[illegible]
[illegible] अधीर।
[illegible] मुरलि
[illegible] कुसुम॥
[illegible]
[illegible]॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] गोविन्द दास॥

[illegible] गीत मे 'कुसुम' [illegible] शब्द [illegible] मैथिली मे प्रचलित नहि। [illegible] 'भोर' शब्द [illegible] ([illegible]) [illegible] नहि छैक, [illegible] नहि छैक ([illegible]) [illegible] महाकवि गोविन्द दासक [illegible] मे [illegible] बंगाली [illegible] गोविन्द दास [illegible] मैथिलीक कवि छलाह, विद्यापतिक [illegible] छलाह। [illegible] मजुमदार महोदय [illegible] गोविन्द [illegible] प्रकाशित [illegible] छथि।

महाकवि गोविन्द दास मैथिलीक कवि छलाह [illegible] मैथिली साहित्यक [illegible] मैथिली साहित्य [illegible] महाकवि [illegible] कविवर विद्यापति [illegible] [illegible] साहित्यक [illegible] महाकवि [illegible]।

निष्कर्ष: महाकवि गोविन्द दास जे मैथिलीक कवि छलाह तइ मे सन्देह नहि [illegible] बंगाली विद्वान [illegible] [illegible] 'प्रमत' [illegible] साहित्यक [illegible] [illegible] परिचायक।

—[illegible] शर्मा

लाल घुमक्कड़क चिट्ठी

श्रीमान सम्पादक जी।
सप्रेम [illegible]।

[illegible] जे देशकोश मे [illegible] किछु [illegible] छैक। [illegible] 'फक्खर-[illegible]' [illegible] [illegible] होइछ।

सम्पादक जी, [illegible] लाल घुमक्कड़ [illegible] माथ घुमाइ [illegible] लाल घुमक्कड़। [illegible] महामहोपाध्याय पंडित [illegible] 'मिथिला' [illegible] महापण्डित [illegible] 'मैथिली पोथी' [illegible] श्रीमान [illegible] 'जय [illegible]'।

'ई त कहैत छी, [illegible] आशीर्वाद [illegible] मिथिला [illegible] मैथिलीक [illegible] मिथिला-मैथिलीक [illegible] डा० [illegible] 'मैथिलीक [illegible]' [illegible] मैथिलीक [illegible]

[illegible] मिथिलाक [illegible] 'मिथिला' [illegible] घोषित करथि।

हँ, [illegible] 'चन्दिता' [illegible] हुनका [illegible] मिथिला [illegible] डा० [illegible] मिथिला [illegible] लाल घुमक्कड़ [illegible] मिथिला [illegible] मैथिली—[illegible]

[illegible]
श्रीमान लाल घुमक्कड़
[illegible]

सभा-समिति

कटिहार, २२-२३ मइ, (१९८९) स्थानीय राजकीय विद्यालय प्रांगण मे विद्यापति-स्मृति पर्व समारोह सम्पन्न भेल। पहिल दिन नाटक, कवि सम्मेलनक आयोजन भेल आ दोसर दिन गीत-नाटक।

[illegible]

मैथिली

[illegible]

—रामलोचन ठाकुर

(कटिहार-११ मे समाद)

आदर्श विवाह

[illegible]

मैथिल बयना

स्थानीय परिचायक (संवाददाता) सदस्य

१९. श्री डी० चौधरी, कटिहार

१३. " महादेव झा, "

१४. " प्रमोद नारायण झा, "

१५. " [illegible] ठाकुर, "

१६. " श्रीमती इरा मल्लिक, कलकत्ता

बाल गीत

चैत कबड्डी

चैत कबड्डी रमना

उठइत पछाड़ि खसना

[illegible]

[illegible]

के कहीं के बनला।

धीङ-धेंग बड़ि [illegible]

[illegible]

[illegible]

सुन [illegible], सुन काकी

[illegible] पर [illegible]

[illegible] मन, मन रमना॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] बनाने बैहना॥

—राम लोचन ठाकुर

मैथिली [illegible]

नेपाल सँ प्रकाशित मैथिली त्रैमासिक

कर्णबा

संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर

[illegible]

मिथिला दूत

सम्पादक : वचन बिहारी

[illegible]

'मैथिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५०) पइसा
१ वर्ष	५) टाका
५ वर्ष	२०) टाका

चन्दा पठेबाक पता :—

श्री कार्तिक झा,

१०५/६, उमा नगर,

कलकत्ता-७०००६१

[illegible] प्रकाशन, [illegible], कलकत्ता-७०००१३ के तरफ श्री [illegible] झा द्वारा प्रकाशित तथा [illegible] मे मुद्रित। सम्पादक—श्री कार्तिक झा

मैथिली सुचिन्तोर्थक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अङ्क—१०-११ [illegible] [illegible], १९९२ मूल्य—[illegible]

सम्पादकीय

[illegible] अपराध

२१ [illegible] १९९२ [illegible] बिहारक इतिहास मे [illegible] [illegible] तिथिक रूप मे अंकित होयत। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संविधान बिनु मिथिलीक औ
मान्यता बिनु मिथिला राज
छाड़ि जाति दुहुक कथ हम
बिद्रोहि मिथिलाक समाज

लोक कथा

एकटा रहथि राजा

एकटा रहथि राजा। ओ बड़ी धर्मात्मी रहथि, [illegible]। राजाक नाम-धाम [illegible] बड़ पैघ छल। [illegible] मानसिक शान्ति नहि छलनि। [illegible] सन्तान नहि भेलनि। एही चिन्ता मे राजा-रानी दुनू बेकल रहैत रहथि।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्तान [illegible] राजा-रानीक [illegible]

[illegible]

किछु दिनक बाद [illegible]

[illegible]

किछु दिनक बाद राजा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

● जय मैथिली

बेसहारा छल। फेर बिलख लागल—हे राजकुमार हमरो अपना संग लेने चलू ने। जौं ई हम बाजे लिबै, मुदा तेतो बाजैतो साथ मे काजि एनेत छी।

राजकुमार ओकरा दिस देखलनि आ कहलथिन—एक आ बेर घरी घोड़ा पर आ ओकरो देसा देखलनि। ओकरा पेर सिख लके हिनका ओकनिया पर दिस हहौत छल।

चाइत-चाइत बकल सांझ नहि भेलैक त एकि-भीष निकला कहे लेल राजकुमार एगो गाम मे पहुँचलाह। गामक कात मे एगो ओसीक पर रहैत। सुनकुन आ एगो बुढ़िया के तख देखि कौ कहलथिन—गै मौसी, यहि भीष हमरा रहए देबे। औरे देर त नहिए लागत।

बुढ़िया बाजल—यह भितर ने देख। अहा कि हमर घर छात क ब बात। बह गाम मे सभरी ओकहरवा देसी अनकत बसे छइ। घू ने।

बुढ़िया एगो कठिया काजि अकरा ने ओकरा देखलनि आ एक बोरा पानि भरि देलथिन। राजकुमार गोड़हा साफ बोतागि मे घोड़ा के बान्हि हाथ-पएर धो पलिया पर बैसि गेलाह। बाहर ते बाबक था साथरा नबा पहि रहलनि। बुढ़िया रसोइ-पात मे लागि गेल। मुदा ओ बसे बेर घर घाम स बाहर बावल आ आखन आगत रहल सबल। राजकुमार के ई देखि बड़ छगुनता लगलनि। अन्तः ओ पुछिये देलथिन—मौसी एतो कथा पुछिलैक?

—किदन ने पुछब? बुढ़िया बाजलि।

राजकुमार पुछलथिन—तों कौ बेर घर बाहर के त कतय कौ केँ आ आखन एते देखब कसे कँ—एकर की कारन?

बुढ़िया बाजलि—बाउ, अहाँ एक दिनक पाहुन छी, ई सब सुनि क की करबैक।

राजकुमार के बड़ हठ देखा क बुढ़िया कहलथिन—बाउ, हमरा एके टा बेटा अछि, सेहो आबि मौना छइ—आइ भरिक्की बेटे छ। तें ओही खुसी मे हम अखन आखत करे छी ते हुते छी। मुदा आइ हमरा बेटा देखन दिए से बाहि कायत सेहो ब कबोत छी—अखन दा बाढ़ छी।

राजकुमार आश्चर्य सक्त कहैत पुछलथिन—देसक बेर के? ई देश की भेलैक?

बुढ़िया बाजलि—से अहाँ देखा जुनबे। मुदेत सेक दहि नगाक छीस, अकर देबा ओकर पेर मे नहि चुनल रहैक। राजा का कारहू देख—बेरी-बेरी सभक बर सं एक लोटे क एगो दिन देसक पेट मे बैसक। से नहि लैत त देसक एके दिन मे सबको के खा जाय छथि।

राजकुमार कहलथि—ठीके छै—यादु तोरा बेटाक बदला मे हम जाएत, मुदा ई बात तों कहो पासे नहि, आ ने दालने सं कहबे कर।

बुढ़िया कनैत बाजलि—से ओना हैतै बेटा—कहूँ त कतहो सेहो देबे ने। हम अपन बेटा मालिय अहाँ के ओना आबा देब?

—आइ से हमरा सौ अपने बेटा बुझो। हम तोरा मा पकड़लैक। मुदा ई सब तोबर केको नहि कुनबे।

बुढ़िया मानि त गेल मुदा ओकरा मन मे कचोट रहबे करैक। ओकरा राजकुमार

दूध के कल प्रकारक सेहो धानुक बार दोहर कारबाइ। बुढ़िया काबर मेरु सं ना मे नाहान करत सजलाह त राजकुमार माय सं पुछलथिन—माउ, अहाँ कहीं—देस सं केहा नामका करबैकी?

माय बाजल—हम कहावि त ओकर साहे त किने ओ छल स मन नहि होयब देबे।

फिर पुछनी माय कहलनि—हम त मा त कुछ आशिष मोहि देबैक।

राजकुमार लबलाह—तखन झारि तक बारि सं ओकर पेट बटेत की देरी लगत। मुदा सब पेसो सावधान स काज की।

राति मे ओकरा माय न आन भुसक आ भीर मे राजकुमार घुमि फिरी तकर सबेल बेसब आ कौ राति मे बुढ़ियाक आकल सा मिलबा। सिवानी किसलिनिया सहबैक के आइ कहर नही देले के। पुत्रिया गेल एक सौ के देखाबा कर सौक आमत मा एक बात ने त राजा ओकरा आसे-कापो सवारी ओबा देथिन।

राजकुमार तैयार भेल। घोड़ा पर बाम तस भाज महिने कहर भेल आ सो बुढ़िया सं आसीनौद देखनि। बुढ़िया कोरा बाजलि—बेटा हमरो कबरा स ब तौ सौने मुदा प्रान बचेत हमें ने आं सुख नहि। राजकुमार बिदा भेल—पुरनिया पोलहि दिए।

राजकुमार सबके पोखरिक खरीय पहुँचल त ओकरा बाजक गर्जन सुनाइ पड़लैक अबरा ओ देखल गर्जन बादि भरर करने ब भेल। ककरो मोड़ पर पहुँचल त ओ सिवासबाक सिंकाक लेल हुई आबि धुरकेय। मधमा कारक। उखड़ बाज। आ कबिल अराजेर राजकुमारक तलवारि। दहिना हैं दिशा मौ के एत देसक कट्टल हैंद सं गेलेक आ घोरिवक मोनकार सुरक्षा लगलैक। राजकुमार अपन हेरोलि संग दोसर दिस बिदा म भेल।

राजकुमार बिलको से सब गुरा गाम मे देसक सबाक सबरी सकरी सबहि लेलैक आ कोनो लोक देस के सबनिवास बात ने अलास की मनाशि करैत राजदरबार मे ढालि देल। सजा काल ई हाले राजा देस के सालगिरह के बाजा राजाक संग अपन बेटी सिपाहि देसक बलिया बेसे सबाइ। मुदा रानीसाहबक संग्रहा बेटी देसि तुसको सबेद सिवानि आ ते आइ सबका पास सबेल सकर बता सबकेम कोसिनियां कोठिसाथ सिपाही पठाओल गेल। सिपाही कोसिनिया के बधहि दरबार मे उपस्थित केलक। राजा पुछलथिन—अहाँ बौहर बेराक पर हरौत, ओ गेल नहीं कि नहि?

कोसिनिया बाजलि—महाराज, हमर बेटा बाजि सौत बराक असल-क हैं दरम बहिनपुरा ओकरा नहि बाय देखलैक आ ओकरा काबा मे अपने चल गेल।

राजा पुछलथिन—ओ कोन कहाँ?

देसबक पेट के देखे, आर कतय। बाजा बाहि ओ दरोकबा व कतय लगलनि। राजा ओकरा बोबाना देत कहलथिन—आइ देस मारक गेल-य मुदा मे मरतय सबसे सिलहुकी नहि मे जोबा। ते तोहर बहिनपुरक कहतहि। तों जो, मुदा बालि ओ नहि अबोत तोरा घर म सिपाहीक पहरा रहतैक आ ओकरा अबिते पकड़ पढ़ाबी।

कोसिनियां के तेने सम्हार सिपाही सब ओकरा घर पहुँचल त ओमहर सं राजकुमार सेहो हुनि गेल। ओ आबिते देखैत चलल—मौसी मधुर सुनना। बार तोहर देसबा के बधुहर चाल दोहलैक। आइ सं कक्को तौ देसा ओकरा पेट मे नहि पैसैत।

सिपाही सब आश्चर्य सं ओहि विचित्र राजकुमार के देखाबा लगल घोड़ा पर बस आ बाज सौभाग्याक रहैक तथा हमारी एकरी सोनित मे रंगल रहैक। कोसिनिया बुढ़ी सं राजकुमार के मजिमा ओकरा सुभक देत रायक आदेश सुना देलकै। राजकुमार सिपाही सबक संग राजदरबार बिदा भेल।

राजकुमार के राजक पहुँचिते सुख दर्शक सब सहित गेल। राजकुमार त सब देखाव कर राजा सिमसान मे गेलाह ते देसब आसलहर ई सुनक कोसिनियाक बहिनपुत्र छी आ नहि कुछ देखल राजकुमार किछ। बौ अपना बाबाक ब्यवहार राजकुमार कं बाघ आन बेटी के विवाहि आओ राज सब देसविया का सुख दानीदार सब के लगहि चारी देसक आदेश सुना देलकैक। राजकुमार तती पर राजा भाभि बेर त रहय लगलाह।

दहिना मास व मास बीति गेल। जस राजकुमार बेहा पर-आजनक बातावरण मे पुनि गेलाह। एक दिन ओ राजक समय बितबैत बेलबक सिलाह प्रसाद राखलनि। राजा सहि प्रसाव मे स्वीकार करैत सुबसन देखलिन ओ सब दिन बिचार केलथि, मुदा दहिन दिस बुढ़िये बीने बाकि। राजकुमार सुनलक राजा केके बात नहि लेगारी के बाकि रैनाह। राजा हुनका संग बाइ किछु बड़ सिपाही लेले तैयार बाय बिदा केलक। संग मे राजा बाबा ते सौ रहैक।

राजकुमार महिसिम घोड़ा दौड़बैत बढ़ाइ लागल प्रसोहरा बिस्का हाय मनि लागलनि आश्चाक आइ त हैं ते जते ते सिमान ठहेबे से दहिन जंगल दिस बढ़ा बाड़—आ ई अखन सन मुझे लेसे दुनि जाएथि। दिन आसनिकासक बाहरा छलि। बस्ता हैं निर्बोध देसानि ते स्थापे के कुड़। सिपाही देसाति—नि बाबा निठक मे बाबी हैं राहीन काबरा आ सिपु लाली करि सिराय। अवहि मे हाती हटिल हिरवा देसे तनि आ सौ बाइक देसनि। दरीन बोबि रहैक दिस नहरतन का एही मबनि देसे देसाह। आर सब सिपाही बाल सुर्ति गेल से पतो ने बाबनि। ओमहर सुमे सुवनहुन करैत रहै आ तहसन दृश्य हिनक आलि सं बाद भ गेलनि। कमहर सिपाही बंद सुन्ना लाख रानि। किछु दूर पर कोनो पोखरि तर सुबना देखनि आ ई ओमहरे घोड़ा दौड़ालनि। तीनि एगो सिरहक पोखरि रहैक मुदा घाट बात सं दिवस—नाम एक तां बाट—बाट सब देसक किछो। राजकुमार घोड़ा सं बसलाह आ अ-बाट सिपाही जतरि बहसान बाकुहु में बाउ बेसर बासबाइ लड़का दोसकवा देखत एक सबसे सुमानि कन्या पर नजरि पड़लनि कि हिलक दायक हहरा सं बक नहि मौपाक लेक बहि एहन कहलि। राजकुमार कारन हानिर्त ओकरा दिस हकैत अहुवा बेसकिा—हे देवी! सिलाये इस बोल सुना सहब-य आ सन आसुक लिय बाह। ई सिरि बान नहि नीति।

सबको ते दासी सुनि कारन। पहिरा अवस्था मे चहाव निलिय कि हनिस बैस?

सुन्नी बाजलि—हे आगन्तुक, हम अहीव निमति सुनि ककर छी, अकरा हमर संग बसबसा अहु।

—हे सुन्दरी, अहाँ कविता नहि छी त कि हम ओहि अस्यानक समान आबि सकेत छी? राजकुमार पुछलथिन।

सुन्नी बाजलि—ओ बड़ी बसाइ बकौत छी त सुनू। अहाँ देखिए बाहर छी पे हम सुनारि छी आ हमर बहारक सबक ई पोसनी सिंध। हम सब बेने छी ते बड़ि धीबनिक उपयोग उराइ मामि कराइए हमरा संग विवाह सबका देस सबी होरि। आ हमर विवाह तुरबै संग होदत ते हमरा सबहा बेसाब मे हट दोरि। कि अपने बहि ठेर हमर छी?

राजकुमार न्यारी सनकुन छलाह। ओ राजा बोले सेस तैयार य गेलाह। सुन्नी कहलथिन—सका त अपने हाति कह सखन?

तखन की? सुनक सबा मेरुनि।

हसत हम अहाँ के, आइल घोड़ा, बाब का बासन सब साथर सबा पोहि नीतु पर हमासित भ देव। बस तैयार छी?—सुन्नीक सबा उठेल।

राजकुमार स्वीकृति दय ताला सेतास मैं अगेहि गेलाह। ताला तीर मे पलक झपक सीमू सेरे राजकुमार हाहि गेलाह। सुन्नी सुनरा सब मे पावा बड़ा देखलनि।

ओमहर ओ ओ पाहि भोरे राजा-रानीक सेनाहि राजकुमारक पाती चिन्ता सं व्याकुल रहथि। राखे मे कहा-नीराहि महाराज म निक आ गेरि दोइल-दोइसा सतती दिसहा म गेलैक ते रानाक समाय मे बाकि—सिपाही बोलाक गेलथिन हैं नहि भिलाकनि। परि-प्राक्ष दहिना बार बाग गेलथिन आ ते निराश अबावली नहि।

× × ×

ओमहर के दु ई बस सत्यौसब आस क में अपन-अपन देस। सिराह छल अलग-अलग श्रीवाक सिराहा ओक के कहैक। ई बाद पहरेत-पहरेत राजकुमारक सास-कसक बास सब गेलैक। ओकर छोटका भाइ के बसल हैं बहसमान बरावत चलो। कहलैक त ओ सास-कामू सं ताहाल देखक—गाहू बौं बौक मे केलाह। पहिने त राजा-रानी आनाबानी पेकापित करकन रैस मे अनुमति देलथिन। फेर राजकुमार ओकर बरबाद दा विदा भेल। नहि सैल आ बसे निराय कार बेसक करना ओकरा सब आसेक ते छ सास त आर बेसाक सत अहबाब कते सहबा सौ ओकरा बाबल द बहबा ने सेर बाद बै त सैसरिया। बा सेर बाद तिसिबरो कर्ते तिनक बाद बाबल स्वीकारी हीराबैल त ब गेलथिन। सहाव वर्ष दिन बाद ओकर सबैला घोड़ा मारे एक मास मे चलि गेलैक। बाहिर भरि बेसा मे अहुविसा नहि मेलैक कारन ओ सहसा गोरि सब बाहा सैक। मुदा मोहि ओकरा बकदरा सुख-अहाल बुनैतैक बेना बसेसो सबे सं दहिना ओक नहि आयस छी। ओ बासत्मा सुनि-किरि देखि सेवक आ बाद बाते अबसत छन ने बाद छोरि बे तकरा रौका सार सैन तात बले घोड़ा देखरन। बाहरा-बाहरा बे सिंघु पूर पैद त बाक सं हमो सालव बसैन सुनेते। ओ बासवान मे तबसारी चेक्क ता सब बहुत बस बाति लिस रौल। अस

[illegible]

पुस्तक समीक्षा ?

विदेशी कविता क 'प्रतिध्वनि'

श्री [illegible] मैथिली क [illegible] रचनाकार छथि। [illegible] 'प्रतिध्वनि' [illegible] विदेशी [illegible] कविता क मैथिली काव्यानुवाद प्रस्तुत केने छथि।

[illegible]

'प्रतिध्वनि' [illegible]

[illegible]

—बुद्धिनाथ मिश्र

[illegible]

—सम्पादक ॥

☐ मंजुल बनर्जी जी,

[illegible] 'प्रतिध्वनि' क समीक्षा [illegible]

—बुद्धिनाथ

अजगुत अनटोटल

[illegible]

सभा-समिति

विद्यापति सेवा परिषद, बिहिपुर, मेघाइबुरुज व तत्वावधान मे आयोजित "मड़" क अंतिम अवसर मे विद्यापति स्मृति पर्व धूम-धाम सँ मनाओल गेल। कार्यक्रमक आरंभ कुमारी पुष्पी, कुमारी नीता, कुमारी, मधु, कुमारी माला तथा कुमारी बेबी क "जय-जय भैरवि असुरभयाउनि" सँ भेल। मंगलाचरणक अनुशीलन श्रीमती इन्दु [illegible] द्वारा भेल।

निम्नलिखित व्यक्ति विद्यापतिक चित्र पर श्रद्धापूर्वक माल्यार्पण कयलनि।

(१) सर्वं श्री सी. डी. सिंह (महाप्रबन्धक बिहिपुर)

(२) एस. के. दास (चीफ सुपरिन्टेन्डेन्ट, [illegible] माइन्स)

(३) एस. पी. चौधरी (कार्यकारी महाप्रबन्धक मेघाइबुरुज)

(४) के. एस. भसीन (उपाध्यक्ष [illegible] एण्ड टिम्बिलिशन कार्यालय मेघाइबुरुज)

(५) यू. के. झा (अध्यक्ष विद्यापति सेवा परिषद)

एहि अवसर पर सभाध्यक्ष श्री सी. एस. सिंह उपस्थित धार्मिक प्रबन्धक जनसमुदाय का स्वागत करैत कहलाह जे कवि कोकिल एक महान विभूति छलाह। विद्यापतिक स्मृतिक्रम हुनक काव्य प्रतिभाक [illegible] देश मे भेल। बंगाल, आसाम आ उड़िसा सँ हुनक कविं प्रभावित अछि। संसार मे [illegible] कवि मे हुनक नाम [illegible] विद्यापति के [illegible] छल। [illegible] हुनक विद्यापतिक गीत के प्रभावित करबा मे महत्वपूर्ण योगदान [illegible]।

श्री [illegible] कहलाह जे [illegible] विद्यापतिक [illegible] गीत सँ [illegible] विद्यापतिक गीत बेसी [illegible] अछि।

धन्यवाद ज्ञापन करैत श्री डी. डी. सिंह (महाप्रबन्धक बिहिपुर) कहलाह जे विद्यापति एक महान आत्मा छलाह आ हुनक व्यक्तित्व [illegible] विशेष छल। विद्यापति [illegible] रचनात्मक प्रवृत्ति [illegible] नहि छलाह। विद्यापति पर सम्पूर्ण देशवासी केँ गर्व [illegible] अछि। [illegible] विद्यापति [illegible] द्वारा आयोजित ई [illegible] विशेष अछि।

अन्तमे [illegible] संस्थाक अध्यक्ष श्री यू. के झा (संयुक्त [illegible] बिहिपुर) [illegible] आयोजन मे [illegible] सहयोग देलनि, [illegible] संस्था धन्यवाद देल अछि। एहि अवसर पर श्री [illegible] सहयोग [illegible]।

एहि अवसर पर [illegible] विशेष सहयोग हेतु विशेष रूपेँ धन्यवाद देल गेल। संचालक [illegible] श्री. श्री. आर. सिंह, श्री. बी. आर. यादव श्री ब. एन. महासभा,

श्री एस. के लालदास, श्री डी. के. कादिरी तथा श्रीमती डी. अग्रवाल के [illegible] सहयोग हेतु धन्यवाद देल गेल।

अंत मे [illegible] पर्याप्त व्यक्ति [illegible] आयोजन सफल भेल [illegible] नहि [illegible]।

संयोजक सहा सचिव श्री एस० आर० बी० सिंह, [illegible] (उपाध्यक्ष के० डी० दास (सहायक) बी० बी० मंडल, [illegible] डा० बी० डी० मिश्र, [illegible] झा, टी० झा, अनिरुद्ध झा, [illegible] झा, सहदेव सिंह, [illegible] झा, [illegible] पाठक, [illegible] ठाकुर, [illegible] झा, [illegible] झा, [illegible] झा, के० बी० त्रिपाठी, टी० [illegible] बी० दास, [illegible] सिंह, [illegible] कुमार झा, एस० के० झा, बी० के० सिंह, पू० एस० झा, एम० के० चौधरी आदिक सहयोग [illegible] मे [illegible] नहि [illegible] अछि।

—रवीन्द्र चौधरी

बाबू भोला लाल दास स्मृति समारोह

दिनांक १ [illegible] के साहित्य [illegible] संस्थान के [illegible] डा० [illegible] परिषद मे मैथिली [illegible] बाबू भोला लाल दास जीक पुण्य स्मृति मे एक भव्य समारोहक आयोजन भेल। समारोहक प्रारम्भ [illegible], [illegible] द्वारा मिथिला-वंदन आ श्री [illegible] सँ भेल। डा० [illegible] अध्यक्ष [illegible] समारोहक उद्घाटन करैत श्री बाबू [illegible] चौधरी मैथिलीक [illegible] बाबू भोला लाल दास जीक [illegible] मैथिलीक [illegible] उपस्थित [illegible] कयलनि। [illegible] डा० [illegible] चौधरी मिथिलाक [illegible] मिथिलाक [illegible] बाबू भोला लाल दास जीक प्रति [illegible] श्रद्धांजलि अर्पित कयलनि, मुख्य अतिथि [illegible] मैथिलीक [illegible] मिथिलाक [illegible] सांस्कृतिक [illegible]। बाबू भोला लाल दास [illegible] श्री [illegible] मैथिलीक [illegible] [illegible] अध्यक्ष [illegible] आह्वान कयलनि।

[illegible] कार्यक्रमक [illegible] श्री [illegible] कवि सम्मेलन मे [illegible] कवि [illegible] श्री [illegible] मैथिली पुत्र, [illegible] चन्द्रमणि, [illegible] सिंह, [illegible]। एहि अवसर पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन [illegible]। [illegible] श्री [illegible] द्वारा धन्यवाद ज्ञापन सँ भेल।

— सम्वाददाता

छाया-छवि

जेना कि सब केँ ज्ञात अछि मिथिला [illegible] एवं [illegible] मे 'भौजी आंगन' नामे मैथिली सिनेमा [illegible] [illegible] आ [illegible]। एकर निर्माता छथि श्री पुरुषोत्तम बोहरा। [illegible] संगीत [illegible] श्री [illegible]। संगीत श्री [illegible] एवं श्री [illegible] [illegible] श्री [illegible] कुमार क। [illegible] मे [illegible] कुमार, [illegible] दूबे, [illegible] सिंह, आदि छथि। नायक-नायिका छथि—[illegible] आ [illegible] मुखर्जी। [illegible] सम्पूर्ण [illegible] मे [illegible]।

मैथिली मे [illegible] सिनेमा [illegible] [illegible] श्री, [illegible] सम्पूर्ण [illegible] [illegible] नहि [illegible]। 'कन्यादान' [illegible] नहि [illegible] मैथिली सिनेमा नहि [illegible] [illegible] नहि [illegible]। 'ममता गाबय गीत' क [illegible] सम [illegible] नहि [illegible]। [illegible] 'ममता गाबय गीत' क [illegible] ज्ञात होइत अछि। [illegible] 'भौजी आंगन'क [illegible]। [illegible] आ [illegible] विभिन्न [illegible] नहि [illegible]।

मैथिली सिनेमाक लेल [illegible] 'दहेज' [illegible] नहि [illegible] निर्माता [illegible]। [illegible] मैथिली [illegible] नहि, [illegible] सिनेमा [illegible] 'दहेज' आदि आयल।

[illegible] सिनेमा [illegible] नहि। [illegible] 'भौजी आंगन' मैथिली सिनेमा [illegible] [illegible] अनुरोध [illegible]।

—जयदेव दास

चिट्ठी-पुरजी

'मिथिला मिहिर' खूब नीक लागि रहल अछि। [illegible] मिथिला-विभूति [illegible] नहि [illegible]। [illegible] —[illegible]

[illegible] सम्पादकीय [illegible] लेखक—[illegible] मैथिलीक साहित्यकार [illegible] नहि। '[illegible]' [illegible] 'मिथिला-विभूति' [illegible] मे [illegible] भविष्य मे। [illegible] नहि [illegible] अछि। '[illegible]' [illegible] अछि [illegible] नहि [illegible]।

[illegible] अंक मे 'लोचन कविराय'क [illegible]। 'विद्यापति' आ '[illegible] चिट्ठी' नहि [illegible] होथि। [illegible] 'विद्यापति' [illegible] देल छैक। '[illegible]' [illegible] नहि [illegible] अछि [illegible]। [illegible] नहि [illegible]। मैथिली मे [illegible] होयत।

—विष्णुदेव झा

कह लोचन कविराय

लाठी जकर महिस तकरे छइ के नहि जानय
सनहि नाम गणतंत्रक स बजरंगी डानय
स बजोरे डाका [illegible] [illegible] मे नेता
हाकीक बहाय और [illegible] बोट [illegible]
कह लोचन कविराय सत्य-शिव-सुन्दर लाठी
[illegible] [illegible] [illegible] गणतंत्रक लाठी

[illegible] प्रकाशन ११/६, डा० [illegible] रोड, कलकत्ता-७०००१२ क लेल श्री [illegible] झा द्वारा प्रकाशित तथा [illegible] प्रिंटर्स ११जी, [illegible] कलकत्ता-६ मे मुद्रित। सम्पादक—श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसकोस

अङ्क—१-२ जनवरी फरबरी ८४ मूल्य—पचास पाइ

देसकोस सँ देसकोसधरि

देसकोस—ई शब्द मात्र सिद्ध एक पत्रिकाक अथवा [illegible] ... [illegible]

[illegible]

—रामलोचन ठाकुर

संविधान बिनु मैथिलीक की
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
आहि-जाहि सुझाइ करय हम
विद्रोही मिथिलाक ठाम

देश

शिक्षाक माध्यम आ मैथिली

[illegible]

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

याज्ञवल्क्य

प्राचीन संस्कृत में ब्राह्मि सुनिक सर्वोच्च अहू से अत्र भेलो नहि मिथिलाक सन्तान योगीश्वर याज्ञवल्क्य ऋषि। अपनी मानसक महाकवि गोस्वामी तुलसीदास अपन रामचरित मानस मे हिनक चर्चा कयने छथि—याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी, भरद्वाज राखु पद टेकी।

[illegible]

लेखा-जोखा (१)

[illegible]

—सुजलता शास्त्री

लाल घुमक्करक चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक श्री महोदय !

नमस्कार अछ बन्द लिखबी।

अहाँ हाल सुनि श्री किछु ? विशेष मन में सदा मनता — हमरे गति कहि अहाँ घुमक्कड़ के। अहाँक ते मुझी त कहा घुमक्कड़ विदेह भूमिक घुमबा लगाएल छथि से, ते बाता के लिखलनबति विदेह छथि। देश गाति माला आशीर्वाद देहल। मा हूँ, भाग कराहल देहल — घुमबा देशे कर छल।

ई, अहाँ लिखे छी जे 'देतिक मसना' क विश्वरेत नहि नेहि 'देसकोस'क दिस, से कोटी काम भ पत्रिका महात कमन पढ़ल। कहि मे लिखाक कोनो कारण त हमरा नहि बुझि पड़ैछ। देतिक मसना हो वा देसकोस — बात एके भेल। अहाँके देसकोस अछ त देतिक मसना पढ़ैत कतल — से हम कतकाय भिन्न के कहब हमरो कतकाय भिन्न अोकरा नहि नेहि पढ़ैत छथि। अहाँ कने सावधान कोन त व विचार आ अपना ताक दृष्टि करब। बहु ने व्याप् से स सब करे पहिराहि मान मिथालाति की कहि गेल छथि — राजनाद विचारक भाषा

इहु नहि आगाह पुरुष हवा
ओ कसैब दर कि मोहक
ई लिखाहु ताना अह सोहब

मे तुलन सर कहे विश्वक ते नारहि पर-परमको — राजकवयवा धन हार ई भाषा यादिकोटि मैथिली भारतीक हृदय कहो निर्मल आकाश अहा विद्युत तेज के बनजयाहत पहल-कमति ई लिखी पढ़ैछ। ई अहाँ लिखाक्षुक न क माल मे सरोहु छल कहौ परिशोध तेहि द बुझि सकैत छी।

आब अकिला विषय — राष्ट्रक संकटक सम्बन्ध में। सम्पादक जी, श्रीमती गाँधी किछु क्यान छथि त हकर औ अर्थ नहि होइत छैक पे हमे — अहाँ बुझैत छी। ते ओ बनल कहैत छथि से राष्ट्रक बहेलिया आसमान्य संभावना ऊँक भ हकर समर्थन कसे महान मार्क्सवादी श्रीमान नम्बूदरी-पाद कहैत छथि जे बुझबी बन मुखक तकरा बाधि लक ए त हकर बन्द ई कम-मति नहि के हत तन तोहे कहो भाषा क सम्मुख समता को देख बाटल मदत कछ। हकर लोक अपने दोष अह में अहोक आसन में जे प्रकार पराक कह ना अहक देखी कातल अह, कोटी-कमाटी मे से किछु अह, टीडी-पेटी मे से बहना-दुखिया अइ — से बन सबर्य अवसानीक घुमबा कोष मे हाल ह दिलेक। के हाउ मे सन्द हो त कोनेक पर मे आ कार मे प्रदोक द कहाँ से दुई मानि बुझि एहु — कांची काम देखक अर्न-नैतिक कोनानि अराहि क केर। छपारकबी सेता सही छेक ने के हुइ म लेख आ नाम कहले छथि मे तकरे वति अह पे अछ। देखो श्रीमान्, अन्द नावहि महा होइत होइत सन्त ई के बड़क के ओत्सा अपने लेहो बड़ल होइत छैक? अपने त देश-काल मालक अनुसार सदैव रहैत छैक। के सब घुमी त हरह सब लोकि क हा राजनैतिक प्रधानमंत्री लेवास क्रयाक काल हाथ ने लेक ह आ भोज-भुज अपनो भेलह। अतय मे मात्रा अर्थ लिल के हम श्रीमती गाँधीक समक्ष नामनक उतरा

श्रीमा जी। अहाँ बहु मे से ई इन्दुबिटल विदोषी हकक नेता, तकक बादा घुमबाक के श्रीमतीक पक्ष घुमबाइ नीक थी नहि ? कहलियो ठेक में सब कोन सोवाद के आ हक गोट कोहल के। लिलोनिका सन महनो बहता अब विश्वकु — पर कानि ओते बुझिक बनक बड़े श्रीमतीकी आधार छुके नोक तं बाक्षि कैद छथि। समवादकली-हतला त दुर्ग कोनोमारि विश्वास कहु मे बुझि पन-काक देखु तं कोनो लोकेक घुमकार राष्ट्रीय त अर्थवाहन श्री श्रीमती गाँधी के मैदितिल आ देखा कि बकरी छेद के बुझिकिह नाम कि बुझिकिह नाम — से राष्ट्रक त नाम होइतेक।

हमरा श्रीमती श्री राष्ट्रक कर्णधारत्व त्या केक मेहो देसी विशिष्ट घुमबा आइत छथि आ ते ओ नाक कोक के निष्क्रियता-वादी दल के सम्मान देखाक नेतीबी देख छथिन। यहि दल मे ओ कम्यू-नवादिक समाजवादीक दल, नेवाक बहनेरिय, आता-मक आलोचनावादी तथा पंजाबिक अकाली दल के मानैत छथि। सत्य वं अहाँक काला छाहि लिखलक अहि हीत नने हवन के दस्त ककोरेन श्रीमतीकोक ओकर हुक — विश्वास घुमबाक दुई आ ते देख विस्तार चुनाव मे नेबली हुई मेलति। आ कारा-नेस अपन सेहो समहाति लेक बा ई बुझि लेबी त ओ निषकवादी आ शासनक लिए धे गेल। तहिना सत्ता सम्पादक बक्कारपी ने सहकक अपना आन्दोलन के तिलोकक में बचल केरी हलेक पसन जे हिटु ओ लिखता दुही सं बाहर भ गेल ते राष्ट्रलिरोधी भिक। तहिना पंजाबोक कारि कि लिखले पचाहक नहि मिललि ? हकको सायद कोनो निज बात नहि बाहक कहिया बडाबारा विशवाल हिन्दुक हवा नहि रहक बाहर होइक — पराजन, कथकर लेली मन कर। विधानक हलकाति लेवान ते कोनो भूत-कालीन किसिदार अधि से श्रीमती कीक संकने छनि।

अतय मे श्रीमती श्री देखल नाहित होमजी छथि के पास कहाँ आ य कहाँ कनेत छथि। विश्वर किन सहितो मिहार प्रान्तक दैनान की दसकोहत के कर्मठ 'हिन्दी' माने कोवान भाषा काहक नहि बा रहत छैक। अहाँ के राष्ट्रवा आगि कलैक के वं श्रीमती कौक कथन ठीक छनि त निहारक भाषा हिन्दी मेने मेना भेलो ? तबाकबित बाकाली सं पहिने बाद मैथिली-भाषीक संख्या बेड़ कोटि सहैक से आज-तीकनाक पत्रका हकर कैना म लेल ? मनर भार ठेक से कथम सब साथीक ओमान अइ त देखक पाला होविजन ने ठेक या समान बादकी गुजरुखिला गठेब उकल हमरा कौनलिक भाषा मैथिली विस्तर भाव अह ? यहि सब पकल बचाव देख कने अल पाहु आह रहल। किछु दिन पहिनै ओ बाकल हजोह में भाषा-वर्ग-भेद आदि नाकन विषय के लिपटि कोक राष्ट्रीय अवसवाक लेल देख के सम्पिकाको मनाकल। श्रीहिन्दू बहल सकलाह मिड के ई मात्र ओही कोक सं पद्दल पेहेदु के होकर बादक नागरिक अइ — कवल भाषा-मूलिक वर्ग भारतीय संविधान के नहि छैक,

कलम ओकरा बाजिवाल नेति गेल ऊँक से त छोड़ि नहि सकैछ। मक्का लिल्लाक सोन्ह मार्ग गेल बहु वति गेलाह आ बुझिवाक केक बहुतो मे रहता बल के अनुकूल होइत। सर्व लिखति बात — माने मालिक — पल्लक तिलाक बहन इम्फालुवाल कहनो अहाँक सम्पूर्ण सौदा आदि सकैछ, काली उत बादि लगैछ आ हमरो आबै यहि सकैछ — बड़ा बल हुनि सफवाकी। बुझि लिखति बात — माने अहाँ के होवाति या हुद-बबार मा सहकु पर क गेल बा कवैछ — मात्र सरलाह-दसलाहियो मेहि सकैछ।

अहाँ के हल मायका बुझि-बहु बाबला कालि छवैछ। अहाँ कहि सर्वे छी से कोनो देहक प्रकाल संघी पहल बात पेता बाधि सकैछ ? चरणक सह घुमी त अहूं देहक बात त हम नहि कहि सकैत छी स्मृत भारत कब विकास सुदान गलालिक देश मे बहल बात पवान संघोहरा व सकैछ। के होइत देखो कोक के बहना अहे देख बी त ओकरा पानी दैखा सं बाबा धोहि देख देलेक, बुझल बुझल देख बेलैक आ सही ने वं नहिको डोकक बाहु त कहे अबजो सहा देक देते। ओना ई बात सत्य होइतहुँ कोनो महल नहि सकैछ जे श्रीमती गाँधी बनल पहिले भूमि-भाषा वर्ग-संस्कृत विभुमेला नहि छनि। महाराष्ट्र त ई ठेक पे माहि के महनुबक रहितहुँ भी सबल नागरीक मातृ-संस्कृतिक विकास बुझकारी सं अनाजाकी बड़ा खाद्य छैक।

ई त केना कहैत सकहुँ कहे समस्त कोक बकरा बक पर श्रीमती जी से राजविधायक पक्ष छनि तहता बनि बाहक त राष्ट्रक बलंकता सदा सदा देक माहकार रहत। केना कि देश विशालित बाहटी के बसात अइ, किछु मान पश्चिमाल बढ़िया लेबक ला किछु चीन हला देलक, किछु लंका हाँ टाल द देक गेल आ किछु नेपाल देख के हल के बसी मे देवबो मे राष्ट्र अवांछित अह-

तहिया हकार दुख्दी होइतहु ई अवांछित रहत। पं बात सोच हम मे कहो त राष्ट्र क अखण्डताक सर्वा मेल नेहरू परिवारक शासन बसनाए मे सन्निहित रहनाइ।

बाद बाजली मे अपन विवेकीक भावना मे अहोक आ अखण्डक पदवा से पंचकुल भी नही भी अहाँ कहलनि जे देना अवसर आ अहोक व अपन मे देख चाहिलाको शान-शौकता ओ चाहैत छथि। ओना ई कथा भिन्न जे महात्मा गाँधी बन देशद्रोही अवसरो व समय मे कहबे। यदि सम्पूर्ण मे अहोक महल अकाह जे कहिया के अहा क देलनि।

अहाँ के त माने होइत जे विख्यात पर्व मान छुर्भलंगी श्रीमान चन्द्रशेखर सिंह बाबू सबक मे बोलला देवकिहि जे केन्द्रक अर्थ होइत नेहरू परिवार आ तें देख के बाधिकारी कमेलक अर्थ भेल नेहरू परिवार के अधिकारी देनाइ आ नेहरू परिवार के प्रतिद्वन्द्वी कमेलाह — माने सेता नेहरूक बाद श्रीमती गाँधी तहिना श्रीमति गाँधीक बाद भारतक नेता बाबुका बउआ (Today's leader tomorrow's hope) राजीव गाँधी के सिंहासनारूढ़ देनाइ आ राजीव गाँधीक बाद बाबुका नेता राहुक बउआ (tomorrows' leader day after tomorrow's hope राहुल गाँधी के सिहासन-बढ़ देनाइ आ राहुल गाँधीक बाद·······

आशा अछि जे हमर यहि संवाद सं अहाँक राजनैतिक बुद्धिक किछु विकास होएत। ई सब विलास देसकोस वा कोन-नीच विक — से हमरा जनबाक धन नहि भरो ?

एहीठाम यदि देखाय प्रबन्ध आकांक्षी
श्रीमान् लालघुमक्कड़
घुमक्कड़ धाम वाली

कविता

देश मगर महान छइ

अपनहक के देश हिन्दुस्थान छइ
भार ते किछु हो मगर महान छइ

बारम्बु अइ पतय पदवानी बलक
पुक्रतु फसयत छइ मगमाक ते
आइ महका पर पतय अभिमान छइ

आय कत्ते घर घाहे धरकार छइ
हाकिहाको हाथ सब बेकार छइ
देश बहिले आ रहक आबू मगर
मेचक दक्षिक्क मे बाबुल राष्ट्र के
की हेवे, साबुत मेचक त शान छइ

गाँव-शहर मनाबेय महोत्सव
देश के लेखक बनल जल्लाद छइ
माया बुझि खिड़ही सड़ाय पतय कहाँ
मीठ खुशी हम के पैदान छइ
ठौक मे देख्, रमसान न ई मिले
भरे दक्षर नाम हिन्दुस्तान छइ

की पहक ? ठूकर सेवा भूमि छइ
भरे ई त भेष माया राष्ट्र के
आर ई सम स्थान नहि छवि राष्ट्र कवि
राष्ट्र मातृ के नवे छवि आरती
बात अनहि विचित्र बड़ धार्मिकता
सदन ने ई देश हिन्दुस्तान छइ

— रामलोचन ठाकुर

किछु देखल : किछु सुनल

[illegible] मिथिला संघ कलकत्ता, [illegible] मिथिला-विभूति पर्वक [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] श्री गोविन्द झा, श्री [illegible] झा, श्री [illegible] आदि।

[illegible]

[illegible]

—[illegible]

□

शिक्षाक माध्यम ...

[illegible]

—[illegible]

□

मासकेर

अटकन मटकन

[illegible]

—[illegible] ठाकुर

मैथिली पोथी/पत्रिका कीनू आ पढ़ू

इतिहासहंता (कविता संग्रह)	—	२/४ टाका
बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य)	—	४ टाका
[illegible] (अनुदित नाटक)	—	६ टाका
[illegible] (अनु० कविता)	—	४ टाका
अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास)	—	२५ टाका
[illegible] : ([illegible])	—	७ टाका
मैथिली लोककथा	—	२ टाका

सम्पर्क करू :—

अरुणोदय प्रकाशन

कलकत्ता

मिथिलावासीक मांग :—

१. मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद में स्थान हो।
२. केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा में मैथिलीक स्थान हो।
३. मिथिलांचल में [illegible] शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
४. मैथिली बिहारक दोसर राजभाषा हो तथा मिथिलांचल मे एकरा प्राथमिकता देल जाइक।
५. आकाशवाणी दूरदर्शन तथा [illegible] माध्यम भाषा मैथिली हो।
६. [illegible] उच्च न्यायालय [illegible] जाय।
७. मिथिलांचल में यातायातक सुव्यवस्था हो।
८. मिथिलांचल में कृषिक व्यवस्था में सुधार हो तथा [illegible] बाढ़ि सँ बचावक उपाय हो।
९. मिथिलांचल में [illegible] सरकारी उद्योग-धंधाक विकास हो।
१०. मुजफ्फरपुर दूरदर्शन केन्द्रक प्रोग्राम में मैथिली कें प्राथमिकता देल जाइक।

मैथिली मुक्ति मोर्चा

कलकत्ता

अरुणोदय प्रकाशन १३/४, डा० देवदास रहमान रोड, कलकत्ता ७०००३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिन्टिर्स ११ बी, वृन्दावन बैसाख स्ट्रीट, कलकत्ता-५ में मुद्रित।

मैथिल संस्कृतिक आधार स्तम्भ

(प्रोफेसर हरिमोहन झा)

मिथिलाक संस्कृति अत्यन्त प्राचीन आ [illegible] अछि। सरल जीवन आ उच्च [illegible] एकर विशेषता। शांति, संतोष सात्त्विक एवं धर्मनिष्ठा एकर नैसर्गिक गुण। [illegible] विद्या-विनोद, मधुर परिहास एवं [illegible] एकर भूषण। [illegible] आधार-शिला थीक आध्यात्मिक [illegible]। औपनिषदिक युग सँ मिथिला [illegible] दार्शनिक विचारधाराक केन्द्र रहल [illegible]। याज्ञवल्क्य, गौतम प्रभृति [illegible] भूमि पर उत्पन्न भेलाह। हिनके [illegible] अलौकिक प्रतिभा साधना सँ प्रतिष्ठापित [illegible] जीवन अनुप्राणित भेल अछि।

राजर्षि जनक जीवन-मुक्तिक प्रतीक [illegible]। हुनका विषय मे ई उक्ति प्रसिद्धे [illegible] अछि—"मिथिलायां प्रदीप्तायां न [illegible] किंचन।" एहि सँ बढ़ि कऽ [illegible]-वैराग्य उदाहरण और की भऽ सकैत? दूर-दूर धरिक जिज्ञासु हुनका सँ [illegible] लेल अबैत छलाह। बृहदारण्यक उपनिषद मे हिनको हुनका सुयश-वर्णन [illegible]—"जनक जनक इति वै जना धावन्ति [illegible]।" देवी भागवत मे कहल गेल [illegible]—"वंशोऽस्मिन् येऽपि राजानस्ते सर्वे जनकाश्चथा। विख्याताः ज्ञानिनः सर्वे विदेहाः परिकीर्तिताः।"

(अर्थात् जनकक वंश मे जते राजा भेलाह, सब हुनके जकाँ आत्मज्ञानी। देह [illegible] भावनाक कारणें हिनका सभ कें 'विदेह' कहल जाय लगलन्हि।)

मान रामायणे नहि, मिथिलाक साधा-[illegible] अध्यात्मिक रंग सँ रंगल छल। [illegible] श्रीमद्भागवत मे कहल—"एते वै मैथिला राजन्, आत्मविद्या-विशारदाः। योगेश्वर प्रसादेन, द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि।" आब मानल बनल रहल, संसार मे रहितहुँ संसार सँ निर्लिप्त रहब एहि भूमिक आदर्श रहल अछि। इएह आदर्श भारतीय संस्कृतिक आत्मा थीक।

याज्ञवल्क्यक आत्मवाद दार्शनिक साहित्य मे विशिष्ट स्थान पाबैत अछि। हुनकर [illegible], मन एवं निदिध्यासन सम्बन्धी उपदेश सहस्राब्दि सँ एहि देशक सांस्कृतिक चेतना कें अनुप्राणित करैत रहल अछि। ओहि कालक मैथिल स्त्रीओ तत्त्वदर्शिनी होइत छलीह। याज्ञवल्क्यक स्त्री मैत्रेयीक वचन छनि "येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्।" (अर्थात् जे अमृत आत्मज्ञान नहि अछि, से लऽ कऽ हम की करब?) दार्शनिक गार्गी सेहो विदेहक राज दरबार सँ याज्ञवल्क्य कें चकित कए देने छलीह।

न्यायशास्त्रक प्रणेता गौतम सेहो मिथिलेक विभूति छलाह। स्कन्द पुराण मे गौतमक निवास-स्थानक वर्णन एना अछि "अस्तीह महापुरी नाम्ना मिथिलायां विराजिता। तस्यां वसति धर्मात्मा गौतमो नाम नामतः।" एखनहुँ मिथिला मे गौतम स्थान आ गौतम कुण्ड प्रसिद्ध अछि। गौतम प्रणीत न्याय [illegible]

तत्कालः मिथिला सर्व शास्त्रक जननी कहल जा सकैत छथि। प्राचीन न्यायक प्रणेता गौतम आ नव्यन्यायक प्रवर्तक गंगेश—दुनू मिथिलेक संतान। सांख्य, मीमांसा इत्यादि अनेक दर्शन सँ अधिक मिथिले कें अछि। पूर्वमीमांसाक तीनू शाखा (कुमारिल, प्रभाकर तथा मुरारि मिश्रक) एतए प्रादुर्भूत एवं प्रस्फुटित भेल। मिथिला मे न्याय आ मीमांसाक अधिक उत्कर्षक कारण इहो भेल जे मिथिला कें बौद्धदर्शनक सामर्थ्य विहारि सहए पड़लैक। बौद्ध तार्किकलोकनिक आक्रमण सँ वैदिक कर्मकाण्ड आ ईश्वरादि कें बचएबा लेल मिथिला मे एक पर एक उद्भट नैयायिक लोकनि नैयायिक होइत रहलाह। ई परम्परा [illegible] शताब्दि धरि रहल।

मंडन मिश्र मीमांसाक क्षेत्र मे प्रकाण्ड छलाह। हिनका प्रकांड विद्वता सुनिकऽ शंकराचार्य हिनका सँ शास्त्रार्थ करए हिनकर गाम (वर्तमान सहरसा जिलाक सुप्रसिद्ध ग्राम महिषी। महिषी अथवा माहिष्मती। महर्षि वशिष्ठ अहिठाम भगवती उग्रताराक आराधना कएने छलाह।) आयल छलाह। तहिया मिथिलाक बौद्धिक स्तर केहेन उँच छल, से 'शंकर-दिग्विजय' सँ ज्ञात होइत अछि। एहन गामक कोनो इनार पर शंकराचार्य कोनो पनिभरनी सँ मंडन मिश्रक विषय मे पुछलथिन तऽ उक्त पनिभरनी उत्तर देलकनि—"स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं कीरांगना यत्र गिरो गिरन्ति। द्वारस्थनीडान्तर सन्निरुद्धा जानीहि तन्मंडन पंडितौकः।"

(अर्थात् जइ दरबाजा पर पोसल चिड़ियाँ सुग्गा-सुग्गी 'वेद अपन प्रमाण अपनहि थीक वा आनक प्रमाण पर निर्भर थीक' आदि महान शास्त्रक आवृत्ति करैत रहल होइत, बुझि जाइ जे सएह मंडन मिश्रक स्थान थिक।) मिथिलाक स्त्री केहेन होइत छलीह, एकर ज्वलन्त उदाहरण मंडन मिश्रक स्त्री सरस्वती देवी छथि, जे ओहि ऐतिहासिक शास्त्रार्थ मे मध्यस्थक कार्य कएलनि।

भारतीय दर्शनक इतिहास मे वाचस्पति मिश्रक बड़ आदरणीय स्थान अछि। छओ दर्शन पर समान अधिकार रखबा कारणे हिनका षड्दर्शनवल्लभ कहल गेल छनि। ई दरभंगा जिला, ठाढ़ी ग्रामक रहनिहार छलाह। उद्योतकरक न्याय वार्त्तिक पर ई अपन सुप्रसिद्ध 'तात्पर्य टीका' रचलनि, जकर आरम्भ मे ई लिखइ छथि—"इच्छामि किमपि पुण्यं दुस्तर कुनिबन्धपंकमग्नानाम्। उद्योतकरगवीनामतिजरतीनां समुद्धरणात्।" (अर्थात् उद्योतकरक बुद्धि गाय सभ जकाँ दलदल मे फँसल छथि, तनिकें उद्धार कए हम पुण्य कमाए चाहैत छी।) वाचस्पति मिश्र बौद्ध तार्किक सभक खंडन कऽ, ओहेन विद्वत्ता सँ न्याय शास्त्रक तात्पर्य सिद्ध कएलनि जे ई 'तात्पर्याचार्य' कहबए लगलाह। शांकर भाष्य पर हिनक सुप्रसिद्ध 'भामती' टीका वेदान्त क्षेत्र मे गौरवपूर्ण स्थान रखैत अछि। 'भामती' हिनकर विदुषी पत्नीक [illegible]

हुनर मार्ग-दर्शन।
अपने सम्बन्ध मे मजाक शुरु कयल नगद टीक हुइत। किनस ने ककरा हम दोस्ताक सम्बन्ध मे कहैत छी ते कहनु ते कहनु अपने परिवार मजाक करैत छी। कहि हम दोस्तक प्रशंसा करैत होइ वा निन्दा। दोस्तक गुण-स्वभावक विषय अछि, जे उत्प्रेक्षा सँ उपदेश आ मेल हमर मति [illegible] हमर अभिलाषा क लेल। भोरिका मे कुछ दार्शनिक कहने छथि जे मनुष्यक हीन भऽ होइ छइ। मतिहत ओ, जे ओ स्वयं अपना बारे मे कहैत। दोस्त ओ जे [illegible]
(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

उदयनाचार्यक नाम सेहो अमरत्व। हिनक 'न्याय-कुसुमाञ्जलि' ईश्वर विषयक अद्वितीय ग्रन्थ अछि। नास्तिक बौद्ध सभ नहि टूटि सकए, आस्तिकवादक स्थापना कए, हिनके सभ दुर्धर आचार्य कहल छथि। हिनक सम्बन्ध मे एक किंवदन्ति अछि जे एक बेर ई कोनो कारणे मन्दिर गेलाह तऽ ईश्वर कें सम्बोधित करैत कहलाह—"ऐश्वर्यमदमत्तोऽसि मामवज्ञाय वर्तसे। उपस्थितेषु बौद्धेषु मदधीना तव स्थितिः।" (अर्थात् हे ईश्वर, अहाँ ऐश्वर्य-मद मे मत्त भऽ हमर उपेक्षा करैत छी। मुदा, बुझि राखू, यदि हमर अस्तित्व अहाँ पर निर्भर अछि तऽ अहूँक अस्तित्व बौद्ध सभक मध्य मे हमरे पर निर्भर अछि।) एहन छल मैथिल पंडित सभक आत्माभिमान। मैथिल पंडित सभक इहो गर्वोक्ति प्रसिद्ध अछि—
"वरमिह पदविद्या तर्क मार्गोक्तिकी वा
यदि यदि विषये वा कोऽपि मा स्पर्शमात्रः।
उदयति दिशि यस्यां भानुमान सैव पूर्वा
नहि तरणिरुदीते दिक् पराधीनवृत्तिः।"
(अर्थात् भाषा ओ तर्क कें हमसभ जेहन व्यवहार करै, सएह मान्य बनि जाइछ। सूर्य जइ दिशा मे उगइत सएह पूर्व दिशा कहबैछ) ई धुरंधर दरभंगा जिला, करियन ग्राम मे उदित भेल छलाह।

जइ प्रकार आदम आ इएन शताब्दि मे मंडन, वाचस्पति आ उदयनक प्रकाश मिथिला मे जाज्वल्यमान रहल तहिना तेरहम आ चौदहम शताब्दिक मध्य गंगेश, पक्षधर आ शंकर देदीप्यमान नक्षत्र जकाँ चमकैत रहलाह। गंगेश उपाध्याय नव्यन्यायक प्रवर्तक छलाह। हिनकर निवास दरभंगा जिला, मंगरौनी ग्राम मे छल। ई करियन ग्राम मे अपन विद्यालय स्थापित कएने छलाह, जकरा ढीह पर एखनहुँ शिशु विद्यापीठ अछि।

मिथिलाक नव्यन्याय परम्पराक इतिहास गौरवपूर्ण अछि। तीन-चारि शताब्दि मिथिला रहलि भारतक प्रमुख ज्ञानपीठ-विद्यापीठ बनल रहल। दूर-दूर सँ आबि कऽ विद्वान सभ एतए अवच्छेदकता प्रकाशा आदिक ज्ञान प्राप्त करैत छलाह।

गंगेश उपाध्यायक नव्यन्याय परम्परा मे सभ सँ प्रसिद्ध भेलाह पक्षधर मिश्र। हिनका विषय मे प्रसिद्ध अछि—"शंकर-वाचस्पत्योः शंकर-वाचस्पती सदृशौ। पक्षधरप्रतिपक्षी लक्षी भूतो न च क्वापि।" (अर्थात् शंकर आ वाचस्पति, शिव आ बृहस्पति तुल्य छथि।) परन्तु पक्षधरक समता तऽ किओ ने देखाइ मे अबैत अछि। पक्षधर बाप ए ई बड़ पक्ष कें धयइ छलाह तकरा सिद्ध कऽ दइ छलाह। [illegible]

छइ आ हिनका सँ 'अभि' 'आलोक' प्राप्त कए जग दीप लए भेलाह।

मैथिल संस्कृतिक ओहि स्वर्ण युग मे मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन केहेन, तकर उदाहरणस्वरूप पंडित भवनाथ मिश्रक नाम गौरवपूर्वक लेल जा सकइए। ई दरभंगा जिला, सरिसब ग्रामक निवासी दरिद्र ब्राह्मण छलाह। मात्र तथा मरठ्ठा अधीन छलनि। ओहि मे जे अन्न-वस्त्र उपजइ छलनि ताहि सँ निर्वाह करैत छलाह। एहेन स्वाभिमानी छलाह जे कहिओ ककरो सँ कोनो याचना नहि करलनि। तँ ई 'अयाची' मिश्र नाम सँ विख्यात भेलाह। ई आजीवन विद्यादान करलनि आ अन्त मे गंगालाभ कएलनि। गंगा सँ विदा होइ-काल ई श्लोक पढ़लनि—"अर्थानामर्जिता-दिभिर्यदि न सोपनीयं किमपि भुक्तं, सदा: परं श्रीमन्ताध्यर्मेणा सन्तोषशालिनी [illegible]।"

हिनकर पुत्र शंकर मिश्र एहेन संस्कारी भेलाह जे पाँच वरखक अवस्था मे ई श्लोक रचि कऽ मिथिला नरेश कें सुनौलनि—"बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम्।"

ई श्लोक एखनहुँ धरि गाम-गाम मे प्रसिद्ध अछि आ छोट-छोट बालक सभक हेतुवाक्य मे कण्ठस्थ करओल जाइत अछि। शंकरक पिता हिनका मधुर मिथिलेश हुनका मधुर पुरस्कार देलथिन। मुदा हुनकर माता भवानी तऽ अयाची मिश्रक पत्नी छलथिन। ओ शंकरक जन्म-काल एक चमइन कें वचन देने छलथिन जे शंकरक पहिल कमाइ ओकरा नेहासीक रूप मे देल जएतैक। ई प्रतिज्ञा स्मरण करैत ओ सभटा सम्पत्ति ओहि चमइन कें दऽ देलथिन। मुदा ओहो चमइन तऽ मिथिलेक माटि-पानि पर जन्मल छल। तँ सभटा धन सँ सार्वजनिक पोखरि खुनबा देलक जे आइयो धरि 'चमइनिक पोखरि' नामे विख्यात अछि। आइ सँ किछुए पीढ़ी पूर्व मिथिलाक ग्रामीण नारि एतेक महान छल।

एहेन छल मिथिलाक संस्कृति, जे त्याग, संतोष आ स्वाभिमानक अक्षय ज्योति सँ जगमगा रहल छल। अही सांस्कृतिक विशेषताक कारणे मिथिला सहस्राब्दि पर्यन्त तीर्थ भूमि बनल रहल।

कहल जाइछ जे पहिने मिथिलाक भूमि सरकः आविष्कार कारणे वाद अछि, वैदिक युग मे अग्नि एतए आबि नदी-नदक घाटे-घाट भऽ करैत एहि भूमि कें यज्ञक योग्य शुद्ध कएलनि। [illegible] नाम 'तीरभुक्ति' पड़ल, जे आब तिरहुत अछि। एहिठामक एक-एक [illegible]

मैथिली सुधिजनो बीच प्रमुख मासिक पत्र

देसकोस

अङ्क—३४ मार्च-अप्रील ८४ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

प्रो० हरिमोहन झा

२३ फरबरी १९८४ क मनहूस दिन हमरा लोकनिक प्रिय साहित्यकार हरिमोहन बाबू कें हमरा लोकनि सँ छीनि लेलक। मनुष्यक कतबो बुधिआर आ बरियार किएक ने हो—ओ ने कोनो आत्मज अइ तखन नाम पड़ने पड़ने घड़ी मे होइ छइ। जे अपन विमल कें दिन माल दा बर्स नहि—तहाक लेल सिद्धान्त देखियो कें सम्बोन रहैछ, अपन असमता कर नोर बहा संतोष करैछ। निष्ठुर काल ओकर कमजोरी पर हँसैछ, अपन विजय पर ठहाका लगबैछ।

परन्तु कतो कतेक शक्तिशाली अपना कें बुझैछ जतेक अइ नहि ओ मनुष्य कें समाप्त क सकैछ मुदा ओकर कृति आ कीर्ति कें नहि समाप्त क सकैछ आ आखर मे वाही मनुष्य त अपन कृतिये मे जीवैछ। आत्मा का अमरता मानहि विवादास्पद हो परन्तु कृतिक अमरता सर्वमान्य थिक आ तें तं कही जे हमरा लोकनिक प्रिय हरिमोहन बाबू, अद्य व हरिमोहन बाबू मुइला नहि। ओ मरियो नहि सकै छथि त अन्ताल नहि होइछ। हरिमोहन बाबू जीबै छथि अपन खट्टर ककाक तरंग मे, ओ जीबै छथि रंगशाला मे, ओ जीबै छथि कन्यादान आ द्विरागमन मे।

प्रो० हरिमोहन झा सभ वर्तमान युगक सर्वाधिक पठित साहित्यकार। प्रिय साहित्यकार हरिमोहन बाबू, हास्य सम्राट हरिमोहन बाबू, मिथिलाक दार्शनिक परम्परा पथक हरिमोहन बाबू जीबैत छथि आ तावरि जीवैत रहता जावरि मैथिली भाषा-साहित्य। यद्यपि प्रयोजन नहि जे हरिमोहन बाबूक प्रति उचित सम्मान / श्रद्धांजलि मैथिली भाषा साहित्यक कें समृद्ध केनाइ ओकर विकासक पथ प्रशस्त केनाइए टा होएत आर किछु नहि, किछुओ नहि।

दही चूड़ा चीनी

—प्रो० हरिमोहन झा

खट्टरकका दलान पर बैसल भाँग घोंटैत छलाह। हमरा अबैत देखि बजलाह हाँ-हाँ ……ओम्हर भरबाह रोपल छैक, घूमि कऽ आबह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, आइ सम्पादी भोज छैक, तेँ सूचित करय आयल छी।

खट्टरकका पुलकित होइत बजलाह—वाह-वाह! तखन लोकैं जाकि अबाह। ई सकरा पाँचे कतेक त भी छैतैक?"" ई भोज मे छैतैक की सभ।

हम—दही चूड़ा चीनी।

खट्टर—बस, बस, बस! सृष्टि मे तीन टा उत्कृष्ट पदार्थ थीक। गोरस मे सभ सँ सात्विक वस्तु दही—अन्न मे सभक चूड़ामणि चूड़ा—मधुर मे सभक मूल चीनी! यदि तीनूक संयोग भऽ जाय तँ त्रिवेणी संगम थीक। हमरा त त्रिलोकक आनन्द एहि मे भेटि जाइत अछि। चूड़ा भूलोक। दही भुवर्लोक। चीनी स्वर्लोक।

हम देखल जे खट्टर कका एखन तरंग मे छथि। समस्त सृष्टि बनताह। अतएव बात बढ़ैबा लेल बुझबाक ओबै देखि

हम चकित होइत पुछलिऐन्ह—एँ! दही चूड़ा चीनी मे सांख्य दर्शन! से कोना?

खट्टरकका बजलाह—एखन कोनो कहबह त ने कहै? तखन देखि आइ! हमर विचार अछि जे कपिल मुनि दही चूड़ा चीनिक अनुभव कऽ तीनू गुणक ध्यान कऽ लेल छथि। दही सत्वगुण। चूड़ा तमोगुण। चीनी रजोगुण।

हम कहलिऐन्ह—खट्टरकका, अहाँ त सभटा कथा अद्भुते होइत अछि। ई हम कहु नहि सुनने छलहुँ।

खट्टरकका बजलाह—हमर कोन बात कहन होइ अछि जे तों आनठाम सुनि सकबह?

हम—खट्टरकका, त्रिगुण अथवा दही चूड़ा चीनी, से कोना बहार कैलिऐक?

ख०—देखह, बाबा सभ दक्षिण मे रहैत छैक तँ रस। चूड़ा रूक्षता होइछ तँ तम। देखै छह नहि, अपना देश मे लोक कहि 'चमड़ा' चूड़ा शब्द प्रचलित अछि।

हम—आश्चर्य! एहि दिस हमर ध्यान नहि गेल छल!

ठढ़ भाइ छेक। बाकिन उचला दही भोजि कए पवि जाइ छैक तखन प्रकाशक उदय होइ छैक। तें सत्वयुग में प्रकाशक कहल गेलैक अछि। 'सत्वं लघु प्रकाशक मिष्टम्'। तें दही लघुपाकी की तथा सम कें इष्ट (मिष्टमर) होइत अछि। चूड़ा कोष्ठ कें बान्हि दैत छैक। तें तम कें अवरोधक कहल गेल छैक। और बिना रजोगुणे त क्रियाक प्रवर्तन हो नहि। तें चीनिक योग भेलैक खाली चूड़ा-दही नहि भोजन सकैत छैक। आब बुझलहक?

हम कहलिऐन्ह—धन्य छी खट्टरकका! अहाँ जे ने सिद्ध कऽ दी!

खट्टरकका बजलाह—देखह, सांख्यक मत सँ प्रथम विकास होइत छैक महत् वा बुद्धि। दही चूड़ा चीनी खेला उपर पेट मे बुद्धि कर स्फुरैत छैक। जेहि महत् तत्वक

नकल करू आ नष्ट होउ

मैट्रिक परीक्षा समाप्त भऽ गेल अछि। एहि बेर बिहार परीक्षा समितिक बहि परीक्षा मे पाँच लाख सँ ऊपर परीक्षार्थी सम्मिलित भेल छथि। ई परीक्षा आ एकर परीक्षाफल अनेक अर्थ मे महत्वपूर्ण अछि, मुदा एहि परीक्षाक कोनो विश्वसनीयता नहि रहि गेल अछि।

परीक्षा मे चोरि काज छड़-खड़ भऽ गेल अछि। मूर्ख-गमार सभ नीक नंबर सँ पास करबा लेल सोभंडी पर उतरि गेल अछि। जे लोक एहि चोरि कें रोकबाक प्रयास करत, से मारि जायत।

एहि बर्ख अनेक नव बात भेल अछि। मिथिलांचलक कोनेक उदाहरण लेल जाय। दरभंगा जिला मे दू गोट केन्द्राधीक्षक (सुपौल आ दरभंगा मारवाड़ी स्कूल) गिरफ्तार भेलाह आ कदाचार (परीक्षामे चोरि) क आरोप मे दण्डित भेलाह। मधुबनी जिला मे दू गोट केन्द्राधीक्षक क्योट आ मरही-कुम्हरास केन्द्र पर कदाचार मे गिरफ्तार भेलाह। खाजीपुरमे एक दण्डाधिकारी गिरफ्तार भेल छथि। सहरसा मे एक दिन एक दण्डाधिकारी चोरि करैत परीक्षार्थी कें पकड़लनि आ अनेक कें एकदम सभ ठाकां हुर्माना बगबनि आ एहि बरियाता सँ छुटैत छी जे सभहिं हजार वाका चला गेल। एहि बेर नव बात ई भेल अछि जे कदाचार मे केन्द्राधीक्षक लोकनि दण्डित कयल गेलाह अछि।

चोरि किएक होइत अछि?

एकर उत्तर सीधा अछि। लोक परीक्षा मे नीक नम्बर आनऽ चाहैत अछि जाहिसँ ओ धम नम्बरवाला सभ कें पछाड़ि आगाँ बढ़ि सकय। नीक नम्बर आनबा लेल परिश्रम सँ पढ़ब एक तरीका अछि जे आब पुरान भऽ गेल अछि। नव तरीका अछि जे नीक नम्बर देनिहार, गाइड आ सोभंडी सँ आनल जाय।

बोर्ड परीक्षा लेत अछि। बात नम्बर बढ़ाबक आ फेल के पास करायब कठिन बात नहि छैक। बाबक भूलल कर्मचारी इस्थिर देखैछ सभ किछु उलटा-पुलटा कऽ सकैत अछि।

एहि बेर परीक्षा बोर्डो कमाल कऽ देलक अछि। दू बेरिया प्रश्न-पत्र बजार मे बिकायल। समाचारक 'पोटोस्टेट' अखबार सभ छापलक, ओहि बेरुक परीक्षा बाद मे भेल। मुदा ई सबरि परीक्षाक पहिने बन-सामिल भेल, तें ओकर मानेन कतेक भेल।

बोर्ड परीक्षा समाप्त होइतहोइत पटना क दैनिक सभमे खबरि आयल जे प्रत्येक पत्रक प्रश्नपत्र आउट छल आ पटना तथा अन्य स्थान सभ पर मोट रेखारि बेचैत छल।

सभ किछु जनितो बोर्डक अधिकारी तथापि परीक्षा करबये बयलनि।

आब एहेन परीक्षाक बाबी सभ दीक्षक आयत आ तकरा आधार पर परीक्षा फल कयल जायत।

यदि देश मे परीक्षा अशुद्ध भऽ गेल अछि। परीक्षा पर्वो अशुद्ध भऽ गेल अछि। अशुद्ध लोक कें उपल कऽ शुद्ध आचरण क आशा करब अशुद्ध थिक।

मिथिलांचलक लोक एहि मैट्रिक-परीक्षा मे ककरो सँ पाछाँ नहि छथि। एकर फल मुदा की होएत? की एहि सँ मिथिलाक उत्थान होएत? प्रगति करत?

मिथिलांचलक युवक उद्देश्य थिक नौकरी। नौकरीक आधार डिग्री आ योग्यता दुहू थिक। साधारण नौकरी पाबय लेल सर्टिफिकेट जरूरी थिक। नोट नौकरी पाबय लेल सर्टिफिकेट संग योग्यता आवश्यक। ताहिमे योग्यता सभ सँ आवश्यक। यदि योग्यता क जाँच लेल प्रतियोगिता परीक्षा सभक आयोजन होइत अछि। मैथिल नौकरी मे बड़ बेसी सन्दिग्धलक छथि, मुदा नीक नौकरी मे कम छथि।

एहेन नकली परीक्षा क सर्टिफिकेट सँ लोक कोन नौकरी पौताह?

परीक्षामे नकल होइत अछि, तें विद्यार्थी माध्यर समक पाप बुझऽ छोड़ैत अछि। ओ किताब समर्थ अछोप बुझऽ छोड़ैत अछि। ओ अपना सँ पैघ हर व्यक्ति कें उपहास बुझऽ छोड़ैत अछि।

सोभंडी आ हर्रेबाजी, हिंसा आ अपराध महुअरा मे परीक्षा आ परीक्षाफल क कुपैघ हाथ छैक।

समाज नीचाँ मुँहे ससरिक खसल जाइत अछि।

पिता : मृत्युसज्ञा मे

□ विभूति आनन्द

□□

[illegible]

□□

[illegible]

□□

[illegible]

□□

[illegible]

□□

[illegible]

□□

[illegible]

□□

[illegible]

लाल बुझक्कड़क चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी !

नमस्कार सह जय मैथिली !

[illegible]

दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है
आखिर इस दर्द की दवा क्या है
हमको उनसे वफ़ा की है उम्मीद
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है

[illegible]

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

[illegible]

× × ×

बड़ी चूड़ा चीनी …

[illegible]

मैथिली भूमिगत का प्रमुख मासिक पत्र

देसकोस

अङ्क – २८ | मई-जून '७४ | मूल्य – पचास पाइ

अपना दिस सँ

मैथिली आन्दोलन आ मैथिलीक साहित्यकार

[illegible]

> मैथिल बिनु मैथिली की
> मानचित्र बिनु मिथिला धरि
> गाहि-गाहि पुछाइ करब हम
> बिहारी मिथिलाक अमान

मिथिला राज्य कहिया धरि !

[illegible]

प्रसंगवश

प्रसंगवश

— सम्पादक

[illegible]

मैथिली राज्य ......

[illegible]

शिक्षा मंत्रीक नाम पत्र

सेवा में,
श्री ... जी,
शिक्षा मंत्री,
बिहार सरकार, पटना।
महाशय,

[illegible]

बालगीत

[illegible]

—राम लोचन ठाकुर

मैथिली पोथी आ पत्रिका कीनू आ पढ़ू

		मूल्य
१.	बलिदानकथा — रामलोचन ठाकुर	४/५ टाका
२.	बेतालकथा — कुमारेश काश्यप	४ ,,
३.	प्रतिध्वनि (अ०) रामलोचन ठाकुर	४ ,,
४	जादूगर — रामलोचन ठाकुर	५ ,,
५.	मैथिली लोककथा — रामलोचन ठाकुर	५ ,,
६.	कहु नारीश्वर — मणिपद्म	१५ ,,
७.	मुन्शी रघुनन्दन दास : व्यक्तित्व ओ कृतित्व (संकलन)	६ ,,
८.	निष्कलंक — जनार्दन झा	३ ,,
९.	[illegible] — महेन्द्र मलंगिया	३ ,,

अरुणोदय प्रकाशन सँ भेटि सकैछ

[illegible]

कहु लोचन कविराय

[illegible]

[illegible]

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—१ अंक—१ अक्टूबर, १९८१ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

बालचन्द विज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ
देसिल बयना सब जन मिट्ठा
तें तैसन जम्पओ अवहट्ठा

— विद्यापति

आइ स ६ सए वर्ष पूर्व, जखन कि भाषा चेतना नामक वस्तु कम सँ कम भारत मे नहि छल, ताहि समय मिथिलाक सन्तान कविवर विद्यापतिक ई घोषणा निश्चिते हमरा लोकनिक हेतु गर्वक विषय थिक। कहबाक प्रयोजन नहि जे आगा चलि कँ सूर तुलसी आदि विभिन्न कवि कें अपन भाषा मे काव्य रचनाक प्रेरणा एतहि सँ प्राप्त भेलनि।

विद्यापति मात्र दृढ़ता आ विश्वासक सँ ई घोषणा कैलनि, तहिना प्रखर पालन केलो आ तकरे परिणाम भेल जे मिथिलाक भाषा-साहित्य चन्द्रमाक आलोकहि सकों देश-कालक सीमाक अतिक्रमण करबा मे सफल भेल, मैथिली मे काव्य रचना परम्परा नेपाल सँ आसाम धरि आ उड़ीसा सँ बंगाल धरि बनि गेल, कारण ठेठ वङ्गीय रूप मे बंकिम शताब्दीक बंगालक 'भानुसिंहेर पदावली' थिक।

ई जनकवि विद्यापतिक क्रान्तकारी चेतनाक परिणाम छल जे जनताक कथा भाषाक बहुतो साहित्य मे गेल, जनभाषा साहित्यिक भाषाक गरिमा प्राप्त केलक। एहइ कारण छल जे विद्यापति जनगणक कंठहार बनि गेलाह, हुनक रचना मात्र हमरधार्मिक सांस्कृतिक नहि दैनन्दिन जीवनक अंग बनि गेल। ई विद्यापतिक मैथिली धार्मिक कत छल जे 'बहुलोक'क सैनिक शक्ति कें परास्त केलक आ मिथिलाक स्वाधीनताक रक्षा केलक। तें विद्यापति मैथिलीक पर्याय बनि गेल छथि।

खेदक विषय जे आइ पुनः मिथिलाक माथ पर दुर्दिनक मेघ मड़रा रहल अछि। मैथिली पराधीन भेल छथि। मैथिल सन्तान अचेतनावस्था मे पड़ल छथि, साहित्यकार अवसाद कें खोजि स्वान्तःसुखाय मे लागल छथि आ विपत्तिक समाधान पर कहिओ 'बहुलोक' बनिये गेल छथि। एहना अवस्था मे आशा अछि जे एक बेर फेर विद्यापतिक जे नवचेतनाक शंख फूकि सकथि, मैथिलीक आराधना क पुनरुज्जीवन क सकथि, बहुलोकक लोक शक्ति मैथिली कें राष्ट्रभाषा क सकथि आ भाषाक कें सैनुक क नव आलोक प्रसारित सकथि। 'देसिल बयना' हुनके स्वागतार्थ प्रतीक्षारत अछि।

शक्ति-पूजा

भगवती दुर्गा शक्तिक प्रतीक छथि। आसुरी शक्ति अनुचित विनाश आ दैवी शक्ति अनुचित प्रतिष्ठाक निमित्तहि हिनक प्रादुर्भाव भेल छल। ई आदि शक्ति मे सकली-भूत भेल छलीह आ तें युगों सँ हमरा लोकनि हिनक मनौती करैत आबि रहल छी। शक्ति स्वरूपा भगवतीक पूजार्चना करैत आबि रहल छी।

भगवती दुर्गा मातृरूपा छथि। मातृक रूप मे हिनक पूजा-ध्यान हमरा लोकनि करैत आबि रहल छी। माँ अपन सेना कें निर्देश करैत छथि, शक्ति-शस्त्र सँ प्रदान करैत छथि, हमरो लोकनि तकर आकांक्षा रखैत छी।

आब प्रश्न उठैत अछि कि हमरा लोकनि शक्ति पूजाक अधिकारी छी? पूजाक निमित्त जे पवित्रता, दृढ़ता, सत्यनिष्ठा आ समर्पणक भावना आवश्यक—से हमरा लोकनि मे अछि? रामायणक अनुसार मैथिली कें रावण अपहरण क कऽ लऽ गेल छल। मर्यादा पुरुषोत्तम राम प्रण कयलनि जे बहि काकक निमित्त रावण कें उचित शिक्षा द कऽ ओ मैथिली कें आपस अनताह। रामायणक कथा संग महाकवि निराला 'राम की शक्ति पूजा' मे कथा जोड़ि दी त आर नीक होयत। तदनुसार राम अपन प्रण कें पूरा करबाक निमित्त शक्तिक पूजा केलनि, पूजाक समय हुनक फुलडाली सँ एको फूल निपत्ता भ गेल, जकर अर्थ भेल पूजा भंग भेनाइ वा अपूर्ण रहि गेनाइ। रामचन्द्र कनिको विच-लित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलाह जे ओ कमलनयन छथि आ तें तुरन्त अपन आँखि

कनिको विचलित नहि भेलाह, ओ नहि बिसरलाह जे ओ कमलनयन छथि आ तें तुरन्त अपन आँखि बहार कए भगवती पर देब पुष्पक रूप मे चढ़ेबाक हेतु उद्यत भेलाह। भगवती तेखन प्रकट भेलथिन विजय का वरदान देलथिन।

आइ फेर मैथिली अशोक वाटिका मे बन्दिनी छथि आ हम चारि कोटि मैथिल सन्तान चुप-चाप हाथ पर हाथ धेने बैसल छी। कि हमरा लोकनि मायक दूध नहि पीने छी? कि हमरा लोकनिक देह मे शोणित नहि? कि हमरा लोकनि बहिर छी जे बंगाल देश, असम, दक्षिण अफ्रिका, फिलीस्तीन वा अन्यत्रक गर्जन नहि सुनाइ पड़ैछ? आ कि हमरा लोकनि नपुंसक छी? आ जँ से छी त की अधिकार अछि शक्ति पूजाक? आ जँ से नहि छी त आउ—एहि पवित्र आ शुभ अवसर पर हमरा लोकनि अपन मातृभाषाक उद्धारक शपथ ली तखन शक्ति पूजाक सार्थकता आ उपयोगिता।

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-बारि सुड्डाह करत हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

—रामलोचन ठाकुर

बाढ़ि : अइ नदिया के येह बेवहार

मिथिला मे एक बड़ प्रचलित कहबी छैक जे 'दैबो दुर्बल घातका'। कारण मिथिला एकर भुक्तभोगी अछि। मैं बेरक प्राकृतिक विध्वंस एकरा रीढ़ कमजोर कऽ देने छैक। मानववादी मिथिला आब पैंघो भाग्यवादी बनल जा रहल अछि। बाढ़ि वर्ष भरिमे रौदीक प्रकोप छलैक आ समस्त मिथिला धू-धू कऽ जरि रहल छल। खेत सबमे लहलहाइत धीया-बाड़ि-मरि गेलैक। घर खाली आ बाहर खाली। सबहक वर्षा होयब लागलैक तऽ लोकक मन मे एक उत्साह भरलैक आ ओकर अपन सम्पूर्ण शक्ति सँ चास-बास मे लागि गेल छल। ठीक ओहने समय मे बाढ़ि एलैक आ लोक बाढ़ि बाढ़ि करए लागल, ओकरा सामने रोटी-रोटीक समस्या मुँहबाबैत ठेसय लगलैक।

मिथिलाक भारतीय कोनो एहन अंचल हेतैक जाहिठाम नदी नहि होइक। बाढ़ि देशक प्रायः समस्त भागमे नदीक परि-हार ने पसल अछि। ओना तऽ नदी प्राकृतिक सम्पदा थिक आ स्थानकऽ ओहि देशक हेतु जाहिठाम लोक-जीवन कृषि पर आधारित होइक तािहठाम एकर आर बेसी उपयोगिता आ महत्ता छैक। परंच एहो तहिना सत्य जे सम्यक्‌ रूपें नियन्त्रित रहैत आबल अछि। सम्यक्‌ सुरक्षा आ उचित उपयोग नहि भेलेंने नियति कें रोकल नहि जा सकैछ। वर्षाकाल मे ई नदी सब भरि जाइत छैक आ उफनय लगैत छैक आ संगहि ताण्डवनृत्य करय लगैत छैक। ई सुख मिथिला वासीक हेतु केहन विनाशकारी भऽ जाइत छैक तकर मापदण्ड एखन बहुतो ठाम देखि सकैत छी।

मिथिलाक ठेंघ ठेंघ नदी मे गंगा, कोशी, कमला, बलान, गंडक, करेह, बागमती आदि अछि। बाढ़ि मे एहि नदी सबहक भूमिका रहैत छैक पाथ बीच मे लायल सबहक ते डूबायत, धाम-धर कें रहायल आ माल-जाल कें भसियाय। कोशी एखनहुँ मिथिलाक हेतु अभिशाप बनले अछि। एहि बेरक बाढ़ि सँ ओना तऽ समस्त मिथिला प्रभावित भेल अछि मुदा कटिहार, सहरसा, पूर्णिया, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर जिला सभ मे बहुत अधिक एकर विभीषिका रहलैक आ तें सबसँ अधिक क्षतियो भेलैक अछि। एहि सँ लाखों लोकक धन-मालक क्षति भेलैक अछि आ ओकरा आवास विहीन भऽ गेल अछि—धीया-पुताक संग लोक तऽ एखनो बाटे-घाटे बैसल रहल अछि। सरकारीक सन्तान आइ रावभरि छाह आ पौंच हाथ जनक हेतु बिकल भऽ रहल अछि। व्य-वस्थाक तरफ सँ जे अनुदान भेटि रहल छैक तकर कहे कोन? ई तऽ ओहुना लोकक ठाम ध्येय गवाही दऽ रहल अछि जे ओकरा सबहक बाढ़ि अपन कहू ने दूर करबा मे ई अनुदान कतेक सहायक भऽ सकलैक अछि। अनुदानक वितरणो आव-श्यक लोक कें नियमतो भऽ सकलैक अछि आ अनेरहो ओहि दुःखक समुद्र मे छीटल गेलैक अछि।

बाढ़ि मिथिलाक हेतु कोनो नव घटना नहि। नदी-मातृक देश मिथिला सदिखन सँ एकर कोपभाजन रहल अछि आ तें बाढ़िक लोक बाढ़ि सँ अभ्यस्त भऽ गेल अछि। रोकल जाइतो ने छैक? सरकारी अवहेलना आ नैतिक आर्थिक अवचेतना-युत एहि हेतु समानरूपें सँ दायी। तें प्रतिवर्ष बाढ़िक ताण्डव लीला होइत छैक। प्रतिवर्ष लोक मरैत अछि, घर आँगन खसैत छैक आ नाश-वाथ भसैत छैक आ एकरे पीठ पर बसैत छैक नाना रंगक रोग-व्याधि। लोक मरैत अछि, विभीषिका कटैत अछि। मात्र छैक ओकर एहि समस्याक निदान? समाधान के करतैक? देश तऽ आजाद भेल मुदा ३३ वर्षक बादो बाढ़िजनित ई समस्या सामने बनल रहि गेलैक। किएक? — जयदेव झा

गाम सँ दूर   मिथिलाक मजदूर

कलकत्ताक रिक्सा वाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे भयंकर महगी आहिए काल सँ झुलस गेल-ए आ मात झुकले छ नहि गेल-ए एकरा बड़ पैघ स्थान देल गेलै-ए। ई गौरव मिथिले देश के छ छइ जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे लागनि धैने कुनू राजा हरमाहि केने छथि। राजर्षि जनकक्षे दृष्टान्त इतिहास मे अतीत अछि। तें मिथिला धन धान्य सँ भरल-पुरल छल। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नहि छल, ई शब्दकोषक एगो शब्द मात्र छल। इएह कारण छइ जे एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। जे नहि कने-ए जे भारतीय ६ गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन थिक। पश्चात कालि के स्थिति बदलि गेलैक। लोक श्रम कें अवज्ञाइ नजरिसँ देखब लागल आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच ओतीक घोषक रूप मे कुमान भाष लागल। सामन्तवादक आधार पर समाज ठमाज व्यवस्थाक स्वच्छ-सबल देह मे बुर्ज लागल गान्ही भारि गेलै। सखाक-मथन के 'गुण आकर्षक आधार पर' हम चारि वर्णक निर्माण करल ए' जिनका देल गेल आ तकरा स्थानपर ब्राह्मण मुँह सँ ब्राह्मण आ बाहि सँ राजपूत आदि जनवाक कथा के महि देल गेल राजर्षि जनकक हर जोतबाक बात के सूत तेल तथा मिथ्या बना देल गेल। तथा कथित उँच वर्णक हेतु श्रम अपमानि भैनाइ पाप भ गेलै आ एही ठाम सँ मिथिलाक अधोगतिक इतिहासक आरंभ होइत।

श्रम कें हेय बुझनाइ तथा एहि सँ विमुख भैनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति कें जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुना शोषण प्रवृत्ति कें जन्म देल। स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बँटि गेल—शोषक आ शोषित। एक दिस शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लागलैक त दोसर दिस शोषित श्रमिक वर्गक अभाव ग्रस्तक भीड़। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छइ आ धन-धान्य सँ भरल मिथिला मे गरीबीक नग्न नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या बढ़ैत आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सँ मिथिला दिनानुदिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहुँ कोइ मे नव-नव तरीकाक कोनो उपयोग नहि करल गेलैक। करबे के करैत ? सूलामी अरदी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डुबल रहल त दोसर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छल। ताइ पर सँ रौदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ऽ लागलैक। जीविकाक अन्यान्य साधन रहलैक नहि। एहि परिस्थितहुँ मे मिथिलाक मे कलकारखानाक विकास नहि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अचेतनता तथा दूषित राजनीतिक आ मैथिल मिथिलाक राजनेतागण छथि। आधुनिक राजनीतिक पद्धति पर्वँ होइ छइ जनता कें मूर्ख बनाकद रखनाइ तथा अभाव मे रखनाइ, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक भाषा, ओकर सभ्यता-संस्कृति कें नष्ट क देनाइ। राजनैतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस श्रमिक वर्ग कें दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नहि उपलब्ध भ सकलैक। पेटक ज्वाला मे ओ स्वर्ग हुँ सँ पैघ अपन जननी-जन्मभूमि कें, अपन माइ-बहिन, पत्नी आ नेना कें परिजन-पुरजन कें तेजि बाहर दिस पड़ायल।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सँ बेसी बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे अछि। एहिठामक जूट मील हो वा कोलियरी वा छापाखाना सब ठाम मैथिल श्रमिक पहुँचल छइ। रिक्सा चालक, ठेलावाला आ रिक्साचला मे अधिकांश मैथिल अछि।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छइ पहिल त साइकिल रिक्सा जे आनोठाम पाओल जाइछ परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइछ ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खींचनाइ। एहि मे रिक्सा चालक नहि रिक्सा खिंचनिहार होइत। एकर आकृति एतबेक टमटम सन होइत छइ आ टमटमक घोड़ाक स्थान मे एहिठाम मनुक्ख रहैत—मनुक्ख कमान। घोड़ाक गरदनि मे बंटी रहै छइ आ एकरा हाथ मे डण्डा पर टन-टन मारैत गाड़ी आ मन सँ अचेत ओकर संग दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्सा छइ आत्मभाव अगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सँ चले छइ।

एहि रिक्सा पर बैसल काल प्रायः जनता कें अमानुष सोचया केल बाध्य भेल छी। बैसाखक दुपहरिया मे जखन पसीना मे नहाइत तथा बोझ लादने जखन कनी मोटगर सबारी भरि बैसल चलन नीना खाइत तनिक खिचिते छइ। बाट चलैत आदमीक लारी सब दौड़बा मे जे ओ परिश्रम होइ छइ तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ नै क सकैत छी। वर्षा अखाड़ मे जखन मुसलाधार वर्षा होइत रहै छइ बाट पर पानि भरि जाइ छइ आ आधिक्युलिक बा नहि-चले छइ, ओखन-पाथर खाइ जाइ छइ—एहन स्थिति मे हमरा लोकनिक देह लाली चाहैत जखनी अवलम्ब ऐहना स्थिति मे सवारी लय दौड़नाइ क परिश्रम आ खतराक अनुमान सहजहि करल जा सकैछ। आ एहन कठोर परिश्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छइ। एइ मे दू टाका रिक्सा मालिक कें देमय पड़ै छइ। बाँकी मे अपन खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिआर्डर।

ओना त छ है सब मे एगो रिक्सा लेहि जाइ छइ, परन्तु बेसी लोग एकरा लोकनि कें नहि रहै छइ जे अपन रिक्सा कीनि सकत। दोसर बात जे लाखी रिक्सा कीनिते केहन स त होइ नहि छइ। रस्ता चालक के स्थिति छइ ताइ मे सरीखन सिफ्ट मे किछु भरम्मति करबे रहै छइ आ टाइपर सँ पुलिसक खर्च आप न छइ। ऐहना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छइ ? मालिक कें ८ 'क' के बचै छइ ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र खनाइ कोना रहि जाइ छइ। देखू—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, कोनिक सन्देश—श्रम सँ विमुख नहि होइक। ओ अपन महगा, माँ बाप आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य कें नीक जकाँ बुझैत। तें एक टा पनि रोटी आ एक का साइ पीबि दिनभरि रिक्सा लेने संगी सबसँ दौड़ैत रहैत।

एमहर बंगाल सरकार बाट आनक नहुआ व कें पिछु आहतेक रिक्सा कें बन्द करबाक योजना बना रहलैए। बंगालक प्रयोजन नहि जे बाजार मे बाइ टूक-टेम्पुक कारने आ ट्राफिक पुलिसक बड़ी आधुनीक कारने बाट जाम होइ छइ ताइ पर सरकारक किछु चालि नहि चले छइ आ तें अपन 'पामार'क उपयोग एही असंगठित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अछि। एहि ठाम लाख पाँच हजार रिक्सा कें लाइसेन्स छैक आ बाँकी बिनु लाइसेन्सक अछि। बंगाल सरकार नव लाइसेन्स कोनो नहि अइ। एहि महगीक युग मे बेसी दिन एही 'महरिया' बोझ। छैक तैयार नहि अछि से करण मिथक मे होइ, ११०४ एहा छइ जे एकर बनल न गेले छ हम बेकार पनि भायल। एकरा कोनो 'युनियन' (संगठन) नहि छइ। संगठनक प्रदत्त भेल रहैत। नेर निश्चिते रिक्सा खिंचनिहार ना मढ़ा गेलै आ प्रदर्शनकारी रिक्सा चालक पुलिस नीक करबा पीटाइ एकरा लोकनिक केल गरमिहार छइ। फलतः बेकार मजदूर जे आ धुरि गेनाइ छोड़ि दोसर कुनू ठाम छइ। परन्तु समस्या छइ जे गामे ई सब की करत ? की कलकत्ता-ती कैना गुजर चलतै ? बहादुर देश भेल छइ आ एही सब ताइ अभाव नागरिक छी। संविधान मे विकास सब नागरिक समान छइ। सब कें रोज अधिकार छइ आ एके रोज सुविधा भेटतै। ओना एहो नीके से भला एकरा लोकनि कें नहि बुझल एकरा लोकनि कें नहि बुझल छइ जे कम से लोकक कुव्यति होइ छइ आ सब ताही लोकक संग मिल। मुद कखनो बुझल छइ जे ई सब बिहारी आ बिहारक मुख मंत्री बाबू श्री सत्य मिश्र छथिन जे हमरे गाम-घरक छथिन। चुनावक समय मे गामे गामे जाइ—छथिन आ गरिबहा लेल य रोस की कहाउत कहबाक नाय छइ, कि जे गाम खाली चुनामेदारी रहै। आने बरिसहुँ दुनका तथा एकरा लोकनि समस्याक निदानक कुनू योजना छनि।

—मुसाफिर अ

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आधुनिक युग मे सिनेमा कें प्रचार आ लोक शिक्षाक रूप मे सबसँ आ कारगर माध्यम मानल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीनि गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ मगही एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कहकटा सिनेमा बनबो केलैं अछि आ नीक चलो कलैक अछि। मगही मे सेहो छपल छाप लेल सिनेमा बनल छलैक परन्तु सभ सँ प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमहर कहकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनबा मे आयल अछि परन्तु आइधरि कहोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९६८ मे हमहूँ एहि क्षेत्र मे पदार्पण कयल स्व० रामबहादुर चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एगो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बचैत अछि भारतीय नारीक आदर्श बीत प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि सब वर्तमान समाज मे एहन बेसी आवश्यकता ओ उपयोगिता छैक। तें हम एहि कथा चयन कयल।

सिनेमा बनायबे यद्यपि हमर सब नवागत छलहुँ परन्तु नाट्य-मंचक दीर्घ अवधि अनुभव तथा सिनेमा बनाबक बड़ा हिनामा कलाकार लोकनिक संग सहयोग हमरा साथ छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे ई फिल्म नहि सफल त निश्चिते टक्कर के होइत। प्रचार मे एकर गीतसम जे रेकॉडिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे स्वरूपत पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छैक आ बीत रेकॉडिंगक अतिरिक्त कलाकार-चयन आ हमर चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छैक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ सँ अर्थ व्यवस्थोनि-

शेषांश पृष्ठ ४ पर

गाम सँ दूर मिथिलाक मजदूर

कलकत्ताक रिक्सा वाहक

कृषि प्रधान मिथिला देश मे अनेक महत्वा आहिए काल सँ बुभल गेल-ए आ मात्र बुभले टा नहि गेल-ए, एकरा बहु देल स्थान देल गेलै-ए। ई गौरव मिथिले देश कें टा छइ जे माथ पर राजमुकुट आ हाथ मे भाखाति लेने कुनू राजा हलवाहि केने छथि। राजर्षि जनकक हवहन्त इतिहास ने अतीत अइ। ते मिथिला अन्न धन्य सँ भरल-पुरल छल। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नहि छल, ई शब्दकोशक शब्दो टकर मात्र छल। इएह कारण छइ जे एहिठाम विद्याक अनेक प्रकार छल, शास्त्रार्थ-विज्ञान, साहित्य कलाक अनेक विकास भ सकल। से नहि छलैन्ह जे भारतीय दर्शन मे बारि गोट ठहो भूमिका देने छथि। पश्चात क्रान्ति कें स्थिति बदलि गेलैक। लोक अम कें अवलाइ नबरिये देलक जकरा आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक लोकक रूप मे बुभल जाय लागल। अर्थविज्ञानक आधार पर बाला समाज व्यवस्थाक स्वाभाविक देश मे अर्थ भ्राक तानहि नहि लेलै। अर्थक बल के 'पुरा आकर्षक आधार पर' हम भारि वर्गक विश्लेषण करइत छी' विचार देल गेल आ तकरा स्वाभाविक महान युद्ध सँ ब्राह्मण आ बाढ़ि सँ राजपूत आदि धनक कथा कें गांढ़ि देल गेल रार्जाषि जनकक हर घोड़-भाक बाजा के सूरु भेल तथा मिथक बना देल गेल। तथा कथित उच्च वर्गक देश भार बालनि पेनाइ पाप न गेलै आ एही-ठाम सँ मिथिलाक अर्थोगतिक इतिहासक आरंभ होइत।

आम कें देश ढुमनाइ तथा एहि मे निहुत सेनाइ विलासिता आ संचयक प्रवृत्ति कें जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषक प्रवृत्ति कें जन्म देल। स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बंटि गेल—शोषक आ शोषित। कुछ दिन शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लागैक त दोसर दिस शोषित श्रमिक वर्गक अभाव मातवाक जीव। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छइ आ धन-धान्य सँ भरल मिथिला मे गरीबीक नगन नृत्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या बढ़ै आ दोसर दिस उत्पादक क्षमी सँ मिथिला दिनानुदिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहु ओहि मे नव-नव तरीकाक कोनो उपयोग नहि कयल गेलैक। करबे के करैत ? सुलग्नी अदकी मेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल छ वो आ दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छल। ताह पर सँ रौदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ते आलैक। जीविकाक अन्यान्य साधन रहलैक नहि। एहि संपाकुछु मे मिथिला मे कलकारखानाक विकास नहि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अकर्मण्यता तथा दूषित राजनीति आ केंद्र मिथिलाक राजनैतिक छथि। आइक राजनीतिक पवित्र धर्म होइ छइ जनता कें मूर्ख बना-कय रखनाइ तथा अभाव मे रखनाइ, आ एहि मिथिला अभावक होइ जनताक भावा, ओकर सम्पदा-जंक्षुसे कें नष्ट क देनाइ। राजनैतिक नेतागन अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिस श्रमिक वर्ग कें दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नहि उपलब्ध भ पबैछैक। पेटक ज्वाला मे ओ स्वर्गो हुं सँ बेस अपन जननी-जन्मभूमि कें, अपन माइ-बहिन, पत्नी आ नेना कें परिवार-पुरुषा कें छोड़ि शहर दिस नहाइल।

मिथिलाक श्रमिक भारतक कुनू शहर सँ बेसी बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर मे छइ। एहिठामक जूट मील हो वा इंजीनियरी वा छापाखाना सब ठाम मैथिल श्रमिकक बहुलता छइ। भाखा बाला, ठेलावाला आ रिक्सावाला मे बेसी प्रतिशत मैथिल अइ।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छइ पहिल थ साइकिल रिक्सा जे ग्रामीण पाओल जाइए परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल जाइए ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' बंगला शब्द थिक—जकर मैथिली भेल खींचनाइ। एहि मे रिक्सा चालक नहि रिक्सा खिचनिहार होइत। एकर आकृति एननैन उमरम सन होइत छइ आ हाकक पौहाक स्थान मे एहिठाम मनुक्ख रहैत—मनुक्ख सन्तान। घोड़ाक गरदनि मे बंधी रहै छइ आ एकरा हाथ मे हथड़ा वर सन-सन मारैत गाड़ी आ बस सँ बचैत ओकर सन दौड़त।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार बगारह हजार टाना रिक्सा छइ आश्चर्यकर! आ एगारह हजार परिवारक भूख-रोटी एही सँ चलै छइ।

एहि रिक्सा पर बैसल बाबू भाखा बजना में असाधुय सोचिया ठेल बाबू मैल थी। बैसाखक दुपहरिया में थलत बुझब सोचेइ आमि सोचे अमि आ नीचा बाढ़क पीच घमि बाइ छइ तखनो खाली देह आ खाली पएरे दू-तीन आदमीक सवारी लय दौड़ब मे जे श्री परिश्रम होइ छइ तकर हमरा लोकनि कल्पनाओ ने क सकैत छी। तहिना अषाढ़ मे जखन मुसलाधार वर्षा होइत रहै छइ बाट पर पानि जमि जाइ छइ आ खाधि-खुधिक पता नहि चलै छइ, ओहू-वाषर जागि जाइ छइ—तेहन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पएरे चलबो असंभव तेहना स्थिति मे सवारी लय दौड़नाइ क परिश्रम आ कष्टक अनुमान सहजहि कयल जा सकैछ। आ एतेक परिश्रम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छइ। एइ मे दू टाका रिक्सा मालिक कें देबय पड़ै छइ। बाकी मे अपन खेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिआर्डर।

ओना त छ के तक मे एतेक रिक्सा भेटि जाइ छइ, परन्तु सेहो सुधा एकरा लोकनि कें नहि रहै छइ जे अपन रिक्सा कीनि सकत। दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनिये लेला सँ त होइ नहि छइ। एकर भाइक जे स्थिति छइ ताइ मे अधिकतर बिद्ध मे बिना मरम्मति कराने रहै छइ आ ताहूवर सँ पुलिसक खर्च अलग क छइ। तेहना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लेनाइ छोड़ि दोसर उपाये की छइ ? आ तें मालिक कें द 'म' जे रहे छइ ताइ मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र जुटनाइ कठिन रहि जाइ छइ। देखा—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, लोरिक सलहेस—श्रम सँ विमुख नहि होइत। श्री अनंत महता, भी पार आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य कें नीक जकां बुभैत। तें दुख हा पाँच रोटी आ एक बस ताइ पीबि दिनभरि रिक्सा नेने धीटी बजबैत दौड़ैत रहैत।

एमहर बंगाल सरकार बाद आमच महता क कें बिनु लाइसेंसक रिक्सा कें बन्द करबाक योजना बना रहल-ए। कहबाक प्रयोजन नहि जे एकाच मे बाइ हुक-टेम्पुक बाहनो आ ट्राफिक पुलिसक बड़ो ओसूलीक बादो बाट सोग होइ छइ ताइ पर सरकारक बिनु बनि नहि सके छइ आ तें अपन 'कामरे'क ठरबोल एही अर्धमतिल मजदूर वर्ग पर बलए आ रहल अइ। एहि ठाम मात्र पाँच हजार रिक्सा कें लाइसेंस देल आ बाकी बिनु लाइसेंसक अइ।

बंगाल सरकार जब जइसेन्स देबाक व नहि अइ। एहि महगीक युग मे श्री बेसी दिन एही 'महीना' मोल कें ही केल लेवार नहि अइ सँ कारण जे किरदन ने होत, परन्च बल भरि छइ जे एकर बना भ गेले छ हजार रिक्सा बनि जायत। एकरा लोकनिक 'युनियन' संगठन) नहि छइ। कुछ संगठनक प्रयत्न भेल रहैक। मेहा सब मिथिले रिक्सा खिचनिहार नहि छ बढ़ा गेलै आ पदाधिकारी रिक्सा सब तनक पुलिस नीक जकां पीटाइ केलकै एकरा लोकनिक सेहो बकसिहार बेसी छइ। एहेना बेकार मजदूर के अपन गा छुटि गेनाइ छोड़ि दोसर कुनू हारा नहि छइ। बरन्च समस्या छइ जे गामे जा। ई तत की करत। की खाएत-पीत क केना गुजर चलतै। कहाइत देश स्वाधीन भेल छइ आ हरी सब ताइ स्वाधीन देशक नागरिक छी। संविधान मे लिखल छइ जे सब नागरिक समान छइ। सब कें एके रंग अधिकार छइ आ एके रंग सुख-सुविधा भेटतै। ओना बहौ नीके छइ जे मे बात एकरा लोकनि कें नहि बुभल छइ। एकरा लोकनि कें नहि बुभल छइ जे देशक जन जे लोकक उन्नति होइ छइ आ हरी सब टाही लोकक बेटा थिक। बुझा एतेक सकतो बुझल छइ जे ई सब बिहारी थी आ बिहारक मुख्य मंत्री बाबू श्री जगन्नाथ मिश्र छथिन जे एकरे गाम-घरक लोक छथिन। चुनावक समय मे गामे-गाम जाइ—छथिन आ गरिबहा लेल मारिते रास श्री बहानन करबाक गप करैत, छथिन कि हैं गप खाली चुनावेबाजी रहै आ बाने हरिमुं बुनका आ एकरा लोकनिक समस्याक निदानक कुनू योजना छनि ?

—गुनगवा झा

मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आधुनिक युग मे सिनेमा कें प्रचार आ लोक शिक्षाक सब सँ सहज आ कारगर माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। बिहारक तीन गोट प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ मगही एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि। ओना भोजपुरी मे कइएकटा सिनेमा बनलो छैक अछि आ नीक जकां चललैक अछि। मगही मे सेहो कम्मत लाय लेल सिनेमा बनल छलैक परन्तु सब सँ प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरो अपवाद अछि। एमहर कइएकटा सिनेमा निर्माणक समाचार यदा-कदा सुनबा मे आयल अछि परञ्च आइधरि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९६५ मे हमहूँ एहि क्षेत्र मे पदार्पण कयल। एक राजकमलक चौधरीक अमर कथा 'ललका पाग'क संग। ई एतो एहन फिल्म सामाजिक कथा थिक जाहि मे मिथिलाक संस्कृति क्षोत अछि आदर्शीय नारीक आदर्श चरित्रक प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथाक वर्तमान समय मे बड़ बेसी आवश्यकता आ उपयोगिता छैक। तें हम एहि कथाक चयन कयल।

सिनेमा संसारमे यद्यपि हमर प्रथम पदार्पण छल परञ्च नाट्य-मंचक दीर्घ आ पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जगतक कला-विनामा कलाकार लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे ई फिल्म भवि सफल आ निश्चिते सफल भ होइत। समाज मे एकर शीघ्रहि जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिल्म मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छैक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ दृश्य चयनक काज सेहो शेष भ [illegible] गेल छैक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ से कार्य तत्परतेनि-

शेषांश पृष्ठ ४ पर

लोककथा

महाकाली

(मिथिलाक बेटी सीता भारतीय नारीक आदर्शक रूप मे मान्य छथि। अपना लोकमानस कहैत अछि— सीता बाल विदेही भेल, दुख छोड़ि सुख कहियो ने भेल। त्याग, धैर्य, करुणा आ त्यागक प्रतिमूर्ति सीताक भावाभिव्यक्ति पर बहुत रास पहुँचलनि त ओ महाकालीक रूप धारण केलनि। मिथिला मे प्रचलित लोकगाथाक आधार पर प्रस्तुत अछि उक्त चिरंतन कथा—महाकाली।)

लंका विजयक उपरान्त अयोध्या आबि रामक राज्याभिषेक भेल। राम जानकी आ लक्ष्मणक संग अयोध्या फिरलाह। कतेको दिन तक हुनका लोकनिक स्वागत सिनेहक आनन्द मे उत्सव मनैत रहल। जखन ई सब शेष भेलैक त किछु दरबारी सब महाराज केलनि जे रावण सन अत्याचारी के वध करबाक उपलक्ष मे महाराज रामक अभिनन्दन होयबाक चाही। विभीषण सबहक मे उठि सकेत छले। दुखमोचनक होयबाक बहु जोर-शोर सँ चलय लागल। सीता के सेहो खबरि लगलनि। सेहो ओ एकदिन राम सँ पुछि बैसलथिन—कोन कुल उत्सवक आयोजन भ रहल अछि? महाराज राम आवाज सँ सविस्तार कहलथिन—अहाँ के नहि पता? सीता आँखि सँ मुँह घुमैत कहली—हमरा बिनु पुछने ते बैसलनि त पता रहत कोना? अहाँसँ तखन सबठामे अहाँ कोनहि नहि पुछैत छी। सभी त मात्र आदेश राज्यक विभिन्न होइत अछ। ओकरो के भरमा होइ अइ, हुनका होइ अइ, ते लोकगाथ प्रकटित अहाँ ओकरेनि के कहाँ अछ। राम कहलाह—हमरा खेर अइ जे अहाँ सँ विचार नहि लेल। प्रजाजनक विचार छलि जे महा-प्रतापी रावण राक्षस के वध बहुतक प्रताप के हमर मंडित पूजा हो। प्रजाक विचार पै हम तेज म में बहु बैसहुँ जे कनिका हमार पूजा होयत जिनको मत बैसाहु सिमरि गेलहुँ। जखन भाव बारहि अहाँ सभत स्वीकृत नहि देव—ई पूजा नहि होइत।

सीता कहलथिन—हम स्वीकृति नहि देब ते अहाँ सिरज लोचि लेलहुँ? बहुत बहुत मधुमा भेल हो।

राम—ई बात विवाद मे अबुझा बातो—कतर निन्दा हमर नहि।

सीता—अहाँ हमर विचार पुछै छी अथवा स्वीकृति चाहै छी?

राम—निश्चित विचार पुछैछी। मैं अहाँक विचारैं ई काम उचित हो तखन स्वीकृति दिय।

सीता गंभीर स्वर मे कहलथिन—अहाँ के पता अइ जे रावण सँ बेसी पराक्रमी आर बड़ो राक्षस अइ। आइ देवक महिरावण कोखुकनय रावण के पछाड़ि ओकरा सँ मायावी ओर बलशाली छथि। आ ओ मुहरण विजय बैसल मोहे ओकरा मुक्ति मैल छलैक। ताही प्रताप लोकक राजा सहस्रबाहु रावण कहली सीतेह। राम गंभीर म गेलाह आ पार सँ पुछे अहाँ गेलाह। प्रात भेने मंत्रिमण्डल मे विचारहाक पीरवा देव नेतै जे कार्यनि महाराज राम सहस्रबाहु रावण पर विजय नहि करिताह तावति ई उत्सव स्थगित रहल।

अखन रावण सँ ई बात पता चलिति त ओ कन के सँ रामसल पहुँचक आगमरी कैलथिन—आइ हमरा अहाँ देव बाले हम भोइस कोनहती ओकरा परास्त करू कन्हैना नागस आनि लाउ। उत्सवक आयोजन स्थगित न जे हैयाक चाही।

महाराज राम बिहुँसैत कहलथिन सकल है अहाँक शौर्य सँ शहरक काज सिक। हमरो शक्ति सँ बाहरक। यदि निमित्त हमरा हुनु, नाहक अंब मेरेठीक रहनाइ उत्सवकाक अछ। आइ हनुमान के कहियनु रथ तैयार करथि आ वैदेही के सेहो तैयार हैबाक निवेदन करथि। हमरा छोड़नि आर वैदेही नहि कब छिन सिना होइ।

अकाल रामक युद्ध तकैत युद्धक थिर गेलाह। कहिर्ष धावक आइ रथ तैयार छिथ। रामक बामहित जानकी आ दहिना मे लक्ष्मण बैसल। सारथी हनुमान।

बसन रथ सहस्रबाहु रावणक राजक सीमा मे पहुँचैत त तुरत हुवा क्षोभ सबरि सतवैक। तो ओइहमा सँ तीन सोजनक आ समविल हुगर बसाइ बिसल त पता चलतैक सारथी बारन विजय प मेलैक। रावणक बाण सँ हनुमान पेसवाहुक मात कैला गेलाह। ओ पौरन नाम छोड़बाक त लक्ष्मण के लकड़ नहि। तेस मे राम मुर्छित भए रथ पर ढरि गेलाह। तखर पात ओ कतेको भल्ल छोड़बाक संग रथ हारि मुर्छ गेलैक। सीता विकटयुग्म कहाँ रथ पर बैसल छलीह। रावण के बाहन रथ पता चलतैक त ओ भयानक भेल। ओकरा हुनका के देही नहि स्वतैत के रथ पर चेतति महिका दोसर भेसी नहि आदि अदि मिलोह। सखि उपासक देवाक भारते ओ सर्वन हुनका चमत्कार केलक मा कतर मूलक सिन रूमा पालना केलक।

ध्वहर देवलोक मे खलबली मचिगेल अर तब देवादि देव महादेवक सोयत पहुँचलाह जे हुनु द्वारा बचाव मे ओ असमर्थ भ जाथत। देवतागण व्याकुलता देखि महादेव प्रस्थान केलनि। ओ सीताक समीप बसन करू बइलि पहुँचलाह आ हुनका विविधताक हेतु नाना उपहार भांत मात छोड़ल लगलाह—मात ही हे देवी स्वामी युद्धक्षेत्र बसल बन देखैत गरल, हनुमान बल सैनक भरल करता अहाँ अमर असर, देखाक मरदान देवे इच्छिमति तेसा अहाँ केबे बल सब। ई त अहाँ सब ही। मानव रूप मे स्वामि मानव के कंकित विध्वंस करैत छी।

इ सं प्रकारे बहुत बहुतक बाद सीताक ध्यान भंग भेलनि। कोधमे आबिते हुनक शरीर कारी म गेलनि ओ सीता कान्हुक बैस खुलि पहुँचय लगलनि। ओ रथ सँ उतरि खोले मिट्टा लेली आ ते रावणे के बहनि छाड़ि मे बधुली त हुनका बंधकर रूप देखि भारले सं भाग आदि देलक। तक रावण हुनका पर प्रहार केलकनि ओ तखर हाथ पकड़ि कसा सैन बैसलथिन ता देर मा धहरि अगा बढ़ि गेलीह। ओ कथा सँ रावण मात सोतैत अनुज्ञात रहतैं मा बाजल सहस्रबाहु रावणक नजर झुलप म भेल स देव दिन सुनलौ। सीताक रजतसों रूप सँ युद्ध देवगण भकैला ओ दोचकनि बा बला मे त बाड़ी लीक विहीन भ जायत। ओ तत कैर महादेव सब पहुँचि अनुनय विनय केलनि। अदरस दरनं महादेव रहिबेर आवि महाकालीक चरण प के रहलाह। उदृंगुली कालीक नजरि नहि पड़लनि आ हुनक पयर महादेवक छातीपर पड़लनि। ओ पता लगलाह सीता लगलनि त महादेव के चीन्ह ताली ओ तुरित हेलनि आ पुनः अपन पूर्वक रूप मे आवि गेलीह। सीताक देखल रूप महाकालीक रूप मे पूजित होइत। सीता भाराम तखर रहलीह आ मंगल अनुमुनि आहुरे गौरि अयुत्थान कथा रामक पीतल अवस्था मे अनलनि। पेट लक्ष्मण आ हनुमान के चोभि सौपिक कैलनि आ सैन अर्ध मा पिराइह। रामक कांडिहुचक सहना सीताक शांडिहुताक प्रभाव उठल गरेच दैविडी तकरा आशीर्वार देलनि ताहि दिन सँ सीतापत्न सानि राम सँ दहिने सीताक नामक पसिवारी चलत आइ।

कविता

वसन्त गीतक मादे

(कवि सीताकान्तक हेतु)

एक तोह ...
स्पन्दनहीन-ब्रह्म
पतझड़ वन मे
भेल छल हमर जन्म
आ
वसन्त पर्व गीतक मादे
स्थिति ओहि ना अछ
कोना
सुनल न हमरो अछ जे
कहियो पहिरान रहैत छल
कारहोमास कतौसो दिन
मस्त बहार
आ ताही आशा मे हम
पत्रैत आयल छी सभ्यानुसार
यदि पतझड़ वन के
मसले वन
पायल देहा दुग्ध्यता मनि कुसुम-च
रहना स्थिति मे
हमरा सँ वसन्तागीतक आशा
करबे होयत अनुचित
भाइ है।
काव मे
हमरा छोड़नि ओ निधि पहवो
(कारण
गाछ सभ पलनो अछ धान्यवत त
हमरा विश्वास अछ
आइ वे स्वाहि
यदि मे होइलैक तब पल्लव
रंग-बिरंगक फूल
सकर मादक गंध सँ महमह करत सर्वत्र
पीबि मधु मातल मधुप गुंजन करत
तखन
हमहुँ लिखब आ
मिलिबेरे लिखब
वसन्त-गीत जे
अवहालक नहि
परिवेशक बनल लिख

—रामलोचन ठाकुर

बालगीत

चैत कबड्डी

चैत कबड्डी अबै छी
तोरा के बिछु लबै छी
नाम बड़ै छइ गंगा-यमुना
सबरे गीत सुनबै छी।
[illegible]
— रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा ...

[illegible]

National Film Development Corporation

[illegible]

आन्दोलन समाचार

[illegible]

× × ×

दिल्ली— [illegible]

[illegible]

—श्री कान्त मंडल

मैथिली युक्ति मोर्चाक अपील

[illegible]

मिथिलाक श्री—मैथिल श्री
मैथिली स्वाउ—हिन्दी हटाउ
मैथिली बाजू, पढ़ू, लिखू। सबठाम मैथिली मे कहू।

विपत्ति असगरे नहि अबैछ

[illegible]

चन्दाक दर—

एक प्रति	पचास पाइ
छःमासिक	पाँच टाका
वार्षिक शुल्क	बीस टाका

सिरगक लोकनि सँ—
'दैनिक बयना' क ग्राहक बनबाक लेल सम्पर्क करू—
वितरण व्यवस्थापक,
अक्षरोदय प्रकाशन,

विज्ञापन दाता लोकनि सँ —
'दैनिक बयना' मे अपन विज्ञापन दए लाभ उठाउ। [illegible]
सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
अक्षरोदय प्रकाशन,

लेखक / पाठक लोकनि सँ निवेदन

1. [illegible] 'दैनिक बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।
2. 'दैनिक बयना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना केँ प्राथमिकता देल जायत।
3. मिथिला-मैथिली सँ सम्बन्धित समाचार पठाउ।
4. 'दैनिक बयना' [illegible] सुझाव आमंत्रित करैछ।

कहु लोचन कविराय

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
कहु लोचन कविराय [illegible]
[illegible]

अक्षरोदय प्रकाशन, [illegible] श्री [illegible] झा द्वारा प्रकाशित तथा [illegible] प्रेस, [illegible] मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

राजनीत

चैत कबड्डी

चैत कबड्डी अबै छी
सोर के मिझु उबै छी
जखन बड़ि छल गीत-चमड़ा-
सबरे गीत सुनबै छी ॥
जाहि माटि सँ जनमलि सीता
जाहि हमर ई वाणी
याज्ञवल्क्य गौतम, कपिल के
मुनि रहल नहि पानी
सुन्नो सामाक गाथ कहै छड़
सबरे गीत सुनबै छी ॥
ई कोशिक-बलहेल भरती
ई विद्यापतिक धाम छल
महादेव बनि चाकर अयला
मिथिला देश महान छल
आचरि भाल-सुभग जा रहती
सहज शान्त दोहबै छी ॥

— रामलोचन ठाकुर

मैथिली सिनेमा'' ···

हम मैथिलीभाषी फेरि कारिंग त ९ भाषक अपने सिनेमा बनि कै तैयार भ गेल। ओना यदि देखल जाय त बिहार सरकार सँ सेहो सहयोग करबाक प्रयास कएल गेल सरकार दिस सँ एखन धरि तक नहि भेटल अछि।

सिनेमा आइ सभ्यता ओ उपयोगी अछि। आइ वैज्ञानिक युगमे एकर समाधान यदि सफल भ सकैत छैक। कतेको युवा लेखक कलाकार अछि जे कम्पिटिशन के रोजी-रोटीक संगहि अपना प्रतिभा विकासक सुयोग छैक। बम्बइया सिनेमा मे, जे विशेष क' मनोरंजक होइत, सामाजिक स्तर बड़ दिन सँ आबि रहल अछि। मैथिली सिनेमा ... विकासक हेतु अत्यावश्यक अछि। मिथिला क' सम्बन्धी लोकनि देखा-देखी बढ़िते जा रहल छथि। सिनेमा उद्योग कें आर्थिक सहयोग हेतु एकटा केन्द्रीय संस्था छैक—एन० एफ० डी० सी० (National Film Development Corporation) जे राज्य सरकार मार्फत सिनेमा उद्योग के आर्थिक सहयोग दैत छैक। महाराष्ट्र, प० बंगाल, तामिलनाडु, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य सरकार यदि सँ मात्र टाका सभ आग-

आन्दोलन समाचार

दरभंगा—हमरा लोकनिक दरभंगा प्रतिनिधि सूचित कैलनि जे स्थानीय मिथिला कल्याणार्थ मोर्चा तत्वावधान में ... सर्वोत्तम आयोजन करब का रहल अछि। ... मिथिलाक सर्वांगीण विकास पर विचार-विमर्श होएत। ... मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेबाक हेतु आमन्त्रित ...

कानपुर मे ... मार्च १९८२ मे ... अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन आयोजित होएत। कार्यकर्ता लोकनि दिस सँ 'मैथिल वचना'क शुभकामना।

× × ×

दिल्ली—हमरा लोकनिक दिल्ली प्रतिनिधि सूचित कैलनि जे अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्लीक तत्वावधान ९४ विद्यापति समारोह आयोजित भेल। ... भव्य कार्यक्रम ... भेल। ... मे श्री योगेन्द्र झा, ... श्री डॉ० ... राजेन्द्र यादव, ... नारायण यादव, ... झा (डॉक्टर) आदि सहयोग ... संस्था कें प्राप्त भेल। ... मिथिला मैथिली ... सहयोग ... सेहो एहि अवसर पर ... छल।

बहुत राजक सिनेमा उद्योग कें बड़ सहायता कएने अछि। सरकार बिहारक ... बिहार राज्य पछि सँ वंचित अछि। ... राज्य सरकार सँ सुनल जाइत छैक। बिहार मे ... एहि दिशा मे ... मिथिलाक संस्कृति ... लेखक, कलाकार, एवं सिनेमा सरकार सँ ई अपेक्षा रखैत अछि जे ओ अपना एहि दिशा मे ध्यान देथि आ समुचित प्रयास करथि'।

—श्री कान्त मंडल

मैथिली मुक्ति मार्चक अपील

मिथिला मे ... मैथिली मुक्ति मार्च ... आयोजित अछि। ... मिथिला ... प्रस्तावित ... कार्यक्रम होएत। ... मैथिली ... सँ निवेदन करैत छी ... कार्यकर्ता मैथिली कें ... मिथिलाक ... मैथिली कें ... मिथिला ... नहि। ... सर्वथा अनुचित—से ध्यान राखल जाय।

मिथिलाक जी—मैथिली जी
मैथिली बचाउ—हिन्दी हटाउ
मैथिली बाजू, पढ़ू, लिखू। सबकाज मैथिली मे करू।

चन्दाक दर—

एक प्रति	पचास पाइ
अर्धवार्षिक	पाँच टाका
वार्षिक	बीस टाका

विपत्ति असगरे नहि अबैछ

समाचार सुन' मे आबि रहल अछि जे दक्षिण अंचल मे ... अनावृष्टि भेल अछि। ... महामारीक प्रकोप ... नहि भेलैक। ... मिथिलाक ... अत्यन्त दुःखद ... स्वाभाविक छैक ... राज्य सरकार द्वारा कोनो ठोस उपाय नहि भेल छैक। ... सरकारी ... अपना ... दक्षिण ... मिथिलाक लोक ... सुविधा ... एकर ... जे सरकार ... मैथिली के कोनो ... नहि ... 'ओकर दुःखक नहि अंत' ...

विज्ञापन लोकनि सँ—
'मैथिल वचना' क ग्राहकी हेतु सम्पर्क करू—
विज्ञापन व्यवस्थापक,
अक्षोदय प्रकाशन.

विज्ञापन दाता लोकनि सँ —
'मैथिल वचना' मे अपन विज्ञापन दए लाभ उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सँ अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
अक्षोदय प्रकाशन.

लेखक / पाठक लोकनि सँ निवेदन

१. अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'मैथिल वचना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।
२. 'मैथिल वचना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना कें प्राथमिकता देल जायत।
३. मिथिला-मैथिली सँ सम्बन्धित समाचार पठाउ।
४. 'मैथिल वचना' सम्बन्ध विचार आ रचनात्मक सुझाव स्वागत करैछ।

कहु लोचन कविराय

अनुपम मिथु नाम के लोहक पगड़ा भाग
... ...
... ... मात्र ई ...
अपना के ... ... शुभ ... ...
कहु लोचन कविराय ... ...
... ... ई ... ...

अक्षोदय प्रकाशन, ११, मुक्ताराम बाबू लेन, कलकत्ता-७०० ००७ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा ... प्रिंटर्स, २२-बी, वृन्दावन बसाक स्ट्रीट, कलकत्ता ५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली युवक मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देशिल बयना

वर्ष—१ अंक—२ नवम्बर, १९८१ मूल्य—पचास पाइ

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
[illegible]
विद्रोही मिथिलाक सन्तान

सम्पादकीय

विद्यापति स्मृति-पर्व

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जय मैथिली

निज भू-भाषा हित मरय
मरय ने, अमर [illegible] अछि
[illegible]
[illegible]
—मैथिली युवक मोर्चा
कलकत्ता

बुढ़ारी-भत्ता बनाम सत्ताक राजनीति

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

—अरविन्द झा

नव पोथी

[illegible]
[illegible] उपन्यास
[illegible]
[illegible]

संस्कृतक सारापर सत्ताक बबूर

संस्कृत भाषा मात्र मिथिलेटा मे नहि, समस्त भारतवर्ष मे देवभाषाक नामे ख्यात अछि आ एकर लिपि, जे वर्तमान मे मैथिली, हिन्दी, नेपाली आदि लेखन मे प्रयोग होइछ—देवनागरि नामे। ओना त वेदक-पुराण आदिसँ लऽ कऽ आइ धरि एकर बुझबा लोकनि द्वारा कुल भाषाक प्रयोगक प्रसंग उपयोगक बन्धक, धर्मक प्रचारार्थ सेहो ई हिन्दू समाज धर्म-ग्रंथ सही भाषा मे अछि। ओहिसँ मिथिला, एकर ले विद्वान भारतीय संस्कृत छैक आ दीर्घ परम्परा छैक ते एकरा कुल भाषाक हेतु हार्दिक मिथिला सबेछ। किन्तु आब होइतहुँ ई भाषा मृतावस्था मे आइ मेल आ एकर प्रयोग कारण नेष ते ई कहियो लोक भाषा नहि बनि सकल।

वर्तमान मे बहुत दिन सँ मिथिलांचलक जनैतहि समस्त बिहार मे संस्कृत शिक्षक नहि बन आबि गेल अछि। मधुबनी कुल कतेक हुआ दी भाषाक संस्कृत विद्यालय स्थापना नहि भेल हो से पहिनहि कालेजक शिक्षक ने भेल हो। ई मिथिला कथा थीक पहिने गामक गाम संस्था बुझबो ते बारि छैक आ सम्पूर्ण कहियहु ते अंग्रेजी आदि आ मिथिला स्कूल विद्यालय छैक। कहियाक ई मिथिला देस आधुनिक नहि होयबा मे अंग्रेजी स्कूल मे सेहो संस्कृत पढ़ैबाक पूर्ण व्यवस्था छैक, तनिहु ते हे मिथिला बिहार मे संस्कृत। बहुते दस गोट गाम अछि मधुबनी जिलाक कामहगे। कहियाक प्राचीन संस्कृत पाठशाला आ हाइस्कूल मिडिल स्कूल पद्धतिहि सँ पढ़बाक बाटी दू गोट मध्य पाठशाला सुखनछ। बनी संस्कृत प्राथमिक अहु माध्यमिक विद्यालय आ दोसर संस्कृत प्राथमिक अहु माध्यमिक बालिका विद्यालय। यदि गाम सँ मात्र कोस उत्तर मनसिया वाणीमोहन गाम मे सेहो दू गोट प्राथमिक-अहु-माध्यमिक संस्कृत विद्यालयक स्थापना भ चुकल छ। बनी नहिने सँ बनी बाढ़ प्राइमरी स्कूल विद्यालय छैक आ भरल बथान मे मिडिल स्कूल नहि बनि सकी छैक बथन कि विद्यार्थी पढ़ नैनी छैक। जे स्कूल छैक से प्राचीन गुरुकुल पथा बाढ़ी मे चलि रहल छैक आ मैष देखिते गुरुजी लोकनि कुर्सीक संगी कुल-कुला देह छथिन। अभरेथ नहिया गाम सुखी सँ कुसैल पठौल धरि चल बाइछ। पढ़क पिनहा मे सामन, लोक कें छैक से बनहार केँ। आ बहुतायत एहने स्थिति मिथिलाक सब गामक छैक, अपवाद केँ छोड़ि।

बिहार सन पिछड़ल प्रदेश मे आ खास कऽ मिथिला मे, ब्राह्मण जातीय पैदा नामक सत्तु नहि छैक अपन भाषा-संस्कृति सँ लोक पूर्ण उदासीन अछि आ अपन अधिकार प्राप्तिक बाह्य मे बहुसंख्यक हरिजन द मुसलमान ब्राह्मण छात्र संस्कृत-मैथिल नहि देखि सकलो प्रस्तुत बाधि

समर्थन छैक। की कहिअहु ई संस्कृत सेहो किछ आ से बात सिधु?

यदि प्रश्नक सटीक उत्तर पैब छैक हमरा लोकनि कें अनेक पाछा जाए पड़त। १० जन १९८० कें बिहारक वर्तमान मंत्री मण्डल अपन पहिल बैसार मे उर्दू कें बिहारक दोसर राजभाषा' घोषणा निर्णय लेलक। पहिने ई कहि देब आवश्यक जे उर्दू सेहो बिहारिक हिन्दक मात्र भाषा ने कुल, मुसलमानक मातृभाषा नहि छैक। भाषा धर्मक नहि होइछ होइत छैक आ क्षेत्रीयता मे बाइ श्रेय मे स्थायी बाधि निवास करेत ताही क्षेत्रक भाषा ओकर मातृभाषा होइत छैक। परन्तु सही वस्तु छैक। जे संस्कृत जेना हिन्दुक तेल लहिना उर्दू मुसलमानक तेल आ स्थान सँ तथाकथित हिन्दी प्रदेशक मुसलमानक तेज धर्मक भाषा थिकेय। मुसलमानक सभक धर्म-ग्रंथ सही भाषा मे छैक। ई जिस कथा मे संस्कृतक पण्डित सभ कहैं पुरालोकनी हैं छोड़ि सर्वाधिकारक के ई भाषा अधिनो मे छेक। किन्तु धर्मक प्रति सने सेहो बहुत देशक बाटो लोक कें एकरा प्रति मोह छैक आ मिनु बनी कुमनी हमर समर्थक बनि जाइत। बिहार सरकार यही बहुला सँ लाभ उठओलक।

बनैं अजनिहु जे कुल बिहार मे ही हजार डार्जिलिंग सचाक कम्मन कत मे मेल छैक। ई मात्र बाति के मिथिला दुकनी मे बाटि ओकरा समक्ष कला देते अहु बाह सँ की कहबाहु भाष होनाक विरोध नहि क सकेह। भर्त्सनात्मक विरह पहल पहर्षन किंक से सबा द्वारा अभाव भोजनक पच मलछा करेह। आ सभा मनहि गढ़बंध था तथाकथित मध्यांत मे बिहारक मे हो ओकर चरित्र बने छैक। उर्दूक मान्यता-वर्गक आधार पर मनाइक मिथिलाक पूर्णित महर्षन छोड़ि आर किछु नहि भेल। जन-कोटिक आ महरानी मे बाहु सनोताक यहि महर्षन मे बिहार सरकार प्रसन्न हुआक नेताक ३०० अतिमाय निनक नेतृत्व में किछु क्रमनक नेय सरकार बनबो मेलाइ। यदि नीति सँ बरोबरि बाबले देखे से मात्र मिथिलाक कुल मुसलमान अपन मातृभाषा मैथिली नहि पढ़ल ओकरा पहल ने उर्दू पढ़त। मैथिली पढ़ी ओकरा नोकरीक बाधा नहि छैक से उर्दू सँ छैक। ई बिहार राज्य मे उर्दू ओ नोकरी नहि दिया सकेत छैक—बहिद छैक से बनहि पाँच-दस हजार कें कोटिया भेटि गेलैक। परन्तु मातृभाषाक मान्यता कोन प्रसंग नहि तखेत अछि।

आइ भाषा विवादक माहौल नहि बीसिबीसवीसक साबलो अछि। अंग्रेजी पढ़ल लोक सही तुलवे बाटेन बैसल आ एकरो पढ़ैत से एकरा द्वारा बीसिबा बैसल रहल छैक। मैथिलीक समर्थक मातृभाषाक मौलिक भाषा हवाह काल छैक। दोसर मातृभाषाक

गाम सँ दूर : मिथिलाक मजदूर-३

कलकत्ताक ठेलावला

महानगर कलकत्ता सन विशाल विकसित आ व्यस्त शहर मे आइ काल्हु पहाड़ साधारण बात थीक जे ठामनी सँ लैक देहल-नेहल म गेल छैक। दुस-सग, दुस टेम्पु टैक्सी प्राइवेट कारक बीच मिथिला ठेलाक अपिसन अनायासे बहतो स्थान भरता दिन बाजरित व बैसा मे पूर्ण करेत सकल होइत। ई ठेला बहुत दो पै मनुष्यक सर्वोपरि किछ नवीन औजारक विकास नहि बनि सकैछ, ओकर स्थान नहि ल सकैछ। ठेल सँ ठेल चलबालाका धनहि आर मिथिला मे पहरि भाको रहि उतारैक मजिताव अ

नहि मेटा सकैछ। कमिशनक ठेला बढ़ि गेल मिथिला मे हो विरोधी बाजागाड़ीक बाही मे ठेलक ओकर आ ठेला विशेष लोक स्थान नहि म सकैत।

ठेलावाड़ी बारी ओ बाड़ी जबकहा ठेल कें क गेल बाद। ई वैज्ञानिक विकसित किछ बाइ मे तुला अपना बाजा नहि होइत छैक। एकर दुसरा ठेलावाड़ी बाटे सतत नहि पौरुष बाकि कुल, ओकर बीच हाथ देहक बाइ बाली रौद छैक कहा दुई बोल रही सँ मिथिलांक रहैक। यदि से

(शेषांश पृष्ठ ३ पर)

मानवते धार्मिक चेतनाक विकास तथा जातीय एकता स्थापक होइत छैक से वैचारिक सर्वाङ्गिण विकासक सूत्रपात किछ। एहि कारण छैक जे १० वर्षक पश्चात् मैथिली आन्दोलन एकटा सब सोइ मिथिला आ राष्ट्र लैक मैथिल सन्तान अपन योगिता सँ पदनाक राजनय कें तुबा देलक। ई आन्दोलन नकारात्मक नहि सकारात्मक छल, ककरा विरोध नहि अपन न्यायसंगत अधिकार प्राप्तिक छल आ तेँ एकर प्राप्ति बाहनो उपलब्धि अछि जे सतत प्राप्ति कालक्रमे दुर्दशानाक बाट द सकैछ। ओना मिथिलाक जनमन-तिरस्कार हजारक वर्षनो अंकीर्णताक नेतृत्व कतिपय प्रयास केलक आ बाहरना नेतासर लोक कें दिग्भ्रमित बनल छैक संस्कृत शिक्षा-विकासक बहुपक्ष सखल ?

सरकारक यहि पोथनाक बाटा दू गोट उपेक्ष छैक। पहिल त मैथिली आन्दोलन के दिग्भ्रमित कैलहु बालप महराबी मान्यता बहनो ओकरा मन सँ नहि हटेलेल बाहुल आ कनें चलाबन कें छोड़ि बाल कर्म एकरो अपना के मैथिल बहुल से संकोच बोध करेह आ अपना मातृभाषा के मातृभाषाक कह से स्वीकार करबा सँ हिचकिचाइछ। ओकरहुक उत्तर यहि मिथिल कें बहुल मे बालो मे मौक बाव केलक। पतहा मैथिली आन्दोलन मे बहुसंख्यक अंग्रेजी अर्थ लोक छल मे संस्कृतक बोधक रहल आ संस्कृतक द्वारा ई सुविधा भोगी वर्ग अपन स्वार्थपूर्ति होइत देखि आन्दोलन सँ विमुख भ जाइत। दोसर यहि धर्मक बलकारी चमचा सब कें गाछली मानक 'कीरा' भेटि पैलेक आ ओ सदा बरकारक बाजा बाजहि बोलैत रहत। सुविधा सहुराम मे जे सरकारी नवका छल उपरा वहुँक मामले 'धार' बढ़ा देल गेलैक। यहि तहहि बालक उपर भाषा प्रवासहु मर्त्य वैभवक पूर्ण संभावना छैक। ओना होइत थी से त अभिमें बहुत परक बड़ोबरि निर्लज्जीकर बहुल आ उठैछ से अपना समस्या कालिकक अबोधो मिथिला-मैथिलीक सर्वोपरिक छैक पूर्ण जिम्मेवार हुअड़ आवश्य आ कर्म-काण्डमय रहत-ह।

ते से ई पत्तन सरकारी योजनाक मध्यम आदर्शनामनीय' संस्कृत विद्यालय खुलब आमल। ओना त एकर स्वार्थ बहुत पहिने साधन म गेलैक मुता स्कूल बहकानी खुपि रहल-छ। दू तीन वर्ष पहिने सँ बाजा-चम देवक बढ़का बाइक आ सहजा आ सैं 'मैल मेट' से लोक हलबाहा द करैत। 'इन्सपेक्शन बाबी' सरकार मात्र तीन सँ दाखा रखने छैक आ सेहो से-नवाक तहनी देखे 'मैल मेट' पे बना होइत छैक। आब किछु मैथी देने 'इन्सपेक्टर' मैथिलहुनक चयन कल्याक अधिकारी लोक कें भेटि जाइत छैक। नैबो नैन भ्रमर होनक कटिहो घटाक बाक ३० का बहिर मेला छड़ि। जिनका महिनाम सुनाम मे 'मोट'क नकाटी बाड़ी।

माध्यमिक विद्यालय सेहु-ओकरा नामे मतों-मरोद मे कुल स्तरक बाट बाढ़ा कतेक लगीटी देवाक बाड़ी। बाजा ते सबकर योजना अनावश्यक नजिर मे होइत छैक। बताबी स्थिति देखबे के करैछ? सवयी बौद्धिकता! ओट बौद्धिकता ए बानक बढ़े से बनोह ठौका छल आ सात मे 'इन्दिरा-अभि कथा, जे मैथिल त नहि पास क एकर मुहा कुल ताहि राजनैतिक बनाव सब उतर क लेने छद—यदि स्कूल मे शिक्षक बनि गेल। ई किछ बात देखे जे ओकर, संस्कृतक शिक्षक सब नहि कतय बनेर छैक। बनो शिक्षक महोदय मिलत कहेंक, छाता बाजा नैपार करेत कलाइ बाइ ते हमरा बोनैक मे मिलबानि 'ओम्ना अवकाश'। यदि तहि संस्कृतक बिहार विकास होइत के त बुझनो अइ तखन मैथिलीक बाहिर बनबते बइछ। हमरा लोकनि संस्कृत-पाठशाला मे बहुने की मैथिलीक मुखबे। संस्कृत पाठशाला मे व्याकरण, ज्योतिष वा न्याय सब मैथिलीक माध्यम सँ पढ़ाओल जाइत छल। आइहुक यदि स्कूलक भाषा हिन्दी छैक संस्कृत एक विषय अनिवार्य, अपनो पहोक कतक भाषा विषय सन अंग्रेजी स्कूले सन पढ़ाक आ तँ मिथिलाक 'उर्दू' जाक सतानीत जाक मैथिली नहि पढ़बा मेल बाजार बाइछ बाइछ। एक बाबर मे बनो त संस्कृतक सारापर सत्ताक बबूरक गाछ रोपबाक ई बहुपक्ष किछ।

—अभयट

मैथिली आन्दोलन

मैथिलीक आन्दोलन बनब' पड़त

[illegible]

—रामनरेश [illegible] 'भ्रमर'

[illegible]

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

कविता

बहिनदाइक नाम एगो चिट्ठी

बहिन दाइ !
अहाँक चिट्ठी भेटल छल —
[illegible]
हे बहिन दाइ !
[illegible]
बहिन दाइ !
[illegible]
किन्तु बहिन दाइ !
[illegible]
बहिन दाइ !
[illegible]

—रामलोचन ठाकुर

चिट्ठी पुरजी

दैनिक वयनाक मनेजोक भेटल। कतेक नीक लागल से कहि नहि सकैत छी। समाज मे पत्रिकाक भाषा, विषय आओर रूप पर ध्यान देल गेल अछि। यदि प्रकाश हेतु अपना दिशि सँ आर "दैनिक वयना" परिवार दिशि सँ हार्दिक अभिनन्दन आओर शुभकामना स्वीकार करू।

—डा० चन्द्रकान्त मिश्र, इलाहाबाद

दैनिक वयना पहुँचल। मन प्रफुल्लित भए गेल। हम हार्दिक शुभकामना व्यक्त करैत छी जे पत्रिका सतत प्रगति करए से कामना करैत छी।

'दैनिक वयना' क वीथीक प्रतीक बनल जे हमर इच्छा अछि एकर सबकें मिथिलाक भाषाक अनुचित समादर होएत।

'बिनु भाषाक लोक अछि
पशु मूरख समान
करैत जाय वीतल पानि
भाव अबूझ समान'

हमरा भाषा अछि मे पूर्ण विश्वास करैत छी जे अपने लोकनि साहित्य सँ नै बनी साथ लिओ करैत छी तकर मूल्य भावी पीढ़ी पैत करत।

—डा० मदन मिश्र, मधुपुरा

कहैत दैनिक वयना एक बन मिथिला हारिला हैं परिवार बन नै बात पुन में नोंट लगल रहल आ है [illegible] प्रकाशित [illegible] प्रकाशन अछि। [illegible] समय आ सहयोग बनल रहत।

—सूर्य नारायण मंडल, नई दिल्ली

दैनिक वयना देख बहुत राग शुभका-मना। मैथिल सहयोग देश मे पालू नहि हएब, विकास सभी। प्रतिभा अंक सँ पूर्ण आपूर्ति करब।

अपने लोकनि मे पत्नी देल बाल-पाल बना देने छी। हमरो सभ लोकनिक किछु कर्तव्य भार भाइत अछि एकर निर्वाह करब, से आशा अछि।

—वीरेन्द्र झा, पश्चिमेन्दा

दैनिक वयनाक पहिल अंक देखलौं। जौ ई 'मैथिली' पुष्टि बोनी में महत्व सात्विक पत्र विश्व रचना करता होक सामान्य ढंग सँ हमरो पुष्टि मौलिक अवसर देत।

हमर निवेदन जे एकरूपकाशन स्थायी ढंग सँ देल जाए। पुष्टि बोली सम्बन्धी की सब कालक आ भविष्य मे की सभ करबाक योजना बना रहल अछि से ईमान-दारी सँ छापि देल जाए। संगहि अंकक एक प्रति की चर्चित पुस्तक पत्र सँ पठा देल जाए। 'मिहिर' मे एक बेर की पुष्टि मौलिक प्रति किछु आत्मसम्मानक हस्त-क्षेपक प्रयोग करबे छलाह, एकर बदला हम 'मिहिर' के पढ़ देने छलौ।

—नवीन चौधरी, दरभंगा

मिथिला एक्सप्रेसक सामने धरना

हमरा सौभाग्य अथवा कलकत्ता प्रति-निधि कार्यकर्तासिद्धि ले गत २४ अक्टूबर केँ मिथिला संस्था से मैथिल युवक लोकनि हावड़ा टीशन पर अथवा दिनहुँ आ अकस्मात् रेल पटरी पर धरना देल मिथिला एक्सप्रेस केँ रुकवाय दिनहुँ धरि रोकलनहि रहलाह। बाद मे अधिकारीक आश्वासन भेटलाक बाद पटरी मुक्त भेल आ अध्यक्षता गाड़ी धीरेधीरे बिहार दिस प्रस्थान कैलक। युवक लोकनिक मांग छलनि जे हावड़ा बिहारक लेल पाँच टू गोट गाड़ी देबाक चाही जे बिहारी होइत छैक ते गाड़ी बढ़ाओल जाय। पूर्व रेलवेक डिवीजन महोदय अपना आश्वासन द्वारा कहला जे छठि पावनसँ हावड़ा मरौनीक दरभंगा तक गाड़ी देबाक घोषणा तकर करते छ पूजाक छथि। ओतए त उचित छलैक जे गाड़ी समस्तीपुर तक चाहत सब रोके चाहल, परन्तु'''

मिथिला आ जर्जर बिहार एक्सप्रेस—एहन दु गोट गाड़ी हावड़ा सँ चलैत अछि समस्तीपुर जाइत छल आ आब गोरखपुर तक जाइत। गोरखपुर जाय लेल एक्सप्रेस अवकाश रहैत के भीड़ बढ़ि गेलैक आ तीन दिन पूर्वोत्तर बोगी प्रदेश सँ मुजफ्फरपुर आ समस्तीपुर मे यदि प्रयोजन अवश्य न गेलैक। एक त गेल गाड़ी सँ जबहि छह सात बोगी टिकट वाला त मुश्किल सँ फिर-भीड़ वरिष्ठता मालूम होइत छैक दु दु-तीन-तीन दिन तक प्लेटफार्म पर बैसल रहैत छथि - मुजफ्फरपुर। आखिर पेन्टरी मे बाद केवल सँ जाइत रेल केँ से किराया होइत छैक तकर अनुमान त मुजफ्फरपुर क सकैत।

अपना बीत वर्ष पहिने सँ एहन टू गोट गाड़ी देल जाइत अपन उत्तर बिहार नेपाल सभ क्षेत्रक प्रवेश एक देव आशा लोक केँ निर्भर काल करैत छैक। दरिभंगा दैनिकक भेलैहो तब नहि छैक। ओतए लोक अपना तरह बीत वर्ष से भरि बढ़ल तकर अनुमान महजे बाहर आ सकैत। हैं जाला त है ओहिपर में गोरखपुर तक सँ बाहर भेले बाहर त लाइ रेल आन बाम त आन ए गोट गाड़ी देल बाहर आ है एक गाड़ी समस्तीपुर तक रहैत। दरिभंगा तक गाड़ी बाहर भेल ओतय तक बाहर। सबसँ अधिक सँ जल्दी जे की समस्या? केदार बाबू गोरखपुर देत सँ गाड़ी देवघर देत की धरि? मिथिलांचलक लोक मुहल बाद से सीमित होय होएतहुँ अवसर के बहुत दरिभंगाक गाड़ी बाहर देवो यात्रा-सुविधा मे बढ़ल छैक। यदि मिथिला एक नहि भरोसे देर रेल मंत्रालय के लिखल गेल अछि, सहज समस्या मकरार। [illegible] [illegible] [illegible] नहि आइ जे [illegible] अभाव भविष्यता [illegible] — स्मारक देल छलैक। कहिया सरकार त गोट भारत लौटले आयल। ई भाव-पात्रा देश बोलबा आन्दोलनक। विचार पुष्टि कैसे स्थायी समाधानक अपेक्षा नहि सहज भा सकैछ। आशा अछि जे पूजाक अवसर दिन देल देवत रहत। दैनिक वयनाक शुभ कामना।

दैनिक वयना मातृभूमि आन्दोलनाात्मक कार्यक्रम मे कहि सँ मैथिली मे मिथिला केँ नव स्फूर्ति एक पुनरागम व्यक्त ने संवैधानिक अधिकार प्राप्त करैत देश हमर हार्दिक कामना अछि। एक पत्रिकाक पृष्ठ पर कोनो आवश्यक सीमा कतेक अछि। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कारण एकरा सँ बढ़ल पुष्टक अनिवार्य आवश्यक। दैनिक वयना आपन सेना मन्द स्वर से कुलक-गिरगिट, कुलक-विलक, ओत-ग्रामी-नाना मे कुलनी देल पुनश्च मैथिल जनमानस के उद्देलित करत छथि देव हमर आह्वान अछि। हमरा मे सहयोग बहुत से देव।

—नेपथ्याथ मिश्र, कलकत्ता

☐ प्रिय सम्पादकक अनुराग !
जय मैथिली !

पुष्पक भा सहयोगक आश्वासन देल आपनारे छी। एक बेर तेर कहि दी जे 'दैनिक वयना' आन्दोलनक पत्र थिक, केवलक नहि। एकर उद्देश्य आन्दोलनाक चेतना जगाएल केवल चित्र—रेखा चोख अनुमोदन नहि। पत्र अहाँ हाथि देखल जाय। जँ यदि मे कोनो कमि बुझला पाव सँ निःसंकोच लिखी, ताहु सहज रचना पठाबी—अहाँ लोकनि तकर अपेक्षा नहि करब—अहाँ लोकनि रहब। पत्रिका अपन उद्देश्य मे सफलीभूत होएत करत कि ओ हर प्रयेक नाम-गाम मे होइत—ई बन-बा। आब पहुँचि सकए। एहि कार्य मे अपने लोकनिक सहयोगक अपेक्षा अछि। एहि अपन दौड़-वाहि विचारक संग—

—संपादक

यदि छपैछे ते उत्पात कौर, तब से अपन पाठ शार्ज्जलाल क्षे पत्रिकाक। देत एक बेर एकरा लोकनि के बेटी विवाह नहि रहैत छैक। भात तहाँ पोड़ पर भडुआ भारत देखल रहैत छैक। माहुआ पाति नीति शुभल भरल। गाड़ल मे ठोकल बुद्धि बहल। विवाहकारी होइ छल, मधिकावासी। पालन पर भाड़ा बैसल रहल रहैत नहि छैक। बेटनो पूजकी महल तेरा बेटनो अंकन मे तेत से बेट दै क बात मे ऐह विहार नहि। पूजक भेल बाब मे मधुविका देखैक। फलतः कहिन नमितमक सम्बन्धी लाल पालक दोष नहि रहैत छैक आ हैं एहन लोकनिक देहपर कहियो माइल नहि होइत छैक।

यदि चंचा मे बेटी लोक लोकपुरी देल क भार। मिथिलांचलक मुंगेर, मुजफ्फर-पुर समस्तीपुर मधुपुर अन भइ। मधुबनी दरिभंगा आदि क्षेत्र नवद्रुत संख्या विवाह मे बेटी छैक देखा मे बढ़ गोड़। है मे कुछ चंचा मे विवाह मे दो एकक-आब आ आर्थिक स्थिति बनावे छैक। एकर लेल अपन दोड़ बहार अधिकाक विकसत छैक लोकनिक पति गोड़ छैक आ अपन पति विवाह छैक।

—सुजाता सरी

[illegible] [illegible] [illegible]

देशभरक बैहनीहि बेटी विवाहक अनुभवे छैक। बड़ा-बाजार अंचल मे एक देखल हैन्किन आमदनी ५० सँ १५० तक होइत छैक बाइ मे तीन स चारि व्यापारी तक रहैत अइ' यदि ने दायित्व राखा नहि—न्यायी मालक बकसी स्वीत छैक। आइ-गल सँ दिन ते ५-१० टाका पुलिस पुलिस के देबए पड़ैत छैक। पुलिसक मारि आ पूजाना अलकरे से छिड़ि बाइत छैक।

बाल गीत

हुक्का-लोली

हुक्कालोली खेले छी हम
मच्छर के भगाबै छी हम
छहाकार मनाबै छी हम
मैथिल-पुत्र कहाबै छी हम ॥

महामी के ललकारे छी हम
कुराचार के मारे छी हम
धन-धान्य-लक्ष्मी पर कोसी
निर्धनता भेजावे छी हम ॥

देश-गाम के बेलबे छी हम
रंग-रंग के पाबै छी हम
घाट-बाट मे दीप बारि केँ
घर-घर ज्योति जगावै छी हम ॥

पाहिल, मधिजन हो या हरिजन
सब सँ हाथ मिलावै छी हम
हुक्कालोली खेल सबे छी
नव प्रकाश पसारे छी हम ॥

—सूर्य नारायण पंडित

कह लोचन कविराय

चमचा युग केँ काल चित करैत देश-पुराण
बकरा चमचा छइ जतेक से सबतेक महान
से सबतेक महान राजनेता युग नेता
क्रान्तिशील कवि, कथाकार, शिल्पी, अभिनेता
कह लोचन कविराय करब सब लेख चमचा
भारत माय विधाता जय-जय-जय है चमचा

आवर्तन प्रकाशन, ३३/५, डा० केदार बनर्जी रोड, कलकत्ता-७०००२६ क मैक श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा नार्थानियन आर्ट प्रिंटर्स, ३९-बी, वृन्दावन बोसाक स्ट्रीट, कलकत्ता-५ में मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—१ अंक—२ दिसम्बर, १९८९ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

६ दिसम्बर

वर्ष मे तीन सय पैंसठि दिन होइत अछि। केओ-केओ कहू केर क कय अतीत अछि आ कय आबत अछि। दोसर ताहि नही त बीति जाइत अछि। कालक्रमे लोक ओकरा बिसरि जाइत अछि। फेर दोसर वर्ष अबैत छैक आ ओहिना बीति जाइत छैक। ई नियम आदि कालहि सँ चलैत आबि रहल अछि आ आबहि [illegible] रहत चलैत रहत।

[illegible] कोनो विशेष [illegible] होइत छैक। [illegible] निष्फल [illegible] होइत अछि जे दिन मे कोनो व्यक्ति, समाज वा जातिक मानस पटल पर हमरो अमिट छाप छोड़ि जाइत अछि। ई दिन जखन अबैत अछि त अपना संग कोनो विशेष घटनाक कथा-गाथा केँ मोने अबैत अछि आ ओकर मानस पटल परक चित्रहरा आब स्मृति केँ पुन: नव क जाइत अछि। ६ दिसम्बर मैथिल जातिक लेल एहने एकटा दिन थिक, गौरवोज्ज्वल दिन। वर्ष भरी मे आजादक तीन सय पचासेकटा [illegible] बीच एहने एक दुर्लभ मणिदीप-दिवोदीप।

ई अद्भुत दिन थिक जहिया सामाजिक ओ सम्पादकीय मैथिल जनता मे [illegible] छल। [illegible] संविधान सम्मत 'अधिकार' प्राप्ति संघर्ष छेड़ल। कय गेल छल मायक दूधक पवित्र नाम मातृभाषाक न्यायोचित सम्मान-अधिकार प्राप्ति संघर्ष [illegible]। ई उपद्रव दिन थिक जहिया मैथिल्य मिथिलाक गगन गुंजायमान भेल छल, चहुँ एकजनित भेल छल। ई उद्दाम दिन थिक जहिया गायक-बोलावारी [illegible] निर्मम सरकारक बीरखा तानि देल छलैक, [illegible] गेल छलैक। सरकारी कर्मचारी पुलिस एल [illegible] मे डटल छल। लाठी गोलीक बल पर बताव आ चलैत सरकार केँ फेर लाठी-गोलीक सहारा लेमय पड़ल छलैक। परन्तु तैयो सिद्ध साधक सन निडर मैथिल सेनानी एक कदम पाछाँ पर नहि गेल छल। ओकरा पर लाठीक प्रहार होइत रहलैक, ओकर रक्तक धार बहैत रहलैक किन्तु पएर पाछू नहि भेलैक, मुँह सँ आह नहि बहरेलैक। [illegible] त उपद्रव [illegible] माय—हिन्दू मुस्लिम सीख सभ जन। हम सभ छी मिथिला सन्तान॥ हमरा चाही मायक बोल। मानव सोलो बुझ ठोल॥

आ तेँ ६ दिसम्बर [illegible] तिथि सँ परोक्ष अछि, महत्वपूर्ण अछि, अविस्मरणीय अछि। ई उपद्रव दिन थिक जे मैथिली आन्दोलन केँ नव मोड़ देलक, सही रूप देलक आ मैथिल जाति केँ बहिर्वर्ति केँ मुक्ति दिआओलक जे ओ अपन अधिकार प्राप्ति लेल संघर्ष नहि क सकैत अछि, 'मोछिया नहि' सेहो कहैत अछि। आ तेँ मिथिला-मैथिलीक इतिहास मे ई दिन अमर रहत। अमर रहत [illegible] मैथिली मुक्ति मोर्चा। अमर रहत [illegible] मिथिला मातृभूमि मैथिली भाषी छात्र संघ। अमर रहताह मैथिली पुत्र [illegible], सुधीर, विनय [illegible] तथा अन्यान्य सनातन मैथिली सेनानी लोकनि।

६ दिसम्बर अमर रहत। ई प्रतिवर्ष आबैत आ आबहि मैथिली केँ समस्त न्यायो-चित अधिकार नहि भेटि जाइत छैक-जाइ धरि से आन्दोलन सेहो छल—मैथिल जाति केँ अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक उद्धारक लेल, अपन प्राणक दूधक लाज राखबाक लेल उत्प्रेरित रहत। ई प्रतिवर्ष अबैत आ मैथिल जाति केँ अपन [illegible] सोचबाक [illegible] उत्साहित करैत रहत। ई प्रति वर्ष आबैत आ मैथिल जाति केँ ओकर [illegible] कथा-गाथा कहि-कहि प्रोत्साहित करैत रहत, कर्त्तव्यक स्मरण करबैत रहत। ई प्रतिवर्ष आबैत आ मिथिलाक [illegible] स्मरण दिलबैत रहत, ओकरा प्रति पूजा करैत रहत आ मिथिला केँ चाहि [illegible] कर्त्तव्य सँ पूरा करबाक पाठ पढ़बैत रहत।

६ दिसम्बर मिथिलाक लेल ओहिना [illegible] जेना बंगालक लेल २१ फरवरी। फर्क [illegible] अबस्से छैक जे २१ फरवरीक इतिहास बंगलाक भाषा-भाषा केँ आमत छैक—[illegible] छैक आ तेँ कथा-कथाक कंठ सँ [illegible] अछि—[illegible]

पहुँचे पेटमारी, आदि/भुक्ति पाटी ? ठीके बंगाली जाति एकटा नहि बिसरि सकैत अछि। २१ फरवरीक परिणति थिक बंगला देश। ६ दिसम्बरक परिणति [illegible] नहि [illegible] अछि। [illegible] २१ फरवरीक नहि त [illegible] अछि। [illegible] मे ६ दिसम्बरक कोन छैक ? ई दिन मैथिलीक [illegible] परिचायक थिक।

६ दिसम्बर १९८० क मैथिली आन्दोलनक पर्व पूरा भ रहल छैक। [illegible] हमरा लोकनि एहि अवसर पर कोनो समय [illegible] नहि क रहल छी [illegible] [illegible] केँ दोहरबैत छी जे जाधरि मैथिली केँ अपन समस्त न्यायो-चित अधिकार-सम्मान नहि भेटि जाइत छैक, हमर लोकनिक संघर्ष जे ६ दिसम्बर १९८० केँ आरम्भ भेल छल, चलैत रहत। 'देसिल बयना' एहि मुक्ति चेतनाक संवाहक बनत। एहि लेल ओ मैथिलक जातीय चेतना केँ जगाओत, जातीय एकता केँ सशक्त करत आ संघर्ष चेतनाक निर्माण करत। मिथिलाक सर्वांगीण विकासक प्रतीक [illegible] विकास मिथिलाक भविष्य मे [illegible] केँ उजागर करत, ओकरो साकार करबाक पथ प्रशस्त करत। एहि पुनीत कार्य मे हमरा लोकनि समस्त मैथिल—पाठक लोकनिक सहयोगक अपेक्षा करैत छी।

जय मैथिली

हाविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
काहि-कारि मुक्ति करब हम
मिथिलाक मैथिलक प्रधान

मैथिली आन्दोलन

एकांगी इतिहासक कुफल

अहिना कहियो आ कतहु कहियो मैथिली आन्दोलनक चर्च चलय त कैओ केओ चाहिर्दे देखाइ-बाइ। मैथिलो सँ कतहु आन्दोलन भेलैक ? ई सभ लोक एकाएक [illegible] बाजत बाहर जे यदि मे एतेहक केना कुनु धु बाहरे मे ठीक, विचार करबाक कुनु कारने मे होइक। विद्यान-बुद्धि-मान लोकनि अपन [illegible] विद्यान किछ करबा लेल मिथिलाक भौगोलिक-ऐतिहा-सिक स्थिति पर व्याख्यान देताह, मुदा ओहि विषयक कारणो वा नहि। [illegible] सत्य पुछल जाय त आइधरि केओ महानु-भाव बाहिरक नीक कहो विचार नहि क [illegible] अपना विचार करबाक [illegible] नहि बुझलनि। तेँ आइ धरि [illegible] समस्या छैक जे [illegible] नहि क यदि विषय पर नीक कहो विचारल जाय। विभिन्न दृष्टिसँ विभिन्न कोन सँ विचारल जाय।

हमरा कहबाक ई तथ्य विलकुल निर्वा-धार अछि जे मैथिल जाति आलसी होइत, [illegible] होइत आ तेँ ओ मेहनति नहि क सकैछ, आन्दोलन नहि क सकैछ। ई तथ्य [illegible] जे आइधरि जीवन-यापनक [illegible] [illegible] छैक आ ओकरे क्रम मे उप-[illegible] नहि छैक [illegible] ओकर सबहि परिश्रम नहि करैछ। [illegible] मिथिला-देशक आदि लोक मे [illegible] छैक, प्राकृ-तिक सम्पदा लेल जेना उपलब्ध छलैक जे निश्चित लोक केँ थोड़ मेहनति केलहि करत सहजता सँ जीवन निर्वाह भ जाइत छलैक। पूर्व मे लोकक सम्पदाक संगहि [illegible] सेहो सीमित छलैक आ संचयक प्रवृत्ति आइ कालिकल सन नहि छलैक।

तेँ सं लोक कोइ [illegible] छल त ओकरा अहुरी वा कोहि विशुद्ध नहि कहल जा सकैछ। [illegible] मे जीवन यापन लोक कै दु कोस तीन कोस दूर सँ [illegible] नहि छेकते परिश्रम सेहो देखैत करैछ। किन्तु ओकरो सँ [illegible] उपलब्ध भ जाइ त [illegible] हेतु परिश्रम नहि केलहि कहल जा सँ कहो कहाबत जे मुर्खताक हैतैक।

ओ आइधरि [illegible] जे विचार कहल जाय त मैथिल [illegible] अपन जाति सँ कम परिश्रम नहि करैछ। [illegible] ओकर आर्थिक स्थिति [illegible] छैक त ताइ लेल [illegible] ओकरा दोषी नहि कहल जा सकैछ। तीन-तीन तेर ओकर नाम दोनि [illegible] भेलैक। फेर [illegible] त बहुत तेही मे आरि रहल छैक। ई त निश्चित [illegible] उपजाबय छूटे-[illegible] चाह पड़ छैक जे ओकर रागता प्राकृतिक [illegible] आइ मिथिलाक [illegible] भेल छैक। कलकत्ता, पटना, दिल्ली, पंजाब—[illegible] देखू, मिथिलाक मजदूर दिन-राति अपन [illegible] रहल-अछि। [illegible], टेका, [illegible], [illegible], रेल, ट्राम, [illegible] आ अन्यान्य कारखाना मैथिल मजदू-रक [illegible] छैक। पाजन केँ [illegible] आ उपार्जन करैछ ताकर [illegible] मे खर्च भ जाइ छैक। जँ ओकरा अपने देश-कोस मे [illegible] सुविधा रहितैक त निश्चिते ओकर आर्थिक स्थिति आइ बीहर [illegible] रहितैक।

[illegible] होवय आरोपक [illegible] जे मैथिल जाति [illegible] नहि होइछ। ओ [illegible] जाति नहि अछि सेहो निराधार

(शेषांश पृष्ठ ७ पर)

कलकत्ताक आकाशसँ तर्फ मोटिया

[illegible]

मैथिली आन्दोलन

६ दिसम्बर, १९९० : एकटा अमिट संस्मरण

ई कहब नहि पड़त जे कोनो आन्दोलन पुरुषत्व मे बुद्धिजीवी वर्ग नेतृत्व करैत छेथ। कोनो आधुनिक समस्या छैक ई वर्ग सकारात्मक कहुना पड़ बाहर अछि। ई मानक पड़त जे मिथिला मे सैंहो बना देखैत अछि। समय-समय पर सोचबो, सभा मंच आ पत्रिकाक माध्यम सँ भाषाक प्रश्न बीच मे ठैक अछि। मुदा यदि रुप मे नीतिक आर्थिक मजबूत रहलैक। तथा कथित मैथिली सेवी मैथिली मिथिलाके मातृ मे रक्षा आन प्रश्न, सोचब काका मे बाबा पड़त। कोनो ने-कोनो तरहें बाजब स्थान समाज मे कता सेवाक छेल लोक के लोक रहल। यदि ई मैथिली मिथिलाक बाज पछुआइत गेलैक। आ निर्णायक पताका फहराइत रहलैक। सभक कारणे उदाहरण अछि वर्तमान बिहार सरकार आ ओकर मिथिलाक प्रति निन्दा सकाल, मुदा मैथिल बढ़ि सप्पुना छल सँ कहिया तक टकरात रहत !""" आ टकरा कारण देखलेक ६ दिसम्बर, १९९० क दिन।

६ दिसम्बर, १९९० क पहिने तक लोकक भाषा रहैक जे मैथिल आन्दोलन नहि बढ़ सकैत अछि, अर्थात् पूरा नहि बढ़ि सकैत अछि। मैथिल नमिनल सोचत अछि, तैं ओकरा कोना ना कार्यक्रमो अभिव्यक्ति विलासात आ पूरे तक रहैत छल, ओकर शाहक आ वेबस तरह बुझबाक आ आदि करैत तक रहैत छैक, ओकर बुद्धिवादी मण्डली आ परिषद छाप पड़ तक रहैत छैक। मुदा, ६ दिसम्बर, १९९० बढ़ि कारवाइ निन्दा प्रमाणित कर देलक। तथा कथित मैथिली मिथिला सेवी कें दृष्टि आदुर कारड़ रहलनि। मैथिली कें गमा कड़ सम्पादक निरंजक माय जननि छत्तेक। गोष्ठी आ विवश छलाकड़ मंच पर सुशोभित होयड़ सकल होय देखात पर आबि गेलैक' आ सभहे सेवी 'लोक-प्रतिनिधि' तथा मिथिलाक्ष्यक मुहि गेलैक, ओकर कुर्सी डोलड़ लगलेक।

प्रमुख नामी मैदानर्थ स्वरूप एलेक। मिथिला नरेश के यज्ञक बुद्धिजीवी मैथिलक बनाए लागि गेलैक, मैथिलक नीड़ बाड़ी मैदान सँ कँकड़ भार मर्यादा भरि देलैक गेलेक। बढ़ैत मिथिला कड़ देश मे आतंकाल कोनो प्रश्ने नहि उठैत छलैक। कारण यदि ई पूर्व कथा सरकारक प्रमाण पटना मे लेल धकड़ आर, अवहेलं बाबि मे पराभाक सुद्ध आ टाड़ घाटीतल सेहो मैथिलीक मपूत कहाड़ मे मानक मनुष्यक नहि कहबै रहपि। मुदा बढ़ि दरहान मे दुनका लोकनि कें कोन मत, बैहेल नाथा पक्ष नैतिकताक नहि भारि अवसर करबक आ बाबा छेथ। तकर ध्यान नहि रहतनि। हजार बढ़ि मे बुझनी तक मैथिलक अर्थ सो लोकनि विद्यु छुटि गरि तथा कथित कथा लोक तक सीमित राजनाक पेशा मे सम्मिलुत, बढ़ि सबल सफलता निरुपाय ६ दिसम्बर, १९९० क दिन कड़ देलक। बनारसी मैथिल-पुत्र बल मोहिक रंग बाबा कड़ देलक। बी आनो आवहल तान देखा काल रहल त बनाबइ बढ़ैत, आ बनारसि दुनकर मनिषा। ई बढ़ि बनबा छेथ— से सगर गांव मे पुरकर पूरब आर्याहत बनकत सबके नहि मरैत बाकी। मुदा सी सरल मनक तादि मे संदेह नहि।

ओहि दिन पटोराहल सतान सब के दबाड़-पीटैल बबरति छलैक। ओकर विद्यु लोक निम्हर होयड़ देख देर मे पविताबी मे आयू छल। सम्हर ओकर छेड़ी पुबरि रहल छलैक, ओकरा बी सब सकारात्मक पक्ष मे अलग-अलग नाम छलड़ लेल पेहल छल। यदि ई बैसी सिनेमाया बाद की बड़ सबैल छैक? यदि ई बैसी पुस्ता बाप की बड़ सबैल छेल जे पुस्ता आंदोलनकारी कदीम बारि सँ ओकराक मेल छल, आ ओकर विद्यु लोक तानाशाहीक ओरह निन्दा-परिचय करता से, दुनकर शासन करबा के साहस करलइ !""" वाह रे विवेक।

ओ दोषक छे से ओवे दोषल छेथ। मद्रुत के विनाशक गोबा सोच हे मेरहेल। ओकिन छल-बल पत रेखाक समाचार भरलैक। भकत्वा महबीयो यहो बल छेक— क्षुमिपे मामो, कि युमिते माम्रो।"" बिहार हाल्याकर बात—ओ सदो कायु हाल उदंड बोलिया नहि पड़, सहलनि—हमहो दुनि सेबो छड़ बाहुना मानो छलैत। हमरा सामक बेला बो बात मालक मुक्तिक देखिया दौकि।""""मुदा, ई कि लोक यदि सँ इलोलाइ न बाबद? ई कि दस भाषा संवैधानिक अधिकार छोड़ि देथ? की मर्यादा नादि रेख बाढ़ि सँ हजार सनक धरीर भरल अछि। हमरा धरीर पर मात्र ओकरे अधिकार छैक सरकार पूरा नीति हमरा गणना वीरान संवलित मेल अछि। ६ दिसम्बर, १९९० पत्र भक्त सम्पूर्ण छैक। ओ दिन मैथिल संगठनक श्रीगठक दहलाकेश छैक।

मात्र के तात्र पढ़ना मे लाल कर्णोल? सर्वोदक शेखर जी, सर्वोदी गौरम साह, प्रबासी माइ गोकुल नाथ जी, पूर्णेन्दु जी एवं साह राममोहन जी सबस बर्बरक नीक सेवा निमाहैत पहलाइ। दुनिया की भा विरोधि जी? ओ पंडकात भाँ आ जी गीतामयर छाबक पूर्ण मांविद छलड़ कि छेतौं मे विद्यु गढि, आ कहलन उ भले स्मरणइ। बकलिय प्रमालिक सम्मे बच-पलिकाक लिखलाल कर बीर आ रोकत दित देव पर आन्तरिक उसक। देत छड़ कड़ देवाक सरकी। नाति-बानिक कतालेक पूरा स्नातकोत्तर नौकरी भर पहल, ई पहू. मिठाया प्रांत मदर्लक्तकारी कर तादमलोड़ आर्थिक पहाए पड़ : मैथिली तीन कलोहक लगा, से पहू. मिथिलाक मुख्यमतक मात्र मैथिली, से पहू, अर्थात् सीता, कलक बा विकासशील मिथिला पढ़ !""दाहल दाम सो !"" साब मांग बिहार सरकार सोतिया, आ साब मात्र सरकारी सुद्दुर हाल देल मे सदानार ई ओदि पओहि कड़ दाहि देवाक सदावाह/ नेतेको प्रधान मे नवरात्रा हलाके। सलनाव दमारे"" ई मानक लेहि पड़ समाज ई मान कहर !""""उकर मरितपवरील मेह ६ दिसम्बर, १९९० पढ़ए मुख्य नारा छलैक :—

हिन्दू-मुस्लिम सीख बसान,
हम सब छी मैथिल संतान।

आदि सरकारक सनातनक पहाड़ सोहि लोक निलक हाल कारल छलैत छैल, से सी दमियान मे ताक पर टाकि चालन करैत, से ओ मोजी हेला दुधि निषेध सभा, इकनामत पद सबका सी पर निर्मम प्रहार करैत, ओकरा पर कराला कबलाइ कोनो तरहक औचित्य नहि नबैत अछि। ओ तैखा लोकनि सुरपूर्ण सरकारक समय भरना कें मैथिलीमाय सांवल करैत छलाइ, से प्रतिनिधि लोकनि आश्वासन देल छलाड़ से तरा हे करैत देखी सोड़ मांग कें पूरा करता करताक, दुनका लोकनिक भविष्य कोन विवरा? सरकार सातुपूर्णिक संदमे कें सहेत दुक्कान बैड़ आ दक सँ सम्मानित होयबाक निराकार घोषणा कड़ सकैत अछि बाढ़ि हाजल रूप माखा पाहुँचा मे विश्वास छैक, से तल नैतिकोव बीच विरोधी बाड़ि, मिथिला मपूत के बहीरक बाब्दुरी? आ से नहि बाब्दुरी मे ६ दिसम्बर, १९९० क दिन हमरा बालमित्र अमिट रेषा हुटे हाल मे हारा पड़ाकें सैव ओविस करैत मानक मुद्रि लिख हंदर्यक कुलतम्म करकड़।

— सुशील

शोणित दे शोणित मैथिलार्थं

मिथिला गौरव डा० लक्ष्मण झा मिथिला-मैथिलीक उद्धारक हेतु आन्दोलनक पुरुषे रखि आ कान्तिकारी बीर कवि राधाकृष्णनक भाषा आलिक सिगनी उच्चिय लगाल। मिथिलांचल मे प्रकाशित सदरल मैथिलक बीच सकलनालक सिंहनाद सुनाइ पड़लैक—शोणित दे शोणित मैथिलार्थं, प्रार्थ एकमात्र अछि साहस हमर। किन्तु राम-राम मुद्दत समापक्रम मैथिल मेधु भेल मन पर। शोणित त दूर रहओ, पाल पसैन्त देबाक कृपा नहि केलनि।

बावन छबर अछि। सारित बाब-बीतक परिवार नहि लिप कोनो बाड़-निरीक्षक पतझड़ नहि लिप। ओ तँ भदन्त बोलतो छोड़ि, नैतिक पुरुष सँ निस्पृह आड बाह, गगन-गाएन विलासी लिप ते अनुकूल बादरल पनिते पावनि उठैत अछि। यदि केल समर्पित मासता सकाल निवासा, केतेँ, बाइत बा संयमक लेग योग ने उत्सव सहेत बाबी अमीत बोलबाहरि कलाइ बावरल। किन्तु पहल त विद्यापति पर्वक मंच सँ उत्सव सरग उठैत अछि। विद्यापतिक पदावलीक साथ आसिया नामक बाजार, सोहद सहारक सबसा आ सवरक बावरी राजनैतिक मेघ-मनोज (बर्नी नहि) सँ उत्सव सर्वेत उठैत अछि। दुकानी मे मतरा स्वार्थ छोड़ल, पुड़ आ भावक कविता कविक विजलीक मे उठैत अछि—कान्तिक आह्वान"""

डा० लक्ष्मण झा से सारि पहल, सम्राजकें के सुवरेल प्रवासक छोड़ि देल, हानोतर लाल दृष्टि सँ बिहार देलन आ विद्यापति-पर्वक मंच सँ मैथिलक मर्मक सवाल देलक।

आब ई सबह स मेल बाकि ते सैयमिक दूत बाँ अछि—अटलित मेलेल आ बीतलाल। दुहुक अलग-अलग ठ पोरा छेक। मैथिली के बढ़ने कोटि मुक्तबका सोदामर बबाँ सचित्र मधुर पहुँचाक गाम मे सकलनाम करौने रहैत अछि त सोंकर लिख सन्तित बोल दिन-राति रचनात्मक कार्य मे लगाल। ओ साहित्य के साथ बदल बात त आवश्यक मैथलीक प्रकाशित साहित्य सँ मधुर सेबी आप्रकाशित सम्हारल दुनिया मे पहल अछि। ओ युवाजन बहरल बात द मिथिलो ई अप्रकाशित साहित्य प्रकाशित साहित्य सँ सेबी सिवसल आ सादीप अछि। मलम हजर सलिला सम स्वाभिमानी आ माता सेवी देवाक करने सदा बहु देना मे रहल अछि, सर्वनिदान रहलाइ अछि। ई मुनिलाइ तथा कथित मैथिलीक कर्मचार लोकनि दुख्नो पावने छथि। ओ सामान्य बर्न समाज पुरा-पुरिबा इच्छिया सका स्वार्थ सिद्ध क रहल अछि। आ बढ़ि पूरा विपरीत विद्युत बीच आयु पाबि विद्यार्थी पढ़ लिप बानि हुतैत प्राप्ति न रोक लिप पुटिते व्यक्ति सँ नीरक पार बढ़ा ओर अनि।

कब-कब मनमि हमरो सर्वपरि पुरुषा आ मनपा सँ की देलैक? बाबरि पुछ

शेषांश पृष्ठ ६ पर

कथा

ठकैती

आइ दू टा घटना घटलै।

मैथिल नोकर चाकर-दारि- तीमन-तरकारी कीन' बजार गेल रहए। ओकरा चुप्पा मिजाज, चौरस्ता पर सबटा छौंकि लेलकै आ तकर बादे पंडाक काव, मले बजारक बीचे कहुना छोड़ा नोकरि मे नहाय गेले आ घुरले गेले।

× × ×

घटना ढाइ-बेढ़ाल छै। चोरी, डकैती, छिनरी, हत्या, इत्यादि अपराधिक समाचार आब सबको कोनो तरहक उत्तेजना, कि आश्चर्य, कि उदासता नै होइ छै। बेड़ सिनुर दिन पहिले बात थिकै साँझ मे दू गाड़ी मे पाँच ठा डाकू, मर्दी, कोना छौंकि लिखे। मैदा चौकक दाम बढ़ने लोक कम सँ-कम समान कीन' अबैत छलैक बहुत कम कम। सुनि-सुनि मिल-मिल क' रहि जाइत आ लोक मे घर सँ बहराएब बन्द भेने जाइत। कोना बढ़ल जा सकै छै जे उपद्रवी त सहर यत्र बड़ सहिलोल छै। पुरा लोक घर' पर लहुके सुर-ताल तोड़-ताड़ देवाक मेरी भिन्ता देने ने।

कौनन—लेखा कुकी चलैत रहै छै।

मैया सह, साँझ सँ कुकी कहराय। ई बाजल रहा आदी ये। बाबा हन्ता सैदैह ते बाप मारी कैसा बढ़ि गेलाह स्वाभाविक छ'—ताड़ पर सँ रुक त दाइ छोरि बड़ दोहर लहेलहि। अर्थात् दही देखमाक रहै छ' जे लाल ओकरो हो बाद सँ कम-सँ-कम देखब लगो, कम-सँ-कम बोतल देब' पड़ै, इसकीमैड देब' पड़ै, अन्य कुरिता देब' पड़ै। पुरा हकरो आवश्यकता कहाँ रहि गेलै आचमन मे। शिखर बाँध सिन्दवाद। धातुक सामानक बढ़ले सम्भावना सब सँ होइता पहले त सुनीमौ-कथा त बेड़ गढ़ाल खाला मे बोर·····ये आगल रही गाँव स बाँक दिखाव' मे। उसनें भी बहुँचल।

—अरविन्द बाबू!

—की छी?

तुही मुकीमहि दुवे सिरे, अइ मैया के ओकन्न दुर्घटनाक ले मेरी महावगुरों मा व्यापारक हुमारा छ' सेक्युलेरक स्कीम पर उतैत-दुरैत इथिएको ओझ सब।

—दुकोअन त सब चिनु ही वे केलकै।

—की?

छलैत सिनु चुप, मे ने बाजल, जेना बेटी अमाक्ष स गेला पर अकाला-पतास ओढ़ सब दहीन पर आब' लगो छै।

—हमरा डीनि केलकै।

—की डीनि केलकै?

अंकामवास एक बात नोच पर आबि गेल छल। पुछी कहाँ ठके छाती पे ठाल।

ओकरा दिस ध्यान गेल। त्रिलोचन हम—तुलोचनक छोट भाइ। पहिला मात्र एक लम्बा गद्दुरा एक पीमा भारि देने रहय हमरा दिस। एक बनसा लोगि क चौकीक धंस कुलके रही। आश्चर्य लगैए जे ओझ बौद्धा पर ध्यान कोन मिन्ह दे छै?··· तुलोचन-त्रिलोचन इमारीतलाक महतो भइ। कोना है ठुनू त बनवा मैनक नोकर भा करसाला मे ठीका-माल भाइ पुरा हैसो महती एत नानि हनवाक काम करैत। महतो, नानि अमनिहारक पानि है बड' कम लेलक दू टा तीनक एक मात्र नानि, तुरन्त नाहि मे ढ लेना लाल, तब आठ कोसा लाल, कुहरा आठ आला ह ठ'क एक कोसा साल आ कामलो देर धारह मारल एक हाकरी नानि कला क कोसा कालिक अकाल छ' चरा'।

—तौं कैसा बने बड़'?

त्रिलोचनक बहुटी दोसर दिसर मे रहै छै, अर्थात् दू नदी दिन त एत बनी गाति करि। सबनर इवारह मानि रहल छै।

—ओर मे नबौते छल पेका।

महकवी कोदिया मेला। प्रसन्न मनसा होब' लागल, सुरभिता वातावरण मे ये स्वाभाविक छै के विवरता, उत्कंठा, आश्चर्य बढ़ाय होब' लागल।

—की भेलै?

—की छिनलकै?

—कत' छिनलकै?

—कते मारि रहै?

—केना?

सबटा कलवा बताबैत, महत्व कलवा दिखाइत भा रौ अंकावा समस्यामक मुद्रा धँ बैसल।

—हम बसि दिन सँ बहुत दुखीत।

—मालि-बिहारि मे ने हो बेड समन्न।

भानाइक बेला अरी खेतक बेत विलासे होमि' हल गेर तो। बम निकला है' के बा, आवयूक भाव ल विवाह के बड़' बक तरहि इतरि उपोग म पैठ सँ भरा कमीनाइ लोक होइत देरो कोइ गर त मानी अवकस बोइ गर व मूम बड़ाम बातमा व काइ छै लोरि बुकने जे हाबा बहुतो की दू ठलक अंगर्न ठने की देखिय होइ छन्ने की एसले-एसले पुदि गेलै एस बहुतक बात गहै की द्रवक दा बाजाल बेले मेरा-मेरी। लोरि दूनक राम बाहैं तीन कोमा व लिलै। राति मे दूनक विकेला यनहक बेसार गहै, सर्वव्यापि ह बाठ बाला मति हेर एवा बढ़ेवाक प्रयास गाह मेले भी हकबेस बाबक सबसो आहो मनिस उत्साहक बेक होयक निरा दैते पविला दोहरा गहै छे, का ओक हातयम मेत का रहलाह। सनी मे त बेक बोला छै।

—ओइ चौक म भाबू बंगला मिहारक सौगत छे। सौगा दर बेक-बोल्ट छे। सबसो तर्न गाइसक खेतकल मे सबका सावाहरा पुलिस चौकी पैरो छै अबर सबल सर्नेज्ञ विशिष्टाम संग। चौक पर बैठो

हमरा ते हुकरा काली चारी पड़ैते छै—समलि।

—पुलिसकी त बात हिस्सा न रे मत का छे। ओकरा कोन बाजै छै इसलोग बजाव?

शहरा मे घटना पर घटना कोन पड़ ब्सो छै, सिनुर दिन पहिने सबटा दुक गला मनी चौअलली ने देखले ते चौक पुलिस ओकरा दुख पर अलवि गेल बुलहर बेमिन हिस बा गहर 'बर' आलत बुलवाल देखो साधी बालते बबरा मैलक मुद्रा देखा लिख? दौआवयि रमी त कर कपीय! सोलत: करायिन पुलिस दिवसरिसा पकड़ि लेलकै मंतुल मिलाइले का लोक हुड़ेलो त महाराज सबका दर्शनार पर मद्दि मेलो कानूनर सा पुलिस लेलहि सहायक मर्द आ बेटी त हालाना शति मिले-अर्थक बेड। सानी के सानि मे आलताय क कानूनसलो ओकलो सले मे पता चुने मेलो। पेद मे सबका रहे, बात सावक भावुकताक दोषर नाम छै बीस तीन रोम।

—बोचा बला चुप त बताम साले रहै छै।

—केहारवा पर त सबको पकड़ल बा सबे छलै।

—दुलोचना के हृदय कर चाहे छलो···

बीचा पर दह के महबाद दह महो महबाद दह पर दुख ते महाइह दुख विहार सिन सबका लोह ठोकल से अभिकलाम नार बाँच हन' खालिनो दुक बाँच हन त लाठी होइ से दिन मे काइ त कम दू देर दुम काम होइ के भाव दुख ठनइक दू लाली सा·र। सिसरा, कार, तेसरो आ लोव। पुछ सबै-दिसल रौमी काहाँ धरवशहदो रहै, दुख जाप रहै छे। केहरावा पर सबके एकसक पा सबे छले। दुलोचन हड़ता ने कले देले।

—पूरा हाला बेटाइ क ओक सब रहैहि?—

—बोक सब दिन राति दिन काला बेटाइक मेल बा रहलक।

—सबकै सबान बाल के मोह छै,

—के सबाँत व दुलारी मोक बेवा म हूँ, जाले त बहान। काबल मासनि का पैर बोलाव रहल पाही अवकल सावक निन्ता बेला व बसरो सदेह ठनवाक बोहसी आवोंका त रहिते छे।

—बीचन अवसइ ते पहकर रहल है

—बोक कौना नौसर, कौना संसार सवावोस·····

—बाटा-बात पर सम-भाबी होब' लगो छै, ससह चवाल छो छै रोपी चल रही छै।

त्रिलोचन कालसहुँ'ह छवि, हवलका मेल को हातत दिस देखेत रहल, हम ओकरा दिस देखैत रहलिये। संभवत: ओ चाहै छल जे अरविन्द बाबू सिनु बहुत कथा आ भी सबटा बाइ व अइ स्थिति व उपाय हैत हमरा ते पुरा रहल इम ते भी भाबी सबका कौ रिवेरियल बंबाभाग, सुनिश्चरमंगल परोडेल, प्राफिट रेडियो,

लैंड अबैरी धरके मे मिकल मैथ साथ मे बीतसारि कर' लागल रहय।

—कत' छो दुलोचन?

सबटा सहगोसी हमर महान्हा करै छवि ओला बारत मे हमर बहाबाला ने हक छै। बहबारी आंतरिक समाना समाहाल मेक वा रहल छले केना सबटा लगे बी सचित मेले देश मे सत्ता पर, बाबार मे, सिनु दिन पहिने बिनु दाम नहीले, अधिक रेसल, कानक खूनल, पैदक ओसारहरिया। क हुल-चाइ देहो मिसार मेक बा रहल छलै बहल मे तखन बोलवो अवडहल सब खाँदी सकल, कबार साल मे, के खूलने तखन कथा कविले बहाल सबाल' हा, पुलिस त मोड़-गार कर' पर, सबके, बाइ सबदक बहलाक केल सबटा व सबा त रहिते दा छे, पुरा है कोलो सावाशि कार्यालय त मिन मे मे काव के विवातकि द, बाइ नित-नित बहल रहल कथा सबहक पत्रावत केल बाड़ सी दुलस बाड़। ते बात समसा केलाइ स्वास्थ्य सबै, सबलो मैनेजर बानिक गरबगाह आरम्भ क सबे छले इसर सिनु क्रांवइस मे पहल-नेला सबार बाताइ हो। सहयोगी भइ स्थिति के संग कॉं ठाचि। सबटे कहै छो कृपाण चाकर।

—मैट धर।

त्रिलोचन मार पिरापिरा मेल पेता सफर साधारण दल पारल फलहरीक समाल दौड। हम सेक्युलेरक के आँखि कर' छो। सबो काल त चालदुक छल।

—सबको।

अइ बात के बनो कहलो उत्सव हो सहाय मिलाइ आबरबक दास' बाताह कवक व्यवस्था मेहो देब' पड़ह। तब-भाव के नीच हालत मे छै। दुर बाप महह मेसी दोसिक, देखि लेबो।

× × ×

—बाइ दुरा सब मिथिक दुसल सहय।

—हमरा त दुरा मदैत स रहलक।

—गेदैह हमरो म रहलक। सुलोचना सब त बालि रहलाह।

—बराबर बदमाशी क रहलक, सबरो सहवार भइ।

—सही घाइसिक मैथि लैपक्ष सबरो बकसो बालो छवे मेह सिनि-कौरि केलकै।

—बड़' हमरा सबके नासक देखा रहलक। राम ने दुखामी ने देखे थी।

दहल त है ने दुलाहल।

हमर बीस हरिकार छल। दू बरस त त देखि रहल दिस बढ़िये बोलो ताहेल सहकारी ने केसे छल कम-स-कम बल गवरि सर ने बासल छल।

सबटा सब के बहीं ने निन्हें सिन्हें अरविन्द बाबू, है चकरायति सब बहीं ने दुखले रस-रा दुखार आइ हमरा।

—अरविन्द बाबू त बाके दुखरे पर विस्वास क ले छवि। सबटा सास समायल बलैताइ दुलिसी सबाल ने दुरा सब आवो-

आइ योजना ने क्यारा सुधिविर के जिज्ञासोक रहलाइ उत्तकमत सुचार बाद छै के साथे खसल भेटल रहती।

—हमरा सार बात छै। सुधिकाया चाइ हमरा त बाइ मार्ग आयल छक।

—देखिये?

—नै।

कोरा औ हमरी त मीनी खाय। ओकर यार आ सांच आयल रहै। सवेनैतिक विवाह छलै। तीन टी कोयेरा संवाचक, हमरा ने छन-बर्गे ने छल। पढ़लिये, साल ताल कोशिश कर। संभवतः बेटी ने सीतैत हौन्द मे केरा कर आइक कहलिये मय ठीक अवस्था व ऐहो सांकेतिक कोनार पराकि। दे बौ रमेरा एकसो बेरी मे आइ।

—बेड त ने बैठले।

—निश्चित कर त साइकिल-चाही बेचि क' कोरा पर बता देलकाह पता लगा लिक ओकर बाप आ माय चकि गेल हेते।

—तखन त पड़ता खर्' बेनाइ उचित ने हैत।

—औ सौभिक देखिजी के लिन देखार हमेशा कतऽ से तू-तीन ठीके छिक! पड़ी फान्सूर छलै की की तिवाड़ी की?

ई त बेहू ती ने नव मानने रहिये कथे मान चलीखिने भ्रा की!

—साइकिल पर की बाम छले-बेकेच्छ हैब। ओकर कथे देते सिवारी की?

—कहुं पांच ती मे नव अपने रहिये। कहो बतल पतो लिखे भा की?

—तीन बाल। साइकेतर साकेलने कनक पकार मेलनि आ ओकरा लिया देखलिन आहुँका त फाल्दू साइकिल कनतीद महीं।

—बस, ते अछन त ओनी देह? साइकिल लाव' करै जी महीं?

बात-बात पर छलालोपी कैलाइ हुए क लिखिता छनि। ओही जिय मे लिखाटी की स्वीकार केलनि ने ओइ साइकिल के दू सी-अढ़ाइ सौ व बेटी ने देले बेको ओका की छूटी मोहल्लनि मे रहा की एक-दमे महाफंगी बता देनि रहथिन साइकिल के। ओही बात पर हुए ने फेर माचना होल' लबकनि छुटा तखनो दरवान आबि गेल,

—तेही कम त काम तीन सौ त मेले मेल देते ओकरा।

—पड़ मारि ठेकक का मूड़े पे भेंप चुभा रहलक।

एक मिनटक बेर मालि जिवा मे सर्प क्रिनि हेसले त एकर कमल की गेले? पड़ी साइकिल रहै सम्मतिक भा चाउर-हालि मेलक। दीमात-तलकारीक पे चाइ देले रहिये देहो मेवक दू मारि धावर के देते होइ बेह दा बैते ओकरा हिलता।

ई छला मेत ह' चार्ज। हिनका मेवक मीठ चार्ज बेटी म मेलाक चिन्ता व हेलकनि संभवतः छुटा ठीके ओकर मन्न चहाँ किछु छिनेले। बतो बैर मेवक चर्चा होइ के ई एक मीन यदि चावल भूल बात चोर त आनि गेल।

× × ×

दरवान आबि क' सुचित केलक जे डाक्टर साहब देहातक दल बादि करलक छोड़ा लोकनि के छुटि गेले। कम्पनीक गाड़ी त ओकरा सीड कर बालताक व बाहुन गेले।

आइ घर्मी बैसोइ छलैं। तुकाइ छले से उठिन व हाकि देल चिनिक, बुझाइ दे तल मे कहली छे देहने रौद। कम्पीनिक इरिशक बोकरि के नदेशाक आ एक भूप चाल कतवाक केल पानि सकताइ हौद बे मोइ पोकरि स। चाकर त कम्मे के तुरा भ बेबी गढ़िर छै। छौड़ा उमेल मे कने आल् नहि गेले आ छुटि गेले पहुंचा कं होल ओकरा बहुत कैलने।

—कोनो गड़बड़ त ने हेते साहेब?

दरवान कम्पनीके दसारन ध बेसाक ठीका लकिहा छक

—नै, बहुत कोनो बात त ने देखल चाही। हम ओकरा आश्वस्त केलिले।

—युद्धबन्द ने?

दरवान पुर्नोक्त आश्वस्त होल' चाले छल।

—ने पुडि क त ने जिल्ब छुटा पहुता हाल मे पुछलाक होय रहै छे ओकरे। तो बाद।

छुवोचन आबि गेल औ बाहुरू छल दरवानक हंगहि छुटा पाछुर ठाइ छल संजना पाठिवा व रहल छल के दरवानक बात खतम होय तखन बौरला बाइ। ओ इलेत बाइक मानुपाइक बढ़ुयाइक दाइ गेल।

—की गेलौ युवोचन?

—बाबू। मखा ठीनि केलक।

—कैरा ठीनि लेलकौ?

—पगान मक चौक पर हटिने त छुकर बात-पहिचानी भेटा गेले। भी अपना बेब छवे बहर क गेले पान खाइ के। तखने तीनि मोटे साविक धेनि केलक आ बेट मे भबहू लिया देलक।

—दूसरा किछु ने केलहो?

—कहलक 'हल्ला करबे त मारि देबौ।' बकिलथे लिया गहे दरबेर पड़ भाली-मोनी ठावलैं त छुनि भौ।

—तखन?

—ओरा, साइकिल कर भहीं क ठेलक किछु छुरा पाड़ रहल मे आ बेरी क नाची बहार व बेलक ठामा भी जान-पहिचानी देती भावल। ओकर बेस त पहिलाहि हमरा त छिनि लेलहि रहै। बाबु खिल व ओकरो बेबी इंटोमि केलले। अपी मे छुटा टीक ठाइ रहै, ओही पर चाहेब आबि गेल।

—साहिबो व केलको?

—हँ

—ओहर जान-पहिचानीक की सब केलकै?

—बात की ओपेय रहै बेत मे बेब मे बाबा बर' आयल रहै। बेबीयो से ठीक पवीस रुपेया रहै, पढ़ी रहै।

—सेवक ताला तोड़' पड़तौ?

सुवोचन चुपे रहल। चाबी हेरा गेले त ताला तोड़हि पड़ते।

—ई ताली हमरा अभारवाई छिये।

हिनका जिवगाइ हमरा नीक ने लागल युवोचन के अंदलमित ताइ हुमारे नै, हमरा मर्यादमा से बाल सुचिविर हेबाक अ बाब मे पुलकेस कैलनि दे बहल मे, हिनकर चालि हमरा छुटकोटी ने सोहाइल।

—हमर की सजवाही गेले?

सुवोचन निरमिताइले।

—चाबी त क किछु गेले बाबत?

—त की करिबिये?

—दरवान आ बमा व क मेवाक पाहि छुले कोनो औ होइए यर छिली से बाट साहेब कहाँ नकनी चाबी नचकेत पवार! हमार मेर नाहि जुकल छी। बत काम मे महमी। बाबे ताला मान बेकार भ गेले? बेहु मी त सावे कतो। की ओ हिबाटी की?

—बतोक कोरे बनले ठाविहे। गोद-रैबक छलै।

—बबीबाही कमलीक चाल-बाई सत्त सी मे हारिकूर।

सो सबि हल छुआकित भा दम छौड़ा रहल छलैं। नोकरक सोकाही मे हिनका त बहकही ने बेत भा छले छल। बपने रतबहूलक चाबी तनि ल बाद छचि कलकत्ता भा बालैवइ। ओका हमहूँ फ्हुटक चाबी भमा क क नहिए बाइ छिदे'''चाह सवार करक चाही। कवल मेंही बेत आ पहल छले आ भूख देव गेल आ रहल छल। मदाक सुन पकड़लौं।

की मेर सावा होइनाक उताप कर आ देखही ने लंबक कोनो व्यवस्था भ सके हे की नै।

—कहीं छे कोनो सम्भान?

—किछु ने छी।

—तत भा हाकि क्या क गेल छविदे। ओकरा सेन धक् द मोन बहक होय।

—अच्छा। तो की गेट पर स कुर्सा-बत के चढ़ा दे न।

—हूदू गाड़ी त गेट के ओगरे।

—किए? एकतेटा व मे त माइल सेठेह छौड़ा के बदनात?

—ओकर तेकेह बाला डाक्टर साहेब के मकान।

—ओही। दौ'''

छाड़ें चलाइह आबि पहल छले। आन दिन निडल बाड़े भादइ बले मौन गाड़े छल तखन होइ छल पे अक्ल उठक चाहीं। आइ एकसे त अकम्बर बूला पहल छल। सोवाक बेल बाइ पहरा होइल। छुपा गाड़ी भामोत तखन मे। चला मे बने देरी लगते।

हम मकान-मकान काल मे लाति बैल छल। मेल मेरू छन छुटा चमत्कारक छन। रहि-रहि क हमरा दिस देखैत छल गाड़ीक स्वर सकारैत। हमहूँ सत्तावन्त परिश्रम कारक पड़ी। दरवान देहक भारक। छम हालकिह भ गेल।

—छौड़ा त मारि गेले साहेब।

हूँ।

सकइक स्वर हमरे मेर छले भा मिलकरहा नहरि बैते। मात्र मशीनक स्वर आबि रहल छले। बेना सब कानुन नीक न गेल हो। बाही मान मे त बावे मिलब न गेते।

आइ बसलाइ छौड़ा के ध्यान, बेटो एकसे तुलतक छवे। पूरी मंत्र होइ छै। एकहा गेल-तुलना के नहिए रहल बैसलि।

× × ×

मीन-मेन निकालेत, मितावा कटैत चाइ सकालीत। मेल पहुँचली। दजन गाम गोटे की किछु सहल सदर मेल हानि। छुयोचना ताला तोड़ि छुकल छल। हल्केटा तोड़' सहले। बाकी क छुयोकेक चाबी मेट गेले। दिल मे बाबा-पोढी आसा बात चले छै के वाही अनुवाद मे घवल रहै। ओकरा हहसाय फेल गेले। बाइ विवी, कोनो सहक सिकाइल ने बैसके। मात-हालि मे विकाइतै की भ सके छले।

—ओकरा चाउरक भात छी?

सोटका चाउर छुयोचनक लेल रनहाइ छे।

—ने, कारिझक सधि गेले। बाइ बने ठाबिये।

× × ×

बकरा गाड़ी आबि गेल रहै। छुइबक डाक्टर साहेब के घर तक छोड़ि बालनि दे देरी गेले। ओनो कन बाहर स क पाँच माइल दूर होवल ह' हलिवाल गेलौं। बीचमक चहिक विवा-मेहलक उद्घाटन केले। अहिक भावना के दे नहिए। रोडन बहू की बालकी कोवाक लेल छवे। मेव इन्चार्ज देखकि। चम बौवाक केल फेर बहू माइल बाबू गेल बाही।

पुछी बहू देत ह' चार्ज छुटकाइ।

आइ कोनाक, मली बल टी स्वासी कोनाक की कले?

मेल चार्ज के देला लिखी। बाला त मोरे मे छले ने?

बाइ मेर त बने मे एकबार क नवी।

सानेक नीक मादाक हमर उपर छल।

सामिमलित उहावा मे ह'मनक आभास बहू मेर छुनि मेले

—कुमार

★

रेल-सुरंगी

प्रश्नासने लकैल अछि

रेल-दुर्घटना तथा रेल डकैती आइ-काल्हि साधारण दैनिक दिनचर्या सन्न भऽ गेल अछि। समाचार पत्रक पाठक ओकरा सँ कोनो नव खबरि नहि बुझैत छथि। आब तँ पढ़ुआ लोकनि सेहो कहैत छथि जे ई तँ सामान्य घटना थिक। स्वाभावतः दुर्घटना कोनो मे गिनती नहि होइत छैक। घटना मनहि मोन मे बिसरि जाइत छी। जे अधिकारी लोक हैं नहि मानत चाहैत छथि जे कतेक लोक मरल वा घायल भेल। तकर क्षति-पूर्ति कतेक होएत, ताहि पर विचार करैत छथि। हुनका सभक मनमे ई विचार नहि अबैत छनि जे एहि घटनासँ लोकक मनमे कतेक भय व्याप्त होइत अछि। ई समाचार पत्रक सेहो दायित्व थिक जे पाठक के ई बतबथि जे कतेक कारण सँ ई दुर्घटना भेल। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाक समाचार-पत्र मे 'आर्यावर्त', 'धर्मयुग', 'समाचार' आदि अनेक पत्र-पत्रिका अपन पाठककेँ अवगत करबैत छथि। सरकार सेहो किछु घोषणा करैत अछि मुदा ओकर प्रतिक्रिया जनता पर नहि होइत छैक। तेँ ई प्रश्न उठैत अछि।

घटना एक छोट अछि समाचार पत्रक भाषा मे। पटनाक एकटा समाचार पत्रक अनुसार आइ-काल्हि आवागमनक साधन कतेक असुरक्षित भऽ गेल अछि। ओकरा अनुसार ओहि ठाम कतेक घटना भेल अछि जकर अनुमान लगाएब कठिन। प्रत्येक दिन कोनो ने कोनो ठाम दुर्घटना होइत अछि। कतेक लोक मारल जाइत छथि आ कतेक घायल होइत छथि। किन्तु सरकार एहि दिस ध्यान नहि दैत अछि। एहने घटना सँ लोक आक्रान्त अछि। एहि संबंध मे सेहो विचार करब आवश्यक।

घटना बिहार मे नवम्बरक थिक। गाड़ी छल मुजफ्फरपुर दरभंगाक। ओहिमे चढ़ल छला अपन परिवारक संग। गाड़ीमे भीड़ छल। महिला सभ सेहो छलीह। अन्हार भऽ गेल छल। गाड़ी चलैत छल। गाड़ीक डिब्बामे कतेक लोक चढ़ि गेल आ अपन हथियार निकालि यात्री सभकेँ लूटय लागल। ठीक-ठीक त नहि कहि सकैत छी, मुदा किछु दूर गेलाक बाद गाड़ी फेर ठाढ़ भेल आ डकैत सभ उतरि गेल। यात्रीक संग कतेक सामान छलैक से सभ लूटि लेलक। बीच-बीचमे गाड़ी रुकैत छल। हिनका सभकेँ सुरक्षाक कोनो व्यवस्था नहि छल। प्रशासन सेहो चुप रहल। पुलिस विभाग सेहो किछु नहि कएलक।

आब हम मधेपुर पोस्ट गामक कथा कहैत छी। रेडियो तथा अन्य पत्रसँ सूचना प्राप्त भेल अछि। हमरा सभकेँ कहल गेल जे रेडियो तथा पत्र-पत्रिकामे ई समाचार अएलैक अछि। संयोगवश हम सेहो ओहि गाड़ीमे छलहुँ। रेलमे हमरा सभक संग कतेक यात्री छलाह। गाड़ी चलैत छल आ रातिक समय छल। अन्हार छल। ताहि बीच एकाएक गाड़ी रुकल आ डकैत सभ चढ़ि गेल। हमरा सभक सामान लूटि लेलक। ताहि बीच गाड़ी फेर चलल। पुलिसक कोनो व्यवस्था नहि छल। डकैत सभ सेहो उतरि गेल। तखन हमरा सभ अगिला स्टेशन पर रिपोर्ट लिखाओल।

आब हम समाचार पत्रक रिपोर्टर विषय पर चर्चा करब। ई समाचार प्रकाशित भेल, मुदा रिपोर्ट सेहो अधूरा। एहि तरहक रिपोर्ट सँ समाधान नहि होइत अछि। रेल प्रशासनक व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगैत अछि। ई देश भरिक राष्ट्रीय समस्या थिक।

आब एकटा घटना पर विचार करू। पुलिस विभाग मे अधिकारीक संख्या बढ़ल अछि। रेल पुलिसक सुरक्षाक व्यवस्था सेहो अछि। तथापि घटना होइत अछि। मुदा टी० टी० साहेबक अनुपस्थितिक कारण हुनको जानकारी नहि भेल। कतेक यात्री बिना टिकट यात्रा करैत छथि। टी० टी० साहेब केवल टिकट जाँच करैत छथि। गाड़ीमे पुलिसक व्यवस्था नहि रहैत अछि। तेँ डकैत सभ निर्भय भऽ डकैती करैत अछि। स्वयं टी० टी० महोदय सेहो असुरक्षित अनुभव करैत छथि। हुनके कथनक अनुसार पुलिस सेहो डकैत सभसँ डरैत अछि। किछु दिन पहिने ओही डिब्बामे एकटा घटना भेल छल। टी० टी० केँ डकैत सभ मारि देलक। तकर बाद आइ धरि कोनो कार्रवाई नहि भेल।

आब रेल मे डकैतीक समाचार अछि। रेल प्रशासनक अधिकारी एहि पर ध्यान नहि दैत छथि। जँ ओ सभ ध्यान देथि तँ डकैती बन्द भऽ सकैत अछि। रेल प्रशासन केँ चाही जे यात्रीक सुरक्षाक व्यवस्था करए, नहि तँ जनताक विश्वास उठि जाएत। जनता मे आक्रोश बढ़ि रहल अछि। ओ सभ जानय चाहैत छथि जे एहि समस्याक समाधान कहिया होएत। केवल रिपोर्ट लिखने समस्याक समाधान नहि होएत। जनता सेहो एहि दिस सचेत रहथि। सरकार सेहो अपन दायित्वक निर्वाह करए। एहि लेल आन्दोलन करब आवश्यक। जनताक सहयोग सँ ई समस्या दूर भऽ सकैत अछि।

—उदय कान्त मिश्र

शोषित द शोषित मैथिलार्थ

भाषाकरण मे मैथिली नाम, कथ-कल विनाश नहि होएत।

प्रत्येक विषय मे प्रगति हुअए तँ आ सामान्य मे पैसल आसरा। महुआरा सेमी प्रवासी मैथिल सभ ओहि-ओहि स्थानमे अछि मुदा मैथिलीक आन्दोलनक बात, हुनका सभकेँ कि कहल जाए पहुँचि सकत? मैथिली दुनिक नोकरी करबा लेल कोनो संस्थाक सेहो नहि अछि आ ओकरे गाम-घर बाहर सभ गामक सरकारीक पर मैथिलीक देश संगठन होएत। मुदा से अछि नहि। समाज-घर मे विद्यापति पर्व नहि मनौल जाइत अछि। देश-देश मे मैथिली आन्दोलन मे प्रवासी मैथिल आदि केँ सम्मानक स्थान पर आमंत्रित करू। मुदा एहि मोहक प्रभाव दूर-दूर धरि पसरल अछि। सभ ठाम मैथिल समाज सिखा, विरासतक संरक्षण आवश्यक अछि। तेँ विद्यापति पर्व मनाओल जाए, आ मैथिल संस्था सभ मिलि कऽ काज करए। एहि काजमे मैथिली भाषी सभ जुटि सकैत छथि। मैथिली साहित्यक विकास लेल एकजुट भऽ काज करब आवश्यक। ताहि लेल विद्यापति पर्व मनाओल जाए। मैथिलीक स्थिति सुधारल जाए, मिथिलाक संस्कृति जीवित राखल जाए।

- वैद्यनाथ मिश्र

बोनिहारक गीत

पहु के रे दुखा सौ हंसुआ-धार शान रखो।
हंसुआ मे धान काटव हंसुआ गुमान छइ
हंसुआ हइ अपन परान आर जान रखो॥

हम सभ कमायब आर खायब सेहो आस
हमार बहुतरा हैं हइ जेहन विधान
कखना लें धन कर्म करबा लें देवा हइ
जमकल के ठकबा लें हइ मजबान रखो।।

सोनिया सुभा क परेना बनेतिहे
कखनो हुमा क के सेहो पटेतिहे
बगिले से करती ई सोना सुगन्ध गाछ
मकमा, सिवारी, ग्हूम आर धान रखो॥

रोपने छी कहबे आ हर जल बहबे
अन्नक कमाबे ने आब हने सावे
ठकबक बहुत दुख आब ने सहबै हम
काजो सँ छइबे करोंगे हैबे जान रखा॥

—राम लोचन ठाकुर

एकटा गोपनीय पत्र : सन्दर्भ मुख्यमंत्रीक घोषणा

प्रवासी मैथिली

[illegible]

सभा-समिति

नयी दिल्ली, १० नवम्बर १९८९ स्थानीय मथिलीकर संस्थान के मिथिला संघ (न० दि०) द्वारा दू दिना विद्यापति स्मृति समारोह आयोजन कएल गेल। पहिल दिनक उद्घाटनकर्ता छलाह श्री केदार पाण्डेय रेल मंत्री, भारत सरकार तथा मुख्य अतिथि श्री ललित माकेन, सूचना एवं प्रसारण मंत्री, भारत सरकार। अध्यक्षता कैलनि मैथिल श्री हरिनाथ मिश्र, संसद सदस्य। मुख्य वक्ता मे कविता नाम छलनि श्रीमती राम कुमारी सिन्हा, राज्य मन्त्री, भारत सरकार, श्री अनुपस्थित रहलनि। अन्यान्य वक्ता लोकनि मे सर्व श्री सोमनारायण शास्त्री, कवीश चन्द्र मिश्र कृष्ण चन्द्र पी० मी० दत्ता झूरीमी, डी० पी० यादव, के० पी० तिवारी, सिद्धनाथ झा मो० अजीत मेहता, राम स्वरूप पाण्डेय, श्रीमती मनीषा कुमारी, आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। सांस्कृतिक कार्यक्रम मे नाम छलनि श्री महेन्द्र जी, श्री शशी कान्त मिश्र। एहि अवसर पर पुनो प्रथम महोत्सव प्रस्तुत कएल गेल। अन्त मे श्री सुधानन्द ठाकुर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन कएल गेल।

दोसर दिन, १ दिसम्बर उद्घाटन कर्ता छलाह पं० श्री लक्ष्मीकान्त झा, अध्यक्ष, आर्थिक सुधार आयोग, भारत सरकार। अपन उद्घाटन भाषण मे श्री झा जी कहलनि जे बंगला भाषाक उद्भव मैथिली सँ भेल। विद्यापति के बंगलाक कवि मानबाक हमर कारण छल। हुनक भाषा मे मधु समाहित अछि जे भाषागत मे विशेष सम्बन्ध बनाए। स्वतन्त्र रूपे एक स्थानीय भावनात्मक मानसिकता होइत गेल आ बंगला भाषा सँ मिथिला अलग विकास होएत। एहि संदर्भ मे श्री दुर्गानन्द भाषाक उद्भव सँ विकास धरि सन्दर्भ प्रमाणक सहित आवश्यक आवश्यकता पर जोर देलनि। अपन अध्यक्षीय भाषण मे हिन्दुस्तान टाइम्सक सम्पादक श्री विनोद कुमार मिश्र जी कहलनि जे विद्यापति मैथिल कवि छलाह जे सम्पादित संस्कृत तथा अवहट्ट मे छोड़ि कल भाषा मे काव्य रचना कैलनि आ मात्र स्थानीय नहि ओकरा होयब छिल। सेहो कलाकार। हमर कारण थिक जे समस्तहुँ भरि मध्य पर मे हुनक गीत मर्मस्पर्शी वाइस अछि। मुख्य वक्ता श्री रामा धारी सिंह दिनकर अनुसार विद्यापतिक काव्य मे आत्मनाम, भक्ति आर सौन्दर्यक अद्भुत समन्वय अछि। हुनक गीत मे गति, लय आर भावक सेहत सामंजस्य अछि जे ओकरा आधार पर कोनो अन्य नृत्य नाटिकाक आयोजन कएल जाएत। उद्घाटन मुख्य अतिथि पद पर छलाह श्री वैद्यनाथ झा, भारत सरकार विशेष राजदूत।

एहि अवसर पर एक प्रथम कवि सम्मेलनक आयोजन सेहो भेल। कार्यक्रम मे कविता पाठ कएल गेल ओ अन्य कवि जे भाग लेलनि ओ छलाह श्री रामहस कालेन, भवनाथ राणा, कलानाथ मलनी, रूप० पी० मुहम्मल, कवि सुधाशु 'शेखर', कविरत्न सुमन, प्रवासी, अमर नारायण झूमर, रवीन्द्र, महेन्द्र श्रीनिधु एवं मायानन्द मिश्र।

अन्त मे सर्वश्री विश्वमोहन, गिरीश, प्रदीप, वैद्यनाथ, शारदा सिन्हा, रू० के० सिंह, एवं नारद प्रमानाक कलाकार लोकनि द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल।

(मैथिल प्रभनाक दिल्ली प्रतिनिधि सूर्यनारायण मंडल द्वारा प्रेषित)

× × ×

कलकत्ता २१ नवम्बर ८९ बड़ा बाजार युवक सभा हौल मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा विद्यापति स्मृति पर्व मनाओल गेल। अध्यक्षता कैलनि श्री मुकुन्दलाल मिश्र तथा प्रधान वक्ता छलाह मिथिलेन्दु जी कवि गोष्ठी मे मधुशाल छिलाह। अन्यान्य वक्ता मे छलाह सर्वश्री बाबू साहेब चौधरी, राम लोचन ठाकुर, शरद चन्द्र मिश्र, आदा नारायण झा, प्रदीप मा आदि। एहि अवसर पर विद्यापतिक 'सखि हे हमर दुखक नहि ओर' गीत पर आधारित पाठ्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल तथा मात्र संगीतक कार्यक्रम प्रस्तुत कएल गेल।

कलकत्ता, १४ नवम्बर १९८९। संस्कृत साहित्यक मर्मज्ञ आ मैथिलीक प्रख्यात पत्रिका पं० सत्यनाथ झा 'सत्यवर' क आकस्मिक निधन पर स्थानीय मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा एक शोक सभाक आयोजन विद्यापति विद्यालयक सभागार मे कएल गेल। अध्यक्षता परिषदक अध्यक्ष श्री मुकुन्दलाल मिश्र तथा आन विशिष्ट स्थानीय गण मैथिली सेवी संस्थाक प्रतिनिधि लोकनि। श्रद्धांजलि क्रम मे विभिन्न वक्ता लोकनि 'सत्यवर जी' क व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश देलनि तथा ओहि सँ शिक्षा लैत अनुरोध समस्त मैथिली भाषी सँ कैलनि। हुनक मुख्य श्री मे काव्य, खण्डकाव्य तथा पुस्तक रहल छैक सब ठाम सँ आ सबहक मौलिक रूप मे प्रस्तुत कएल अवधानक स्थापना करति। 'गीतावली' महाकाव्य मे श्रीरामक गरिमाक उपस्थापना हुनक कला-कौशलक परिचायक थिक। मैथिली मे 'मेघदूत' ओ 'गीतांजलि' क पद्यानुवाद अपन विशिष्ट स्थान रखैत। एकर अतिरिक्त ओ कतेको मैथिली हिन्दी संस्थाक संरक्षक छलाह। मैथिली भाषी सदा हिनक ऋणी रहत। श्रद्धांजलि अर्पित करनिहार मे छलाह सर्व श्री राम चन्द्र मिश्र, काशीकान्त झा, हरिश्चन्द्र मिश्र, मिथिलेन्दु जी, राम लोचन ठाकुर, बिहारी कान्त मिश्र, ब्रजकान्त सिंह झा। अन्त मे दिवंगत आत्माक शान्तिक हेतु दू मिनटक मौन प्रार्थनाक उपरान्त सभाक विसर्जन भेल।

बाल कविता

नजि छहु तकर विनाश

तकरा विश्वोयक कहु
  करत जाँ ने शोक
बनलोहात कहल जाँ
  कोयर घर के गीत
किन्तु मायता नीक थिक
  होयत की अनजस्य
शोक नपुंसक के कहु
  की करैत मानव
पुरुष सिंह विचित्र लक्ष्य
  तोड़ि अत्याचारक चाल
पुनि दुर्जय गढ़ि जगत मे
  तकरा उँ की जान'
नहियो अमर करैत अछि
  कीर्तिक गाथा महान
दयाहीन मनुजता के
  सबै ने नाम निशान
लिय' लिय' दा नाम जे
  भेटय नचि अधिकार
बन्धकोटा तुरि लाइ सब
  भेहले सब संसार
हाय पवारक कातर
  मरय हजारो लोक
कुहुर विवाहित छथु पर
  के मानें सब शोक
हाय भड़ा के सँ लगाव
  सब तकरे इतिहास
आगाक बड़ा सवर्ष जे
  तनि बदु तकर विनाश।

—राम लोचन ठाकुर

विज्ञापन दाता लोकनि सँ—

'मैथिल प्रभना' मे अपन विज्ञापन दए लाभ उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सँ अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
आर्यावर्त प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सँ निवेदन

१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'मैथिल प्रभना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।

२—'मैथिल प्रभना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना कें प्रमाणिकता देल जायत।

३—मिथिला मैथिली सँ सम्बन्धित समाचार पठाउ।

४—'मैथिल प्रभना' सम्बन्ध विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैत।

कहु लोचन कविराय

आइ धन धन के कर्म विह एक दशा सबहि नर्व
बस बेचि स्वाधीनता प्राप्त करय तेँ पर्व
प्राप्त करय ते कर्म जर्न दु आइ धनय के
समाजवादक पर्व सब सुमनाक वदय के
कहु लोचन कविराय जो नहि सदु देश के
जे करैछि [illegible] कर्मक आइ धन धन के

अर्थोदय प्रकाशन, २२/५, डा० [illegible] रहमान रोड, कलकत्ता-७०० ०२३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा [illegible] आर्ट प्रिन्ट, ३६-बी, [illegible] रोड, कलकत्ता-६ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री [illegible] झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अंक—४ जनवरी, १९८२ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

भीख नहि, अधिकार चाही

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संविधान बिनु मैथिलीक ओ
मानचित्र बिनु मिथिला प्रश्न
छाड़ि जाति पुछइ कथा हम
विद्रोही मिथिलाक प्रधान

जनकपुरक विद्यापति-स्मृति पर्व : स्थिति आ अपेक्षा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

—पत्र मैथिली

मात्र अपने स्वाधीनताक नहि वोधयोग स्वाधीनताक भोजमे बिना सम्मान रहैत अछि आ मातृका भाषु बरकर पायक समान छथि।

ओना त मातृका भाषु करोतो बेर, करोतो लाख लं मिथिलीक सम्बन्ध मे अपन विचार प्रस्तुत क चुकल छथि परन्तु उपरोक्त बातकर पर ई ते बिसु बहलनि तकर परतक नहल अछ। ई मात्र कुशलमे नहि अपन सहयोगक आयोजन बेहो देखनि आ लोक कोड मे हिनक आत्मायन पार- तीय नेतायन तकरातक निमित्त नहि होइ छनि। ई अनहि बहुत आसता मे नहि छथि पायक सम्मानहीन त किन्तु मे छथि आ ई जे को चाहथि त मिथिलो मैथिलीक बहचार भटति निश्चय भ सकैत। किन्तु प्रश्न हिनक चाहबाहक नहि- हिनक कुशल सहयोग देखाक अछ—बरकर ओ मातायन दैबनिहै। आशा अछ जे परि- वहक करीं लोकनि यदि ने नहि कुकाक कारण बरबस बेर-बेर नहि अबे छइ।

मातृका नकृक सम्बन्ध मे तीसरा विषय ध्यान देबाक अछ, महत्वपूर्ण अछ। पहिल ई जे नेपालक दोनवार लोकनिक भाषा मैथिली थिक। बहोसदि विद्वत-समाज प्रश्न कइ ते सवाल बावकता भाषा मे। त यदि ओकरा बरबार होइ तइ आ सारीन भाषाक संग संस्कारमे बी विद्वत चुकिते करत। ई सर्व- कर साहित्य के माध्यम सँ दूर करइ आ सकैत। हुनको लोकनि के त मैथिलीक माध्यम सँ शिक्षा भेटनि, शिक्षाक प्रसार होएत, हुनको लोकनि द्वारा साहित्य लिख- बाक भाव आ ज्ञान संचारक संग सम्पर्क बाढ़ होनि त भरनहि ई मार्गमय समाप्त भ जायत। उदाहरणक हेतु पूर्व बंगाल आ पश्चिम बंगाल मे बाजक भारतवर्ष भाषा मे बढ़ अन्तर छइ। कुनु-कुनु संचारक भाषा स बढ़िवाक हेतु कुनको कठिन किन्तु साहि- त्य मे, पठन-पाठन मे मोटामोटी एक तरहक भाषाक प्रयोग होइ छइ। तथ संचारक लोक मानैक छथि अपना के बंगाली आ अपन भाषा के बंगला मानैत छथि आ मात्र मानिते नहि छथि ओकरा मान-मर्यादा रक्षार्थ कुनु मूल्य देबाक हेतु सदा-सर्वदा प्रस्तुत रहैत छथि।

दोसर बात जे ओ कहलनि से ई जे भारत दोसर विद्यापतिक प्रयोजन अछि। हीके भारत विद्यापतिक नाम बलये मैथिलीक बिकाश नहि हेतेक। प्रयोजन अइ विद्या- पति धारणा के बिकासक आ तेँ एक नहि अनेको विद्यापतिक प्रयोजन—बे फेर एक बेर 'बाक चन्द विहसाइ भामा'क उद्घोष क सकथि, मैथिली-साहित्य भंडार के भरि सकथि, जनचेतना जगा सकथि, पुस्तक निर्माण क सकथि आ निर्मिता-मैथिलीक सर्वाङ्गिण विकासक पथ प्रशस्त क सकथि। प्रयोजन अछि मैथिलीक ग्रामीण सांस्कृतिक आलात्मिक अनुशासन ... ...

हुनक देहर कुकाह छलनि मैथिली के बड़ो निरुमित मासिक पत्र बहार करबाक। तत्पहक बड़बार सँ त देकठ यदि तत्पहक पत्र बहारो होइत, मुदा ओहबार बरकर प्रयास छइ। तेँ यदि तत्पहक पत्र बह नेपी अवश्य अछ जे ओहवारक ओकर समस्या ओकर आशा आकांक्षा के स्वर देत। पोथी बरो किदइ मे छनि बाबो मुदा पत्रिकाक अपन पत्नी महत्व अछि आ आतुक युग के बरकर उपयोगिता के अवहा- लोक नहि का सकैत।

यहि अवसर पर भूतपूर्व मंत्री श्री लक्ष्मण प्र० सिंहक बहस मे प्रय ह० क लिखवबारि मैथिलीक नाम्सतक औचित्य तकने प्रकाशित ग्रहण बताब माध्यमिक कक्षा सँ मैथिलीक माध्यमे शिक्षाक व्यवस्था हो—पूर्णता सब बढ़ आ भी सिंह कम- वारक पाथ बिकाइ। ओ मैथिली के नेपालक दोसर भाषाक मान्यता देबाक माथ करैत कहलनि जे क्षेत्रीय भाषाक विकासक बिना ओइ देशक विकास असंभव छइ आ तेँ सरकारक कर्तव्य छइ जे बढ़ दिस ध्यान दिअय। श्री सिंहक मैथिली-नियता आ सही विचारक हेतु मैथिली भाषी हुनक आभारी रहत। श्री भारतीय नेता लोकनि के बढ़ि सं कनिंयो चेतना जगतनि ?

यहि अवसर पर कामसुर नगर पंचा- यतक प्रधान पंच श्री दामोदर प्र० उपाध्याय तथा राम नगीना सिंहक उद्गार सेहो प्रशंसनीय छल। सचिवक दिस सं श्री अवध कान्त ठाकुर द्वारा माल्य कहल गेल जे राजकीय ज्ञान प्रतिष्ठान मैथिली पोथी पर पुरस्कार दिअए तथा रेडियो नेपाल सँ मैथिली मे नियमित कार्यक्रम प्रसारित हो।

आइ सरकारक बहार अकल कि विद्यापति स्मृति पर्वक रूप पूर्वकलीन विद्वत भ मुक्ताक आ अपन महत्व तथा मुक्ता-वद ओतुकारक हेतु ई निश्चिते महत्वपूर्ण अछ आ बरकर उपयोगिता अछ—जे उपरोक्त विवरण सँ स्पष्ट भ सकैत। आयोजक लोकनि यदि मुनिव अवसर पर कुनु पत्रिको प्रकाशक योजना का निस्तु, महात्वपूर्ण नाम नहि आयोजित कैलनि, मात्र मिथिला-मैथिलीक समस्या पर विचार-विमर्श हेतु विचार गोष्ठी आयोजित कैलनि, समाधान हेतु प्रस्ताव लेलनि। उदन श्री अपना के पूर्ण उत्तर करबाक बात कहलनि। श्रोता-दर्शक लोकनि सेहो नाच-गान देखबा सुनबा हेतु नहि, अपन समस्या जनबा सुनबा हेतु ओकर निदानक बाद तकबा हेतु अबा चैत छलाह। महेन्द्र मलंगियाक नाटक 'ओकरा आंगनक बारहमासा' क मंचन के सेहो बढ़ी द्दष्टियें विचारक योग्य नाही।

आशा अछि, विद्यापति बढ़ के आयोजक लोकनि हर्दिक चक्षल एक नि- बोर बहुमत्ता रहत। मैथिल प्रकाशक शुभकामना।

—सुमाया कार्की

गीत

ओ लोकनि : ई लोकनि

बूढ़ पुरनियाँ कोनि बहुत के पुरने ठाठक पुरना बात
नवतुरिया के नवका ठाठक नवका सूर नवका गात ॥

बुढ़वा के नवि चाहू ने चिन्ती
बुढ़िया के नवि बुढ़वा चिन्ती
बुढ़िया के दे लमहुआ साँटी
बटक वाहने वाधानाघो
बुढ़वा पोखड़ थीकड़ टारा, बाब मड़म खेतीपर हाथ ॥

बुढ़वा खबड़क छिपली कोठा
बुढ़ियाक खानड़ चौपनी कोठी
बुढ़वाक माथड़ बौ ब्वों छोंछ़ा
बुढ़िया हाथक बौ - ब्वों रोटी
बोन चढ़े दे अपन बुढ़ानीक गाबोक राति आ छोनमा मात ॥

ओ जाजुनेथीक फागुन कारी
ओहेन अहाबी फाक सुपारी
बढ़ड़ बिदायक मलहुक फाड़ी
चंद्रकल - हंसुली भारी - भारी
बुढ़ियाक नावोड़ कोपर मुनि - मुनि, के बर अकर ने छिहरै गात ॥

नवतुरिया मे नाम - नम पूरा
भगार दुप - दुप नवका सूर
हुलिहार निकार हटी बहीवार
मौन मिरिच आ ठाढ़क सूर
हे नवतुरिया तोरहि लसल ई बाल ई पुनीक पाद ॥

नवतुरिया के खिमिर खिदायोक
महड़ - महड़ पर महड़ ओढ़ायोड़
भारड़ मे अलबड़ नवतुरिया
लंदन मे ओलन मलयायोड़
खांमड़ धैर कछ चलल कर, मंड़ा कर जा वाक बजात ॥

चक चड चड चड, चड नवतुरिया
चड़ नवतुरिया चढ़ै पहाड़
लोकहि क जा कटै बहार
पवन चोरि क आगि चारि क
गाल मेंड़ - कर हाथार मार
चड़ दुहान मे ..... हाथ - हाथ मे
चड़ दुहान के शीमिड़ र क, हाबिड़ क के अपन बिरात ॥

—श्री शरद

यातायात समस्या

६ दिसम्बरक प्रदर्शन

मिथिलांचलक यातायात समस्या पर विभेद कम सबर बढ़ले गेल (देशकोष, जुलाइ १९८१) से एखन स्थिति कुछ आवश्यकतावादी देशक उपनिवेश सँ नीक नहि अछि। एन एको किछु मुख्य जी आ से पूर्णतः सम अछि, से आधुनिक युग मे कुछ वैभव आर्थिक विकास बहुत दूर अछि यातायात सुविधा पर निर्भर करैछ। यातायात प्रयोजन नहि के बाद मिथिला हमरा लोकनि सभक समय पर यातायात समस्या असुविधा के संग ओकर समाधानक मार्ग करैत रहल छी, किन्तु कहियो करैत सब यातायात सरकार मा हमर लोका बिहार सरकार कहियो ध्यान नहि उठयलेन्ह। समस्या ओहिना ठाढ़ अछि। पैरेक सेहो बहुत ... ठाढ़ छैक आ तकर अति-क्रमण मे ओहि समय आर आवश्यक छैक समय मे आएल। ६ दिसम्बर १९८८ क पटना हमरे ध्यान प्रकट भेल।

बिहार ६ दिसम्बर के बिहार प्रवासी पंचायतक नेतृत्व मे मिथिलांचलक हजारो लोक हमरा लोकन पर बड़ा भेल छल। 'मार्गीक चक्का जाम करू'—हुनका ओहि मिथ ... ओ हमरा तथा मिथिलांचल मे एक-एक गोट सम्मेलन गाड़ी मुजफ्फरपुर क लेल देल जाय (१) मिथिला मा नार्थ बिहार मुजफ्फरपुर मे आबा नहि जाय, (२) हमरा मुजफ्फरपुर सँ दुइ सम्मेलन गाड़ी देल जाय, (३) समस्तीपुर मे मुजफ्फरपुर सँ दोहरी लाइन हो तथा समस्तीपुर दरभंगा बड़ी लाइनक निर्माण हो। प्रदर्शनकारी ४४ कें पुलिस भीतर नहि जाय देलके सँ मार्गीक चक्का जाम त नहीं भैर परञ्च प्रदर्शनकारी सब चाबस नारावाजी बाबस कैलथि। ओहि बिधु व्यक्ति ... पत्र मुख्यमंत्री प्रस्ताव रखलथि फलतः पुलिसक गाड़ी बाधे लेलैक आ ओहि व्यवधि ओहि आइत लेल। ओहिना आवक ... सौ बाबली ... सँग ... सहायक सरस नेतृत्व करो ओ सब लेल करा देल। बाद मे जिज्ञासा सँ प्राथमिक चिकित्सा आदि लेल, मनेक कें ... सब देत भेल आ एन्हर नारावाजी चालैत रहल। प्रदर्शनकारी नेता बहुकमी के नूर ... व्यवस्था यातायात स्व ... बन्दोबस्त भेल।

आदीवर्ग मे बौधीकान्त झा के साथ कुरि मेडनि, राजवेन्द्र झा, कामेश्वर मिश्र झा के बिदो पद मेरी मार्फि आयालनि। एकर अतिरिक्त अनुरुद्ध ठाकुर, प्रो० भट्टा, बनारसी प्रसाद, मो० मजहर, दुर्बोदास झा महेन्द्र ठाकुर आदि स्थानीय व्यक्ति व्यापक भेलाह। ई बैठो परञ्च

प्रदर्शन सफल रहल आ तकर सर्वाधिक श्रेय हुनक दूट आन्दोलन के आ तकर बाद सम्मुख ठाकुर आ सम्पुर्ण हलन कें। उनका से बिहार प्रवासी पंचायतक अतिरिक्त और १ गोट फेरत देखब मेल छल—अख० भरत० मी० ओ मिथिला संघर्ष समितिक।

दृष्टि मतानाम नर १४ ला० से बिहार मुख्यमंत्री सुका मंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर ... राजनयाक आ टेल्ले रिकार्ड कांग्रेस मैथिलीन श्री मी० भी पार्टी सँ देत सैनि आ हमरा तथा मिथिलांचल सँ हुक आर गाड़ी देवाक मात्र देलनि। श्री छवी मधुबनिन मे सार बीस बर्ष सँ हमरा टीकन मा बजा बिहार तथा उत्तरी उत्तर प्रदेशक बीच सर्वोच्च मार्गीक संस्था मे बहुतेरी नहि बनल भेलय। कर्पूरी श्री के निजको सँ बड़ी, निवेश सेवनि दान हैत सम्बन्धि देक आ सकैछ। ओहा छल त हमर आइ मे लोग सबं ओटो लोकनि सभा मे छलाह सबल मिथु मे छ सकलाह। हमरो दिल्ली सरकार मे हुनको हारू लोक आइ, परञ्च सब पुरी सकले आइ। ई कर्पूरी श्री बहुत समस्या मानेसचि स एकर समाधानक निश्चित विश्वक मे मार्गीक स्तर पर संघर्ष करेत छथि।' गाड़ी हमरा टीकन पर नहि समस्तीपुर मे रोकबाक प्रयोजन छैक।

ओना त हम दृष्टि सँ पूरो निरीक्षण श्री के इतिहास सँ के ओहि सागे बिहार आ मिथिला सम्मेलन मे यातायात ओहि तकर स्थिति भावुक जता सँ नीक नहि रहैत छैक आ ई रेल मंत्री के बबरू हेर निकलो मेलनि। परञ्च, स्वाधीन आन्दोलनक प्रश्न छैक ई आन्दोलन यदि हम नहि समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर मे देवाक गाड़ी मे ओहिठाम सँ गाड़ी आजु नहि जाय। ई आइलक बिहार बढ़क मेले त मार्गीक रीतरा मे वृद्धि करले देवाक चाही। आन्दोलन सब हमरा मुजफ्फरपुर गाड़ी ओहिना छैक नहि मिथिलांचल सँ मानक बन नमाम टहर से बाद आगन देखा मार्गीक संख्या बढ़ैवाक छैक आन्दोलन देवाक चाही। आन्दोलन देवाक चाही समस्तीपुर-जनकपुर (वहिन्नीता नहीं-) बड़ी लाइन निर्माणक निमित्त। आन्दोलन देवाक चाही मिथिलांचल के सब रेल पथ निर्माणक निमित्त आ ओकर मार्गीक संख्या बढ़ैवाक निमित्त। हमरा लोकनि ओहि श्री के आरेल हमर इन्हरा सँ समस्ती-पुर बाद मे ओहेन ताले समस्तीपुर सँ बाकी सम्मानर या ओंकारपुर बाद मे बाकी 'आइल' का बढ़र एक मात्र कारण मार्गीक बाजार छैक। अवस्था मे ओंकारपुर जेना से परिचित साथ ओता छैक। आन्दोलन

ठठपाल

एक गाम मे बड़ो गरीब लोक रहथि। ओ सेहो देवक-पुजक मे सुख, सेहो नेपाली आ सेहो पढ़ुआ-लिखवा मे चमत्कार। नाम रहनि ठठपाल।

कमपाल बहुत दिन बरि परदेस मे रहि पढ़लनि। ओ पढ़बा लिखान न भेलाह। बाजार घुमब दिया सुविधा ... होयब आयल। काइयो-कौशीक नीक सामग्री होमब लगलनि। तखन हिनका बाल नाम, मानक माति-मालिक सोह रैतनि आ ओ बदल चाहि बैसाय।

नाम पढ़ुआका या ठठपालक लूरि हमनहर देलनि। छल-कपाल मे कुछ काम

चाही मिथिलांचल मे काजकालनाक अवस्था आ निधानक छैक से ओह मे छोटी-छोटी छैक लोकने छिपिवाह नहि पड़ैत। ई सम्पत मिथिलाक कह मे आय कलकत्ता-पटना मिथिलाक छैक नहि सकैछ। लोकीय भावना आ राजनीति बाहरक मे पड़ि रहल छैक—नहरिया के नोकरी नहि होइत छैक। तँ आन्दोलन प्रयोग विभिन्न सम्वादक समाधानक निमित्त देवाक चाही। दोसर शब्द मे मिथिलांचलक सर्वांगीण विकासक निमित्त देवाक चाही।

हमरा लोकनि सबल अपनो मैथिली आन्दोलनक बाद करैत छी त तकर अर्थ एहन रहैत अछ मिथिलाक सर्वांगीण विकासक हेतु आन्दोलन। आ तँ मैथिलीक व्यवहारिक अधिकार प्राप्त ओकर विकास पहिने आनि चाहैत। भाषा मूल बस्तु थिक। ई जातीय चेतनाक उत्स थिक, जातीय एकताक आधार थिक। जातीय चेतना आ एकताक अभाव मे कुछ आन्दो-लनक कल्पनो मे बदल आ सकैछ, समाधानक बात दूर रहलो।

इतिहास 'देवाक चाही' कहल बात पर बहुतो कें आपत्ति भ सकैत छनि किन्तु हम कान्ति-बुद्धि कें बदर प्रयोग कहलहुँ। ई बहो हुचारे ई आन्दोलन लोकनियाक पुर नहि भ सकैछ—ई काम राजनीतिक दलक, ओकरा नेता लोकनिक थिक। एक-टेलिक हमर निश्चित व्यवस्था विभिन्न समस्याक समाधानार्थ प्रदर्शन, पुतला दहन आदि ओ—करेक चाहिएक। ई सेहो समस्याक समाधान थिक। अन्यथा कलकत्ताक ओहि अपन सुविधार्थ हमरा सँ आ निर्वाचित व्यक्ति दैनिक दिल्ली मे भलहि महौ रोकि देथि—न कनेक दुनक माथ बोल-बहुत पूरबो न आइन-कानून आदि कोनि निश्चक समस्याक समाधान करि सकै किन्तु नहि भ सकैत।

रिपोर्ट—रामाधार मिश्र

उद्यम होइ त हिनका आग्रह कें समर्थन चाहन आ निकात पुरुष चाहत। उत्तम काम होयतहुँ कमाके-काल हिनका मन मे हुकरा नायक बा दुष होइत। ई बात ई जे लोक हिनका ठठपालिक नामे कहलनि। ई लोकनि ई बहुते पढ़ुआ-लिखाड़क बाजे हम ठठपाले रहि गेलहुँ। हमरो कोनो नाम लेलै-ब ? मुद्दा उपाय की ? गामक लोक खनहि सँ आइ नामे कते-ब। हकरा बदल लो केना जाय ? ई। हमरो उपाय छैक सँ नाम छोड़ि घुर-देश चलि जाय। ओतय कुछ नीक नाम राखि लेब। आ एहन सोचि ओ एक दिन अपन गाम छोड़ि बिदा भ गेलाह।

बाहर-बाहर बसन ओ बड़ी दूर गेलाह त बाकिवन गेलाह आ तँ बहुरो गामक बहि से देखि दुःखाय लगलाह। ओही बाहर बात हमरो लोक नैतक हल। ओकर पहिलक हमरो-बडी पेन ओहेन आ सब बारि सँ हकराय बीकारि दुख्या रहल छल। ठठपाल के ओकरा पर दया आबि गेलनि। किन्तु बिलगाय कल से नाम पुछलथिन त ओ कहलकनि—धनपति। हिनका मनहिमन-बड़ हँसी आयलनि मुदा हँसी मनहि मनहि दबा ने ओकरा से निवारि ओकरा बाकि जहि बिदा भ गेलाह। बने दूर आगा बढ़लो टोल पर गेलाह त निवास आबनि—ने बाबने से बहुरो लोक कत न करि रहलनि, ने भी ओकार ठोइत रहल। आ एक के एक ओटा पाइन देवाक आवश्य वेतनिन। ओ पाइ लोक आरम हकरा पर धोकार राखि लोय चाहि एक ओटा टाका पानि हिनका देखलनि। पाइन पीबि ई सुन सेलाह त ओकर नाम पुछलथिन। ओ कहलकनि—अमरी। ठठपाल अयला बदलाह। गाम मे बड़ाहके रहथि कि बहुरो बाबी पर नजरि पड़लनि। बाबा-बाबा बादी आ तकर बादा, कविहारीक विवाह पाती। सले-मरे लोकलनि—मिथिला कुन, देव ओक दुर्गन-ब, ने त बड़ी बड़ियारी कहरे पाती। मूढ लोकक परिवार बजलक मम हमरा मेलनि। अतः ई एक बादानी सँ पुछिलह देल्लवि—ओ महापय कहान छल कहियो ? 'अमर बाहु' ओ व्यक्ति बताय देलकनि।

ठठपालक मन ठनकि गेलनि। हिनका मन मे जेतार बहुत विहारि उठि गेल होइत। अमर बाहु मरि गेलाह। आबी लोकार होइ ठठपाल आ सजतिक देह पर पुरहितो जवाहर। हम त सिक आस्ते महल। आ तकरे पैर मे बधि इन जाय गाम पर ठठ-ठठपाल, अपन घराय लौटि पड़ाइल जाइत छी। ठठपालक पूर्व मे

हड़ताल आ तकर मुकाबला : बिहारी स्टाइल

बिहार सरकारक ढ लाख सन गैरेतेक कर्मचारी आ महुत शिक्षक गत १६ दिसम्बर सं हड़ताल पर छथि। हड़ि हड़तालक कारणे ते केवल समस्त स्थिति ठेब ते औद्योगिक मोब कमेट अछ। बहर मे त दीर्घक राजिवी ओकनाह परताल ग गेल छैक। बिहुलीक देहली स्थिति ठेब बाकत कि समस्ती स्थिति ते बिहुवीक ते कोड़ छाल स्थिति नहीत छैक ते प्रदुस्वीक। सात मरफ त गर्भै मे हो। पति वर्ष बिजु धाम मे बिहुरी जमहा बाढ़ि-तार क्या देख आइए—अखबार मे प्रकाशित भ देख आइए ते बठे गामक बिहुतीकरण म गेल। ई बिना बाद के साथ मे दुहसी दिन 'बाहूल' नहि रीत छैक। बावतापक हनक स्थिति गाय सं सोचनीय छैक—मानि, बड़ी ६०। ओकक बनाये। कारियाज राज्या पर नाक रौसी हुइरै एड़ मा़ह—दैवानिहायक छरा नहि।

बिचारणीय विष ते हड़ल स्थितिक लेख जिम्मेदार के अछ? हड़ताली कर्मचारी, वे सरकार? उपर-उपर देखने त हुनको कारण ते दोषी सरकारी कर्मचारी अछ परन्तु विचिया ते देखला-सोचलाक बादे ब्याकी बाव पारिखा सकैछ—प्रासकी जिम्मेदार के पीलाइत वा सकैछ।

हमर विश्वास अछ जे कर्मचारी लोकनि देहने हड़ताल नहि करैत छथि। हड़ताल पैसन बिल्कुल नहि पिख। अवन हुनका सभ काम रानी बाहर कलाक कुनु रोजर बाद नहि रहीत छनि तखने ओ हड़ताल पर बाइ छथि। दोसर शब्द मे कहो जो कतन हड़तालक लेल बाना बाढ़ल आइल मुर्वि—तखने हड़ताल करैत छथि। बाब देखबाक ई अछ कि वसिंचीं घड़ल स्थिति बाबि बुआवल ठकेक?

हड़ताली कर्मचारी लोकनिक ओसा त झोल-मेल कहला जाक छवि असमय के पतान मास छवि का बाइल कर्मचारी बा सरकार ने बीच वाकि नहाकए ओ पिख वारिस सम्पन्न संशोधन समिति (4th

इवत? इस अनेक विहान देवाक हम बोलने छी"") बढ़ि तरहे सोचैत विचारैत को वास डुरि वमाइ।

पवल मैंने संवी-मावी सभ, सवरा सभ ने दिल्ल बाम छोड़वाक विचर हुनका रहैक मेर होतवहि हुरि पवाक कारण पुछनि। उनाव सभ सं बढ़े बाबाव देविन। ओ बवाब इवनि—बनवति देह वर महाराजा नहि करणीं होयि वैधार बागर माडु के मखिसे देखन सर्वाइ नाम हठाव।

प्रस्तुति—आमहुत

Pay Revision Committee) क सवाइ के १९८५ फरवरी सं लागू करइत बाब। बहुवाक मरीबस नहि मे बढ़ि तरहक समितिक गठन अरकारे कतेक पहुबाक आ ते ओकर नैतिक दायित्व त बाद अह समितिक सुभाव के मानबाइ। विहार प्रतीत मे कहल कि समिति अपने रिपोर्ट कमा कैलै छल सवल बंदहक वाली—लेकिन मे स्वर्ग मुख्य मन्त्री डा० जगन्नाथ मिश्र बाबल छलाइ जे सरकार समितिक सुभाव के मानोह आ तकरा कार्य रूप देत। ओ मानो कहने पढ़िका से बढ़ि केन आगं कुनु कदमवा नहि छैक। पतमन बनिको दिनक बाद बिहारक मे केबिनेट निर्णय बैसक के बकरा समहुवा सं कार्य रूप देक बावत कर फेर सम्बन्ध मे तीन आयतीक समिति वाक—हकर आर्थिक स्थितिक अध्ययन करैक। अछ मुख्य मंत्री कहि रहल छथि समितिक सुभाव लागू केला सं ६८० करोड़ क आर्थिक भार सरकार पर बढ़तैक आ बिहार ने भारतक गरीबतम प्रान्त थे ई करि—एकरा सहन नहि क सकैछ।

बढ़ि तरहे सभ हुनका बाइए जे सरकार बाइसवर बढ़ि सम्बन्ध मे कुनु निर्णय नहि ल सकइछ। संगहि दिन-पर-दिन बिगड़ैत सन रैक बढ़ैत रहल-ह आ बहुना स्थिति मे कर्मचारी लोकनिक लेल हड़ताल छोड़ि दोसर बाट नहि रहि गेल छलैक। कहीयपरि बिहारक गरीब देखाव करल अछ, मुख्य मंत्री महोदयक बुद्धि पर लोक हँसिया सकैछ। बिहार भारतक सभ सं गरीब राज्य अछ, मकर प्राकृतिक सम्पदा कुनु आनक देह दृष्टीक विषय छैक। ओ गरीब अछ त बढ़ि किनकी प्रारतक लोक—बिहार! आ ढकरा गरीब भेल बाह रहलैक उद्देश्य सं बढ़ि किनकी मानक निर्णीत मेल छल। ओ नहि कनैप ते एहिठामक सम्पत्ति सं बाहर कलकत्ता जाएत छैक आ लोक बीसिका बर्जन करैए। एहिठामक लोक ममला मुरारिपुर भारतीय मील मतेत मोरेह। दोसर बात—ई सरकार के बर्ष संकटक स्थिता बरी छैक त बिहारक मे मंत्री लोकनिक पर्ण ते कटौती करइत बाइए? बिहारक मे बी लोकनि अपन बीचल पद्धति बाढ़े छथि, भोग-विलास मे कमति छथि? बड़ी छाबाबी बीतैक बीचल पद्धति बतीपक राजा महाराजा सं बाहि अइ की?

ई सरकार बहुत आ सकैछ जे बढ़ि स्थितिक लेल पूर्णता सरकारे जिम्मेदार अछ। ई सिनिसी से बात के बिहारक सरकारी कर्मचारीक मे बढ़िया छैक मे बढ़ि निम्न-तीन बहोय बा ई ओकरा बढ़ि लोकक सहानुभूति सिविको वारि नहि छैक।

हमरो कहल कि स्थिति बदतराक सम क मुख्य-ह, सरकार हठधर्मीता कवल किछ समधुल नहि सुभाता बाइछ। ओ कव-आैताक गण त करैत अछ परन्तु दोसर विश स्मठी-बंजौपक कल पर हड़ताल के कैबाब पूर्व प्रयास मे जागल अछ अ तकरे पदतम किछ से समस्त प्रान्त मे सीमा सुरक्षा दल आ केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के भरि देल गेल अछ। बढ़ि सं स्थिति आर विस्फोटक न हुअवह कारण कुनु आंदोलनक प्रतिरोध सं बाकि मेटेत छैक। दोसर दिस सरकार समस्त सरकारी कर्मचारीक वाकरी समाप्त करबाक आ बहुतोंक दम्मी कर्मचारीक बाकरी समापक आदेश द चुकल अछ। १७ दिसम्बर के ते मुख्य मंत्रीक नाम पर केहार मेल आ तीन आयतीक समिति बढ़ि स्थितिक निपटारा केल गठित भेल-ह, ताइ मे बढ़ोता मंत्री नहि छथि 'ब्यूरोक्रेट' छथि, भविष्य बताइ सं ई स्थिति कम होबताइ। बढ़ि सं हहो बहा कतेक मे मुख्य मंत्री के काल सहयोगी लोकनि पर भरोसा नहि छनि, विश्वास नहि छनि आ ओ पूर्णतः 'ब्यूरोक्रेट' पर निर्भर छथि। बहुना स्थिति मे समाधानक लेल समाधानक संभावना त नहिए छैक देखा पाही बढ़ि प्रतिष्ठाक लड़ाइ मे अंत कुन हुइ बैसैत।

—आमहुत

(दस दिनक बाद उपरोक्त हड़ताल समाप्त भ गेल। समझौताक अनुसार चारिम P.R.C क सवाइ के निराइ मार्चेत सं लागू करल जायत। मुख्य मन्त्रीक अनुसार बिहार सरकार सं तकनाक प्रमापि कोटि टाका बढ़ि से सालैक आ तीस कोटि आतेक एकस होएताइ भुगतान ने थे पान सय प्रति कर्मचारी के देल जेतैक।

—सम्पादक)

चारि शोट मिनी कविता

<४/०१/९२ ११५१>

(१) सूर्योदय

- मनुक्ख आंगनतर सं
  पहार कक मुंह अपन
  बिर्हुमि देइक
  शिशु अबोध।

(२) राति

- दुरागमनियां कनियां बनि
  कम्न सौम्य मद्‍धा मे
  बेटी सलेह दिन
  चलि जाइछ
  हैले बिछोह; व्यथा
  पसारि मन बिरधी पर
  कारी घन अन्धकार।

(३) चन्द्रमा

- परदेशी पाहुन बेर
  बीतैत होयि माद जेना
  खिड़की छन हाड़ि
  कुनु राधिका।

(४) मध्यान्ह

- रही वर्ष
  कोहिला बीति गेल
  गुरु अधखर सूर्य
  बाब रैहैस
  पहुकार मे डूबि गेल।

विज्ञापन दाता लोकनि सं—

'ढेंसिल बचना' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क कर

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन—

१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'ढेंसिल बचना' मे प्रकाशनार्थ पठाउ।

२—'ढेंसिल बचना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र थिक। आन्दोलन सम्बन्धी रचना के प्राथमिकता देल जायत।

३—मिथिला मैथिली सं सम्बन्धित समाचार पठाउ।

४—'ढेंसिल बचना' सम्बन्ध विचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत करैछ।

लाल बुझक्कड़क चिट्ठी

श्रीमानजी, संपादक जी, महोदयजी ।
कर मैथिली ।

आजा हाल-सुरति ई जे पूर्ण सामान संग लिखब नहि अहाँ के हमर मनक बेजाक उपराग्धो अहाँ हमर पत्र के छापि देल आ गामा छापिदेल नहि देल-उत्तर महि हमरो नामे सरकारी आफ सं पत्र देल। नाम मैथिलाम अहाँ के टाल्योत संतोष छिखि। किन्तु ताहूपर सं अहाँ चिट्ठी किछो छी जे हकरा सम्मान कर वै देखाक मैथार अइ आ तँ इस नियमित कर्से कहि लाहक पत्र लिखि सांस्कोत करी। दकरे ने कहैत छइ 'भात पर नून छिन-गाइ।' चिट्ठी नहि मन त मैथ मे अहाँक मुँह लोपि की पत्रक अहाँ त छी कविता कोनवर आ तँ अपने केहन नौति संतोष करब पड़त।

देखो सम्पादक प्रवर! मिथिला मे सगो कहनी छइ—गांधा की आसन प्रश्न के दीहा? से हकरे पारि। अहाँ त मरदेया मे छी। दोसर राम, दोसर रामा। हे अपने मिथिलाम मैथिली के अहिहाम कोम बैसा छैदइ। अहाँ सम शोभित होइत के मिथिला मे रहनिहार सम भरिसक सुरत-सुर्ती मिथ—के मैथिलीजन मोहन पेथ समुचाह होइतहुँ करोड़ नहि फेलक। किन्तु अवरोधित के नहि छैक। अवक मे कपोट का सामत करता ने छैके? किन्तु सरकारी कोरा पर नाचिता लोक के कोटि सम भीतरे-भीतर महुरक्त अछ। परन्त कर हौइ अइ बल-बालक, कौशिकाक। सं अहाँ के विश्वास नहि हो त हमर हकार रहल, अपने श्रीमान् दुर्बलनीतिक्षीय देख ने आनि काढ़। समय म आवार पे किन्तु धनी-मानी लोक, दुखिया-सर्वांग तथा उकरा पीतावला अवसर कोटि मम सामने निकल देल अछ। परन्त अहाँ कनियो बैसी मूँ देखब कि उपरोक्त लोकक गिद-हाहि भोकरावर नहि बाहल छैक। सरकारी बेसरकारी गुंडा भोकरा पाछर आनि बाहल छैक आ गाबे छूटे भानि पिबा देत छैक। नहि किन्तु मैले त कने-पुलिस कला देखब आ द्-चारि बेर कुश देखब। आ जेना कि सबले छइ किने मे 'चोर ल्याबे नह' डे विरोधी अम्बाये नइ न बाइद। सर्वत्र आतंकक मेघ पसरल अछ।

ओना अहाँ यदि सबेली ने कह बाहली के से लोग कहल भाइ अछ, मं लोक संगठित मत आगमन उदाहरण प्रकाम। त हमर उत्तर रहत—श्रीमान सुविचार भी महराज, चाहे पोल पर हाथ चले छइ सो होअतर चले सकत ने? कहांत दिलका दिनानाथ के विधिलोमरि पूरि कहैत होइ, समाज ने काम कानय कहिलत वर्णनाहक लेल ने विना छिछिया देव मेल छइ—जे लोक के संगठित बैसाइ सं सहज भरिसक तुरतीक पूरा भरनारा होइत। कहिलाम त समाकथित पैथ भा छोट वर्ग मे बैहा-महिलाक भानि पलोल छैक आ पुरु वर्षक मे हे पुरुवराम सबसोरी तुक-बैड। मै त भाइ मिथिला-मैथिलीक बाहो है हावल रहिते? एतने अवसाधक बात त ई ने जे सर्वहरा वर्ग मैथिली के आगम किरदेक मानि भा कंसहार कता के सहज्ञ —के भाइ भयना के मैथिल बाहिरो ने अइ। मैथिक माने देख काल्य! आ सामन समय त बुआले अइ—कोना कुछुर नाहि छिरपीत। सामने मे सुजनकाली छइ। ओना सुदीक बात के सामनो मे मध्य-वर्गीय भा निम्नवर्गीय मनुष्य मे मेहना बतैद परन्त संजबाबा समझाम कलकाओ मैथिलेक छइ। अहाँ के त बुताले देल के ओहि अंचल मे नोट अबवा सोट सं सोट देल बाइ छइ। आ तँ इमरा किकरल मनि निवास अइ के कहिनो पुनाम मे अहाँक मिथिलाक निर्माहिर निपुक मत सँ मिथिली देहाइ का अहाँक मकर-मकर रहि बाछत।

तँ महनाक आसार मे तात्पर्यक महाजन ई जे रामबीक इच्छा सं आ गुरु संताक मनतार सं—विद्रोहक भावि नीक अहाँ पकरल छैक—पुरा उक सेवनाहर त माही। मे सं साहस हो त इमर नोम-हजार रहत। आ नहि हो त समर्थ दुर्रिक्ष दीनानाथ—मले काठे बुभक्कड़ के नहि हुच्छियानि। हमर मन मे छाली भा मे कुल, लयक समर्थ राखी—हे मनुरोध। ओना त हम पहिलहिं सं अनाम छी। कहनमे किने के नमी चोर महरेया—हे हकरे परि। कामेषि नाना नेहनाथ कहिनत सं अहाँ हमर पना छापि देखब त हिमा सं इस मिवाल ममनमाक पूजा कोटि नवाताक पूजा मे सामत छी जे कोनहुना बाँह देल बांधि भाइ। मत नवदुनियाक कुचकदली सं भायवा कहन्य नामक रोकिया पाठ देहो भारंभ क देने छी। बड़ी मन मे ममताक पाठीला तिरकवाहु के आरंभ करत है त भाव मातिहल सम अइ। मिथ्या त स्मिहत ने सं कहियो साकमन मैल त है इतिहास हमर कालक साम करत। आला त उधिलहि बालमि।

अपने सं फेर हमर साधार-प्रकाश प्रार्थना मे सइ मन के सुनि छापि दी। दोहाइ औहाबाक छी।

मतोदार नहि पैलक प्रबल आकांक्षी
श्रीमान लाल बुझक्कड़
[illegible]

★

[illegible]

देश-दशा

भी मेठै किय मेठै, 'अँसा ई केना मेठै
तीन् मुखनक पावित मिथिला, आह किय मना मेठै
आइ किय मना मेठै, आइ किय मना मेठै
अक-मुद्धि-विद्या किछु ने रहले, अब कत' देश मेठै

जकर माटि सं जनमलि सीता, अहिल्याक शाप मेटा मेठै
हेत मजीठ मिरेद कहेलनि, से मनाय कहाँ मेठै
से मनाय कहाँ मेठै, से मनाय कहाँ मेठै
सुनाि शालक गाय करै छइ, से मनाय कहाँ मेठै

जे शिवसिंह अयाचेन कहां गइ, विद्यापति कहाँ मेठै
नइ'या कुहुर तीन कोटि छइ, जिनक नाम मेटा मेठै
जिनक नाम मेटा मेठै, जिनक नाम मेटा मेठै
ठोढ़ि चाटि ब बनो मैथिली, भी बहो आ की मेठै

—राम लोचन ठाकुर

१. मिथिलाक श्री : मैथिल श्री ॥
२. मैथिली बचाउ : हिन्दी हटाउ ॥
३. मैथिली बाजू, पढ़ू, लिखू ॥
४. मिथिला मे बालासाहब मुख्यकथा मेल,
   रोटी-दाढ़ी सं मुक्ति मेल, बाल-वाचनालय
   विकास हेतु—जनमत तैयार करू ।
   मैथिली आन्दोलन के सफल बनाउ ॥
५. मिथिला-मैथिल विरोधी जयचंद्-मिरजाफर के चीन्हि क राखू ।

निवेदक
मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता

मैथिली पोथी आ पत्रिका अपनो कीनू पढ़ू,
आ आनको कीनवा पढ़बा लेल प्रोत्साहित करू ।

किछु बहु चर्चित पोथी—

१.	अर्द्ध नारीश्वर (उपन्यास) / मणिपद्म	दाम—१५ टाका
२.	इतिहासहंता (कविता संग्रह) / रामलोचन ठाकुर	दाम—४ टाका
३.	बेताल कथा (हास्य व्यंग्य) / कुमारेश काश्यप	दाम—४ टाका
४.	जुआयल कनकनी (नाटक) / महेन्द्र मलंगिया	दाम—२ टाका
५.	विरक्षक (नाटक) / जनार्दन झा	दाम—२ टाका

दैनिक मयंता' कार्यालय सं भेटि सकैछ

आइ भिक्षापात्र नाञ, चाही महाकालीक खप्पर

...अनुराग।

दुर्गा मे हमरा लोकनि विचारक स्तुति पर्व मनबैत छी, प्रणाम तथा करैत छथि बहुत छी बरत मिथिला-मैथिलीक साधना करी हम तखे बहुत अछि। [illegible] नहि, जे प्रकाश-वासित दैवाइ तथा ... मे बहुका-बहुका मामला देनाइ, संगहि दैवा लोकनिक आवाहन देनाइ कोनो अर्थ नहि रखैत अछि। ई बहुत समय हमरा लोकनि मनिखक ... नहि ... नहि तुलना ... समानक समाधान भसंभव। तें, कोनो [illegible] स्तुति-पर्व मनबौनाइ मैथाप नहि। ... प्रणाम ... वैनाइक दरता अधिकार ... संघर्षक संबल देत ... मौन रहू, जे दान ... भेटि जाय तुरत अधिकार नहि। अधिकार ... बलिदान आवश्यक। जे जाति ... नहि करैत अछि ओ ... अपना मे ... अधिकारी रखेत। आ ... भाषा-मुक्ति उद्धार हेतु ... अछि, तकरा ... मानि लेब, जाइ त ... भेटैत की ?

> मिथ सूत्राधा हित मरण,
> अमर नै अमर करैत अछि।
>
> तकरे बाधा मिल है,
> ... कथा करैत अछि॥

मैथिली मुक्ति मोर्चा यही सिद्धान्त मे विश्वास करैत आ तें संघर्ष पथ निर्माण मे लागल अछि। पटना कोनो जातीय संघर्ष, जातीय मुक्ति-संघर्ष-क समर्थन आ सकारात्मक सहयोग सं सफल न सकेत। उदाहरणक लेल आसामक आन्दोलन कें ... — ... [illegible] ... जे ... मिथिलावासी ... मिथिला ... देवाल ... आन्दोलन ... नहि ... आन्दोलनक ... सुनित रहल्स्त्र ... दमनात्मक रूप स ... सकैत।

—जय मैथिली
निवेदक :
रमानाथ मिश्र
सची—मैथिली मुक्तिमोर्चा,
कलकत्ता

चिट्ठी पुर्जी

'दैनिक मचना'क अंक-२ प्राप्त भेल। आभारी छी। मुक्तिमोर्चाक ई प्रयास अति प्रशंसनीय—हमर हार्दिक शुभेच्छा स्वीकारी। यथाशीघ्र पैसा पठाबी।

—परमानन्द

'दैनिक मचना'क तीसरा अंक देखबाक-पढ़बाक अवसर प्राप्त भेल। मैथिली जे आदि उत्थान मे आवश्यकता छलैक—तकरा ई पूर्ति करैत अछि। ओना ... सपना ... रचना ... नामक ई हुरा मिथिलाक मजदूर' हमरा विचार सं सब सं महत्वपूर्ण काम थिक। ... रचना के ... बाड़ ... 'दैनिक मचना' अमर रहत। 'कह लोचन कविराय' (यद्यपि दोसर अंकक पूर्ण प्रमाणित नहि कऽ सकल) ... तथा ... दोसर अंक मे ... 'ऐतिहासिक गीत', दोसर अंकक ... तथा ... रचना ... थिक। ... पत्रिका ... प्रशंसनीय अछि। बहुत दिनक बाद ... पढ़बाक मौका भेटल। और ... सम्पादक के बहुत धन्यवाद... ... सुन्दर-सराहनीय सम्पादकीय लिखबाक हेतु अनेक धन्यवाद। ई पत्र चिरजीवी हो से हमर कामना। —राजेन्द्र कुमार सिंह

'दैनिक मचना' प्राप्त भेल। विषय वस्तु देखि मन प्रफुल्लित भए गेल। ई एक आन्दोलनात्मक ठेठ पत्रिका माइक ... प्रकाशित भेल अछि। हमर सहयोग रहत। —अनिल कुमार

यदि कदाचित् प्रसन्नता भेल। हम आइ धरि मे ... मैथिली भाषाक ... भावना नहि। परन्तु 'दैनिक मचना' ओ ... बहु ... मे ... अछि। —शम्भुनाथ झा

'दैनिक मचना' ... पढ़बाक मौका भेटि रहल अछि। आइ-काल्हि ... सेकड़ो पत्र-पत्रिका प्रकाशित भए रहल अछि। इतना तुलना ... कोनो बाजी ... बिना ... प्रकाशित भए रहल अछि। ... हम्मा ... आदर्श ... 'दैनिक मचना' ... आदर्श पर आधारित ... प्रकाशन ... देखय रहल।'''हम प्रत्येक मिथिलावासी ... सहयोग करैत ... 'जान ... ' नहि ... सहयोग अवश्य देब। ... सहयोग, आदर्शोन्मुख ... और ... एक-एक प्रति प्रत्येक मैथिल केर हाथ जाय से।

शुभकामनाक संग—
—मदन मोहन झा, अभियन्ता,

बाजागोल

क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलावासी रे

> बीता जानि की छवि मिथिलावासी रे
> मायक बोल बजा के मिथिलावासी रे
> जे समदिन समर्थ आगू बढ़
> संग सबल छवि मिथिला मिथिला
> विद्या - बुद्धि - कला का ही घर
> कोटि कोटि युग के भी अमरता
> नवयुगिया बढ़ जागे मिथिलावासी रे
> मायक लाज बचा के मिथिलावासी रे
> सबसँ मधुर मैथिली भाषा
> चारि कोटि मैथिल के आशा
> मिथिलाक्षर सन लिपि पुरातन
> ... ...
> जहँ जुगमग बनै राम अविनाशी रे
> मैथिलीक मान बचा के मिथिलावासी रे
> ... भारती सीता जखिया
> गौतम विद्यापतिक भूमि ई
> जे ... समरा पूजित छल
> ... ... समरी ...
> आबहुँ चेत, बनै तुनि सत्यानाशी रे
> क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलावासी रे

— सुभाष चन्द्र झा

विशेष सूचना

मिथिलाक सर्वांगिन विकासक हेतु अपेक्षित जनआन्दोलन आ कलान्दोलन पर विचार-विमर्शक ओ कार्य योजनाक हेतु आगामी २० जनवरी के इन्द्रभवन मैदान (दरिभंगा) मे प्रातः ८ बजे सं सांझ ७ बजे धरि मिथिलाक विकास मे अभिरुचि राखयवला प्रत्येक संगठन आ राजनीतिक दलक एक विस्तीर्ण प्रतिनिधि सम्मेलन, मिथिला जनमोर्चा मोर्चा आयोजित कयल। एहि सम्मेलन मे भाग लेबाक हेतु मिथिलाक प्रत्येक प्रगतिशील बुद्धिजीवी आ जनसेवी के सादर आमन्त्रण।

—धर्मेन्द्र कुमर
संयोजक, मि० ज० मोर्चा, दरभंगा

'दैनिक मचना' ग्राहक दर :—

१ प्रति	५० पइसा
१ वर्षक	५) टाका
५ वर्षक	२०) टाका

पाइ पठेबाक पता—

श्री जनार्दन झा,
१७/६, उषा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

कह लोचन कविराय

> चारिक महुआ तीत भा. हो बाजारक गीत
> बुझरि रहल तँ मैथिली, कनिया टेरय गीत
> कनिया टेरय गीत, नरेए परिजन जाय
> भाग-भाग तें मोहि, पुत्र सम मिथिला मातृ
> कह लोचन कविराय, कलंकक लेपल कारिख
> मैथिल दुजन मानि- मैथिली महुआ चारिक॥

जनोदय प्रकाशन, २३/१, डा० देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००२३ के लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पायनियर आर्ट प्रिंटर्स, १२-बी, इन्डियन मिरर स्ट्रीट, कलकत्ता-१३, मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अंक—२ फरवरी, १९८२ मूल्य—पचास पाइ

सम्पादकीय

खगता मिथिलाक्षरक

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संविधान बिनु मैथिलीक श्री
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
छाहि-धारि शुद्धइ कथ हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

मिथिलाक जन-आन्दोलनक सन्दर्भ मे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

• लाल मैथिली

[illegible]

मिथिला विभूति महाकवि डाक

[illegible]

(शेषांश पृष्ठ ५.३८)

[illegible]

— सम्पादक

पाकिस्तानी कथा-

इफ्तारी

भोरहिसँ उपवास छी। नवीन के ... [illegible]

'अल्लाह अहाँक मेहरबानी पर हुनका कराउ'—... [illegible]

'नवीन ! ओ नवीन !!' ... [illegible]

[illegible]

× × ×

[illegible]

वस्तुतः नवीनाक राजनैतिक उत्थान सेहो दिन-दिन बढ़ैत गेलै, अरानगक उतीव उँचा चढ़ैत गेलै। नवीनाक प्रताप उनका मे सो सारा ठाढ़ बहुत अधिकार भसार। कहियो -कहियो दिव हमरा ओकनि के भंवान हयत'। येर कहियो कमरा बकनो हरे छोट भर् मे बचा छोडि बहुत नेताइ उचित नहि। बहुत कम्मा कहाँ दिनक सेहो आ हमरा, नवीना सेहो बाबा भे राजनैतिक कार्यक्रम देखार म लेकक ठाकन बचपन बाबा बहुतक मे आइल नवीना देल ओकरा नीक कतहु ज्यादा काम रहतै। आ नात चैताक बाद लोकनीक उत्थान मे सादि गेल।

के मे होइ, साल बाढ़ु, कम न कम साठी सँ, सेहो दिनकहि नहि मुश्कोल आ दरोड़। ओना दोब-भाहिन सँ ओ इच्छ कहियो मे पारिवारिक कहल मे ठेला मे बाहि बिवाह मे पराजित मे होइ छइ। दोड-महिला लोकैत—पहिलहुँ केवाया विवाद क क बढ़ि गेल।

किन्तु तखन बाद ? नवीना कत्तहा बुढ़ि गेल आ देख-देख सेबक छोड़ि बाजार सँ आन किछु मा नहि बाते, से आइल ओकरा मे नहि छइ।

धीरे-धीरे अकाक कानु-कानक नविक किछु ओकोक आ कम्बरी कर्म-कारी करी सौमाव्द भ गेलै, से सब दिन-भरि टाकाक जिम्मा मे लखन रहैत छल। नवीना मे स मे बाट ओकरा सेब कहवाहि कोन होइब कसम हुआ मे भावक नहि रहले मे नवीना ओकरा दकाली हुवैछ छइ आ मगद्धि-प्य पुरावो कों छइ। नवीनाक पुत्री सँ ओ लीक निपत्र म काड़ा से बताली-बसाली ओकर हुक्म लावल भरा मरैक इच्छा होइछैक। सक हरीनाक कन्हारा, भारा बेगाइ करि पुत्री सँ नीक को लौरोल।

इच्छाहीक बन्द भ गेलै। आलायन छला देख। कह गोरे बरेहा पर आ छाती काड़ कहते मे ब्याह। नवीना सिबको आ छाड़ि नीचा बाट पर देखि रहल छथि। मरीनक मारा छ बाक सेहे देले ओकरा पन के बढ़ नकान मे बला। बाज तब सेहो ओकरा पूड़ि निहारैत आनन्दतोन म दैव छल। ताइ पर बजार उदासीनता देखि ओहो सब बात केही हमि नहि देल। आ ठीक बढ़ि समय ओकरा सभक व्याप्त केन्द्रित रहैक अलक नवविद थ8, कतय सँ से कुनू, सब आबानक बनर सुनाइ दौड़ि सबे अपले।

कुनू साली सँ बसो बूढ़ बीबसंगा खेलतमेहल आदि हाजिर मेल। हाथक बाली पर भार देखक बाबी को बनन देह मे सोना बनि क पानि रहल छल। ओकर बर्बाद को अपले। नवीनाक मनालक सम्मनेक बाद पार करैत को सेहा इकोर देल हो आ ते बसो देवाल मे पीठ सका ठाढ़ भ गेल।

नवीनाक नानिहा सभा अपनाम सेहो डा 'निहको' छा आदि गेले। ओकर नबरि सामने बीबसंगा पर पहले। ओ पुछलके—मां देखही त, ओइ बीबसंगाक हाथ मे की छइ ?

'ओ बाजत रोसिंह् बेटा, मरिशक केबाक बुन मच्छ देले ?

—तकरा बाद किन्ह मे छइ ?

—म सरोड़ मे रोसा रखले हो आ हे बाबाक बाट हसेहो हो।

—हो रोसा कथि करी है मां ?

नवीना बतोव मेहा दिन देखि कठे शिष्ठु-देश सब मबाराक बुलो जिज्ञा देखले।

—तकरा आमलाज मे इस्लेमाट के बहत्तहिन ? ओ पुहि मामक रहूजिन ?

नवीना शिशु हौचि बाजलि—ये बात ही बाबन बानोबाल सँ पूछि लिजहुन।

—किन्तु मां, ही किछु मे रोसा करै ऐ ?

नवीना चितैब सँ बेटा के हुलसैत बाजलि—ही नहि करै छै बेटा—ही।

—तुम त बचा छौ। बाद कौ छइ के हे रोसा नहि करैछ तकरा मे सि नर्क मे बाय पड़ै छइ। बम्हा—हमरें बेहरा होइ छइ माँ ?

—नहिं ! हमहू त हमरा ओकोनिक बाबादि बात—सीता मे। तीर पुत्रक तंत नवीना बहलके।

अतातम बाबहु बाक पर हसेहो पुछल के—काहन ?

—बीचा मे—हहद माय ओ नौल-लंगा ठाढ़ छइ, बात ओहार, कुम्हार, तली, कोबिहार सम रहैछ।

—कुरा बाद त बड़ी कम्पि म नर्क मे भाजि होइ छइ ?

—ई होना, होकै।

—मा सबरों बेहरा होइ छइ ?

—हमड़ छइ सबो बाप की, हम आ छोहर बाढ़ पड़ै छहुन। बाढ़ सब देख-देख, बाक हुकरा बबकमक करैत पर छल छइ। मानिराप नीक-नौकुर मेवाक, नीक-नीक सहियाक केक, माना मध्यु सेकबोता सब छइ।

—काहर मे हमरा सिबक मे हम सबौं मे रहैछ ?

—बाहल ब्राहेक बीज बानका सबों मे नहि बालक हे छइ। ओकरा बन सँ बाब कर मे छइ आ पेट भजिया क नर्क मे देखि दे छइ ?

—आ कहे सब बाबहुरों म बाइ छइ ?

—ई होना, नर्क बाबहर ओक सँ भाल छइ।

आ ठीक घड़ी हमरा भाबानक बनर सुनाइ पहले। मरिशिष्तुक उलाइक बाल-हिक बीबबाक संब समर्थित मेल रंग-बिरंगक आतिशवाजी। बात सब बरकत बरब आयल।

ओ बूढ़ बाबाक प्रार्थीना बतन हाथक माथु इंद मे देखाक बराए मेबक पराम उपेक्षा सँ ओकर हाथ बायक लगलेक आ इकास मधुर करि बहले। देहन पर आइ क ओ मधुर उठेबाक प्रयास करब अरानेल। ओकर कोरा मधुर करि बाड़-बाढ़ आ देहरी सँ बसो कुहर आदि लुटि लेबले। किसो आर बरकल कुहुर लूटि गेले आ कतहुक बरय लागले। दुर्बल करै हुकुर सब के इसारेक उपाय देबक परम्भ हुकुर प्रभक बासाक बात देख म रेलै। मुख आ बरबेता त मधुरक ओर बूढ़ माटि पर बहि बहुत सत सबा कहाँ बिलुफल कायक। औहरि बुति दू को बाल बारानि बमरा बाबक देखाबक आ पुत्री सँ हेवत लागल।

'मां !' भाइक बाबा हुद पुबकोले देखाबक आलापन निकलिका क बानैल बानबोलक। आ इबह उनका ओकर मनोब मन नर्क सम्बद्ध महत बादबना उतबनिव देखक।

'अपमान' ! बात बाद दिन देखि नवीना पुत्र बालक बहरें बाबले सँ आबलि।

'मां !' भाइक कहे बेर अवाकल बजलै।

नवीना ओकरा कोरा मे उठा छाती सँ साटि लेलक आ आँखि निरखैत भावक, बोलि उठलकि—बौना, सब त क तो बाब सँ नहिये हयत बाबा कोहि बाड़ सँ बाब कबरो नर्क मे बाब नहि बाब पड़े ?

—बाद तो मां ! ओहु पहले किसे !

—हम ! हम की बाब कह ? हम त बड़ी बहुत मे मन देख बूढ़े भ आयब—

—तो त कनिको बूढ़ नहि छै। बाइ कका नहि। आ ही नहि पहले मे हम बाब बन सँ बलाबर न आयब।

—ठीके बौना ! हम बिलकु मे बायल सोना बेटा दें भरतार होमय देब। इन्हु बड़ इकनी छल।

—रवीन्द्र महान्न
मैथिली—अमृत

तू मोर मीत

महा जागरण गीत/ककबा पियानक ठेक

बहड हौ बियान भइया गरजइ जिनिमा !
गुमन सँ बहड़ल बाय दुनियाँ जगगमा !
राष्ट्रीयीक एक नवक मुड़ुवे बनेहा
सुरुप बिमान भाड़ि मन्सीक, चेरा
दूधे दूधे महड 'सोम' मान मान असमा ! बहड०
हाथिय सँ देहा हैने पौती मडैरिया
ओरे अथाल्ल पर मे बाड़ुत समरिया
मोड मोतिदखगडा बलाकिया सजनमा ! बहड०
रहड मे बहाला कमने
सुबहैर पडा धमने
अपना बलम सँ महिहड सुबहैर बहनमा ! बहड०
—सोमदेव

मिथिलाक बखान

तीन काल मे, नदिया मे नदिया बहर बिच पहाड़े हो
बिराजे माथे
रामा हमरो मिथिला देश हो बिराजे माथे ॥
तीन लोक मे सुन्दर मिथिला बायस ओ मनमायक हो
सोनाबोड़ लागै
रामा चढ़ै माथ पहुनमे हो सोनाबोड लागै ॥
सीधी से फुलेरे रामा बनियो से फुलेरे हो
फुलहर गेले
रामा बन के फलफुलवा फुलहर गेले ॥
सासु ससुर पिरयो बागी सब बहिने हो
अबेया मेले
रामा पहुना राम बरान्तक मधु अबेया मेले ॥
सीढ़ै बबर बसाव दुलहि के बेनिया मधु डोलावे हो
बहाये छाते
रामा कोहबी कनिया चढ़िहन नीच बहाये छाते ॥
—राम लोचन ठाकुर

बाल-स्तंभ

वाचस्पति मिश्रक जन्मस्थान मिथिलाक तीर्थस्थान

षड्दर्शन टीकाकार वाचस्पति मिश्र कहिया जन्म लेल कोन स्थान केँ विभूषित करलन्हि ई हुनक कोनो ग्रन्थ मे स्पष्ट उल्लेख नहि अछि। मधुबनी जिलाक अन्धराठाढ़ी पूर्ण मे एक ठाम स्थान छैक, जाहि मे वाचस्पति मिश्रक नाम जोड़ल जाइत अछि। [illegible] परम्परा मे ई कहल जाइत अछि जे वाचस्पति मिश्रक आवास तथा विद्यालय एतहि छल। ऐतिहासिक ई परम्परा [illegible]। [illegible] वाचस्पति मिश्रक आवास मे उत्तर [illegible]। एहि स्थानक नाम अन्धराठाढ़ी [illegible]। [illegible] राजधानी [illegible] अन्धराठाढ़ी नहि [illegible] द्वितीय [illegible] सम्बोधित होइत। [illegible] डा० [illegible] भूमिका मे [illegible]

ग्रन्थ मे विभिन्न मत [illegible] डा० [illegible] डा० उमेश मिश्र पूर्ण [illegible] नहि अछि। पं० श्री वासुदेव झा [illegible] विद्वान [illegible] अन्धराठाढ़ी मे [illegible] राजधानी [illegible] तथापि वाचस्पति मिश्र [illegible] अन्धराठाढ़ी मे अवश्य रहल होएतन्हि। वाचस्पति [illegible] [illegible] वाचस्पति मिश्र [illegible] टीका मे [illegible] विद्वानक [illegible] टीका [illegible] अस्तु! [illegible] वाचस्पति मिश्र [illegible] मिथिला मे [illegible] मिथिलावासीक पुनीत कर्त्तव्य [illegible]।

— अनिल "सुधा"

बाल-कविता

छद्योग

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित [illegible] 'कल्पवृक्ष' उद्योग करब।
[illegible] मातृ भाषाक हितक हित [illegible] ॥
[illegible] भाषा [illegible] आन्दोलन मे आयबु।
[illegible] भाषा अधिकार [illegible] ॥
[illegible] ।
मिथिला-मैथिल मैथिलीक हित [illegible] 'कल्पवृक्ष' उद्योग करब ॥
[illegible] मातृभूमि [illegible] भाषा [illegible] ।
मिथिला मैथिल मैथिलीक हित [illegible] 'कल्पवृक्ष' उद्योग करब ।

— भूतनाथ

मिथिला विभूति ......

[illegible] कर—
'[illegible] ।
[illegible],
[illegible] ।'

[illegible] छल। ई [illegible] नहि, अपितु [illegible] अछि।
[illegible] —
'[illegible],
[illegible] ।
[illegible],
[illegible] ।'

[illegible] समाजक [illegible] अछि।

'[illegible] मुनिक,
[illegible] ।
[illegible],
[illegible] ।
[illegible],
[illegible] ।'

[illegible] उदाहरण अछि।

महाकवि [illegible] कवि [illegible] ।

[illegible] मे पूर्वकाल मे [illegible] कवि [illegible] महाकवि [illegible] ।

[illegible] मैथिल [illegible] ।

— सुशोभना झा

लाल बुझक्कड़क चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी, महोदय जी!

[illegible] हमरा [illegible] चिट्ठी [illegible] ।

[illegible] गाम [illegible] ।

सम्पादक जी, [illegible] ।

सम्पादक जी [illegible] मिथिला-मैथिलीक [illegible] ।

सम्पादक जी, [illegible] लाल बुझक्कड़ [illegible] ।

[illegible] ।

[illegible]

लाल बुझक्कड़

सभा-समिति

दरभंगा १० जनवरी, ८८। आइ प्रताप डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक अध्यक्षता मे विद्यापति पर्व समारोह मनाओल गेल। समाजी कहलनि जे लोकनाथ धूम है वहिक विशिष्ट आयोजन भेल। तदुपरान्त भाषण करैत डा० कांचीनाथ झा किरण कहलनि जे मैथिली नामी देश नाम चलनिवेद-नावक विचार अछि। श्री संस्कृत आ हिन्दी के पोषित अछि। कामरि पर, मन्दिर आ न्यायालय भाषा बल नहि होयत, तावत हैं सूत्राप गिरहमे रहत।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर कहलनि जे मातृभाषाक माध्यम सँ शिक्षा नहि देबाक कारणें बहुत अनेक दिनक बाटो शिक्षाक परिवार—समाजक मन्दिर पढ़ीय सँ बहार नहि छुटकल अछि।

आचार्य सोमिन तिवारी कहलनि जे अपन अधिकार हेतु सुविधा, सी० डी० ओ०, विद्यालय आ संघर्ष लोकनिक मैथवी कल नहि सँ सरकारी कार्यालय मे मैथिली भाषा मे काम भड़ रहल।

श्री सुभाषचन्द्र यादव कहलनि जे मिथिलाक लोक मे संघर्ष चेतना जगयबा हेतु विद्यापति पर्वक उपयोग करबाक चाही।

एहि समारोह मे मंच संचालन कए रहल छलाह श्री भीमकान्त।

कवि सम्मेलनक संचालन करलनि श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर। एहि मे भाग लेलनि मणिपद्म, किरण, चन्द्रभानु सिंह, अमर, प्रभासी साहित्यालंकार, भीमनाथ, उदयचन्द्र झा विनोद, ज्योतिवर्धन, सोमिन तिवारी, मदन कुमार, विनयेश्वर मिश्र प्रो० डा० दयानन्द झा, प्रो० देवकान्त मिश्र, अदीप मैथिली पुत्र इत्यादि।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मे अपन आकर्षक गीत सभ सुनौलनि शशिकान्त सुधाकान्त, चन्द्रमणि, कुन्ज माया कान्त, समन कुमार आ गंगाधर आ। एहि कार्यक्रमक संचालन क रहल छलाह सौरभ झा शशकान्त।

विद्यालयक छात्रा लोकनि ऊषा, इन्दु, किरनी कार्यक्रमक आरंभ विद्यापतिक नचिहाउत्तिक गीत सँ कयलनि।

आचार्य सोमिन तिवारी राजस्थानी भाषी आ दामोदर कात हाजक मृत्यु पर शोक प्रस्ताव करलनि।

विहार लोक प्रशासक अनुमोदन करैत लोकनाथ बिहार सरकार सँ मांग करलनि जे मैट्रिक परीक्षा मे निर्धारित मैथिली तथा नव पाठ्य अनुरूप आ छात्र लोकनिक हाथ सँ बाहर अछि, तैं अनुभवी शिक्षक लोकनिक नव सम्पादक मण्डल नव सहायक ग्रंथ सम्पादन करय।

धीरा उच्च विद्यालय दरभंगाक प्रधानाध्यापक श्री लिट झा स्वागत भाषण कयलनि आ कार्यक्रमक अन्त मे धन्यवाद ज्ञापन कयलनि विद्यालयक वरिष्ठ शिक्षक श्री लोचन झा।

★ लेना कि वर्षामे कहलनिहें जे ई आयोजन एहि संस्थाक वहिक विशिष्ट आयोजन थिक जे सँ कार्य त बहुत पहिने सँ प्रयास भेल श्री भीमकान्त जे छनि जे हलादि ने सबैओ छोड़ि दरभंगा मे मेला लगओलनिहें। किन्तु एहू बात के अस्वीकार नहि आ सकैछ जे हुनका लोकनि सहयोग भेटलनिहें अथवा नव पर आयोजन सफल न होइछ। इतिहास ई साफ आइ जे मैथिल चेतना जुड़त नहि आइ अपितु पुरूपारम्पर्य ते रहत आइ अवहर सकलोहि जे अपेक्षा केल मैथिल पर्यावरण सहज अनुमान पर्याप्त छइ जकर निरन्तर प्रवाह रहतैन्ह।

एहि अवसर पर किरण जी कहल जे मैथिली भाषी देश भरमें स्वनिर्देशात्मक विकास भइ सकलनिहारू छल अइ। सतवनिवास भय अइ जे मिथिलाक्षरक संरक्षण हिन्दी द्वारा शोषित होइत आबि रहल अइ आब एहि मे मिथिलाक्षर उर्दूक समकक्ष बिहो रहतेक। तँ आइ आग मैथी आयोजन लेल जे मन्दिर-मसजिद, स्कूल आ बलक भाषा एक मात्र मैथिली हो आ एहि लेल भवाहि के कुनू मूल्य चुकायल पड़त हमरा लोकनि केँ तैयार रहक चाही।

पहाँकरि मैट्रिक परीक्षाक निमित निर्धारित मैथिली पाठ-पत्र संग्रहक सम्पादक मण्डल भइ जाया सम्बन्ध मैथिली भाषी छाहि सँ संग्रहक हेताइ जे हुनका विषय शोक हेतनि। करेब सम्पन्न त ई अइ सहज करित वितइि ता जे श्री समरशाक उपलाभ न सकेछ? सरकार मैथिलीक हित चाहैत नहि अछि लोकता जा एहि प्रस्ताव कुन, समान पट्टक सं प्रस्ता कहइ नहि मा सकेछ। श्री मायानन्द मिश्र जे सदर सम्पादक लोकनि जे तिरिकते मैथिली भाषी विधान हमि हुनका लोकनिक आबि सुझकनि आ लोकन कहि काज सँ आमा के पराक ताकि समपूर्ण लोकक लेल स्थान कार्यो कएलाइ? कोर्षेक कालक निमित मानिली जे कहो लोकनि जे नहि व विहारक सुरक्षामी भगवान मिश्र कहा मातृभाषा सूची मे अपन नाम लिखैनाइ मे कनाम भूमरी त जी प्राप्त शिक्षक लोकनिक एहि संदर्भ मे कुनू कर्तव्य नहि?

पहाँकरि हमरा लोकनिक विचार अइ जे एकर समाधान छात्र-शिक्षक लोकनिक हाथ मे छनि। श्री लोकनि निश्चिते एहि निमित्त प्रयोजन भेले पैथ सँ मैथ आन्दोलन छलनिक व सकेत छथि। छात्र आ शिक्षक लोकनिक संगठन सहितू सशक्त भए जे सरकार के समक्ष उद्देश्य आ आवश्यकता मैथिल प्रतिरूपक बाद परिष्कार न सकेछ, मातृभाषा मातृभूमिक मर्यादा बढ़ा सकेछ।

★ कलकत्ता, १२-१२-८१। स्थानीय विद्यापति भवनमे मैथिल नवभारत वार्षिक समारोह मैथिल संघक वहिक तथा मेक सफल सम्पन्न कहलनि मैथिलीक मनोहृद ठेवाली श्री हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु'। एहि अवसर पर मिथिलेन्दु मौच अतिरिक्त अन्यो बाबू साहेब चौधरी, रामलोचन ठाकुर गोविन्द झा सूर्यनारायण झा, चन्द्र किशोर मिश्र आदि सेहो लोकनि संस्थाक प्रति अपन-आपन शुभकामना प्रकट कहलनि तथा पहलनि सुभाष आवहलि देलनि। मिथिला मैथिलीक वर्तमान विकास हेतु एकजुट स काम करबाक आवश्यकता पर जोर देल गेल। संस्था दिस सँ संयोजक श्री बैद्यनाथ मिश्र आगत अतिथि लोकनिक प्रति आभार प्रकट करैत संस्थाक उद्देश्य पर प्रकाश देलनि तथा अनुभवी मैथिली सिनेमी लोकनिक स्वनिर्देशक आवेदन कहलनि।

तकाल श्री बैद्यनाथ मिश्रक संयोजकता मे एको दहहुक कमिटीक निर्माण कहल गेलइ आइ जे सँ श्री रामदेवी ठाकुर, रामनारायण कुमर, सुरेश झा, चन्द्र कुमार झा, नवल मिश्र सदस्य रहताह-ह।

★ मैथिली मे प्राप्त संख्या मनेत रहल अइ संस्थाक निर्माण मेहि नहि कलकत्ता लेख भारती मिथिलाक मैथिलीक वर्तमान स्थिति मे। करेय संस्थाक निर्माण भेला अमा मे कुनू महत्व नहि रहेछ महत्व-पूर्ण होइछ ओकर काज। एहन कारण छैक जे कोनो संस्था आवश्य पालि गेल यानि वादे मिथ्यदंस नहि छल कहयी के कारियावे करैत रहल। नव जागल मैथिल संघ एहि कहयीक विपरीत अपन कार्य सँ अपन अस्तित्वक मान मैथिल समुदाय केँ करायैत तथा मैथिली आन्दोलनक कायामी इतिहास मे अपन स्थान बनाओत से आशा हमरा लोकनि करैत छी। विकास अइ जे सफर कार्यकर्त्ता लोकनि निराश नहि करता। 'मैथिल प्रभातक शुभकामना।

*

> **मैथिल प्रभात**
>
> **प्रबन्धकीय परिचालक समितिक सदस्य**
>
> १ श्री मदन नाथ झा, कलिकत्ता
> २. श्री उदय कान्त मिश्र, कलिकत्ता
> ३ श्री बैद्यनाथ मिश्र, कलिकत्ता
> ४. श्री राम नारायण कुमर, कलिकत्ता
> ५. श्री अक्षत चौधरी, कलिकत्ता
> ६. श्री रामानन्द मिश्र, कलिकत्ता
> ७. श्री महेन्द्रनारायण लाल, कलिकत्ता
> ८. श्री हरे प्रसाद, कलिकत्ता
> ९. श्री विद्यापति झा, कटौनी
> १० श्री राम किशन, राउरकेला
> ११. श्री नागेन्द्र झा, ,,
> १२. श्री के० के० मिश्र, ,,
> १३ श्री बी० झा, ,,
> १४. श्री सम्पर्कल, ,,
> १५. कुमारी ज्योति झा, दिल्ली
>
> मैथिल प्रभातक संवाद प्रतिनिधि
> श्री सूर्यनारायण मंडल— नवकी दिल्ली
> . अनिल सुधा—विशेष मिथिला

मैथिल प्रभात चन्दाक दर :—

एक प्रति—	पचास पाइ
वार्षिक	बीस टाका
सदस्यता ' बारह प्रति	बीस टाका

विज्ञापनदाता लोकनि सँ—

'मैथिल प्रभात' मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाउ। सब वर्ग मे सुन्दर ढंग सँ अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू

विज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन

अरुणोदय प्रकाशनक प्रसिद्ध पुस्तक प्राप्ति :—

प्रतिध्वनि

माओ त्से तुङ, हो चि मिन्ह, लु शुन, नेरुदा, ब्रेख्त, अदुनिस, गुन्टर ग्रास, मख्दुम, हार्वेय, लोरका हिकमत, ह्विटमैन, यीत्स ओ नाजिम, डेविड डियोप, शैल अवस्थी, आदि विश्वक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कवि लोकनिक चुनल कविता सबहक मैथिली रूपान्तर।

दाम—मात्र टाका मात्र

संकलन, सम्पादन ओ रूपान्तर

राम लोचन ठाकुर

कहु लोचन कविराय

तेल दजोलक छल्ला किछ तेल शक्ति केर खान

तेलक बल लिबिया तथा तेलहि इरान-इराक विमान

तेलहि उड़त विमान तेलक संसीक कालन

तैं अमेरिकाक राज तेल पर कबूलक शासन

कहु लोचन कविराय कथा सं कहत पिल-ए मेल

पड़ता मे द नाहर गरीबक तेल अबैच तेल

अरुणोदय प्रकाशन, १२/५, डा० सुन्दरी मोहन एभेन्यू, कलकत्ता-७०० ०१४ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा मनभविष्य आर्ट प्रिन्टर्स, १२-बी, वृन्दावन बसाक स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अंक—९ मार्च, १९८८ मूल्य—पचास

सम्पादकीय

फगुआ

मैथिली मे कतेको तेहन प्रचलित कहबी अछि—जे कौखन से कोनो फगु ! फगुआक प्रयोजन नहि जे फगुआ जीवंतताक प्रतीक थिक आ जीवंतताक अर्थ होइछ आनन्द उमंग उत्साह । तें फगुआ आनन्द-उल्लासक पाबनि थिक । सामान्य आनंद उत्सव कहबी बुझल नहि ।

मनुष्य सामाजिक प्राणी थिक । ओ मात्र अपनी सुख वा दुख मे सुखी नहि रहइ त नहि रहि सकैछ । समाजक संग पराक अछि । समाज मे रहइ त सकैछ, बहु प्रकृतिक वा सामयिक प्रकृतिक मनुष्यक सेवकाई करइ सकैछ । तें फगुआ सामूहिक उत्साह उमंगक पाबनि थिक । पारस्परिक सहयोग, सद्भावनाक परिचायक थिक । बसन्त ऋतु मे प्रायः प्रत्येक मिथिलावासीक मन-प्राण मे पाबनिक आ सबैक—आह्लाद बर्ष, वर्ष, सम्प्रदायिक भेद-भाव बिसरि लोक—एक संग—आनन्दोत्सव मनबैछ—जिमहीत खेलाइछ—प्रकृति मे आनन्द द रहैछ ।

फगुआ समृद्धि संपूर्णताक पाबनि थिक । जकरा मन मे आनन्द उत्साहक वाहिक जकरा किछु दुइ चिन्ता छोड़ि आन किछु नहि भ सकैछ । पेट मे अन्न आ देह पर वस्त्र नहि रहैतो पराइ वाहिजन दैतेन रहैछ । तें भगवा सदि निकल्ला संगहि अतीक सामाजिक सिखाइ अनवाद थिक ।

फगुआ सामाजिक पाबनि थिक । जातीय पाबनि थिक, राष्ट्रीय पाबनि थिक । मुदा ई हमरा कोखनि कहबा नहि जे केओ मे मनोरंजन मानि रहल छी । परन्तु मनिचल कहियो लोकनाक कनतो नहि मुखल ने पाबनि मे वर्तमान संदर्भ मे हमरा मिथिलावासीक लेल कहि जातीय आनन्द उत्साहक पाबनिक कि परिवहु कुनू अर्थ शेष रहि गेल अछि ? की हरिबहु सोचितहुं त लिखतो अछि—मिथिला मैथिल मैथिलीक दोसर रूप रहैत ।

हमरा कतहुने मैथिल जाति मानि सुखक अइ आ सुख-शांति मे बचला, स्वतंत्र सहनशीलता के कारण 'लोकहिता पर रहिरहीं लग्नताइ' एं मैथो आन किछु नहि भ सकैछ । ओकरा से उत्साह उमंग के कारण 'सुखक नारी मे अन्तत मचवान के ताकवं' छोड़ि आन किछु नहि । ओकरा मनबुद्धिक नाम महात्मा गाँधी होइतो छल आ तें ओकरा के उदोर सुदि खाइ-अइ आ उत्सवो भगवान भेटिह आइ छथिन । राजहु ई—आत्मघाती प्रतिभा थिक । लोक सबका फगुआहि राति सौक—अलका आस के तकनाइ—संभव नहि भ सकैछ ।

आइ मिथिला जिन मातविन्यास नहि अछि, मैथिली भारतीय संविधान मे मान्य अइ ठैमिक अपना सदि पर-स्थान में पुरस्कार भइ । कहियोक त्रिभुवन विस्तार मिथिलाक नाम आइ ओकरा सकरो प्रभाव ने करि अइ । आइ मिथिला मे सैदो-दली पुरुषारी महत्वाकांक्षी लगा छेथ । आर्थिक विपन्नता हमरा रोइ के तोरो देने छैथ वा सरकारी उपेक्षा ककरा सैकड़ाका वा त मासिक धन आवहि हिलैत सरले सलावक सकाहल देकर नाम जाने मुदा देने छैथ । तेहन स्थिति मे आनन्द उत्साह उमंग करत जारी । ई मिल कथा ते ओरिजनल पहुक भविष्य भरीर संजीवक बानने मिलनाइ-ओसनाइ के ओकर जीवंतताक अर्थ मानि लिखल ।

बहुत बाढ़ के बाड़ी तिथि के जीवनपथ राखल के आरी संका विभव वैकति आ मैथिलीक संग सबोध्या सुरला । सीता समक आतपानक ठाकुरे मे ई जनताक खाने-बल लेल ठाम आ सरिता वं कविवर्ग होइत परि वासि पहुंचल । सीता-रामक विवाहक वाद्य भवन सामायिक के वैवाह आनन्द त छैथे संगहि सुलक विधर गावा भवानीक मिथिलीय नव मिथल, मान्वीय परिवक राजकीय आहितान्तर मिथिलक महान गाथा के कलना मे समेटले अछि । आइयो भाषाक कहल क्षेत्र मे रामक प्रतिमा भरामोक भाटक आ तकर मथक दिन रंग अबीरक संग आनन्द उत्सव ततासोक पाइछ । मिथिला मे बढ़ल दिन राशिमे 'सम्प्रति' भरामोक पाइक, रोशर दिल फगुआक उत्सव होइछ ।

ई अाधुक संदर्भ मे सीख संका विचार करी त स्पष्ट होइत जे मैथिली सकारो संभावक सदोक साहित्य मे नतमस्तक छथि । राम स्वयं हुनका रक्तबक आज मे संका देने हुनिका आ अब-हुनक वापस मेने नहि कहल फेर आनन्द चाहिक ?

> संविधान बिनु मैथिलीक औ
> मानचित्र बिनु मिथिला धाम
> छाहि-बारि छुइए अरब हुन
> विद्रोही मिथिलाक जवान

श्री मार्कण्डेय प्रवासी पुरस्कृत

मैथिली क सुपरिचित कवि आ लेखक श्री मार्कण्डेय प्रवासीक सद्यः प्रकाशित महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' कें वर्ष १९८७ क सर्वश्रेष्ठ रचना मानि साहित्य अकादमी पुरस्कृत कयने अछि । गत २९ फरवरी कें पणजी (गोवा) मे साहित्य अकादमीक भव्यता समारोह मे कविवर प्रवासी कें पाँच सहस्र टाका उत्तरीय तथा परम्परागत प्रतिमा अर्पित कयल गेलनि ।

समस्तीपुर (बिहार) जीलाक लक्ष्मा गाम मे १ मई १९४२ कें बहुत सम्पन्नशील कृषक परिवार मे जन्मल श्री प्रवासी सम्प्रति पटना मे 'आर्यावर्त' दैनिक क सम्पादकीय विभाग मे सेवारत छथि । हिन्दी आ मैथिलीक पत्रकारिताक क्षेत्र मे हिनक विशाल 'पुरुषार्थ की किरणें' आ 'भाषावादक' महत्त्व समन्वय रचनात्मक दृष्टिकोण आ व्यंजनापूर्ण भाषाक कारण हुनका विशिष्ट उपलब्धि मानल जाइत अछि ।

बहुचर्चित महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' क अतिरिक्त हिनक दूसरे काव्य संग्रह 'झारमे' 'अभियान' उपन्यास तथा विभिन्न पत्र-पत्रिका मे अनेक हाल मे प्रकाशित भाषा रक सहस्र रचना मैथिलीक मनूल्य धन मानल जाइछ । हिन्दी मे हिनको ई 'कविता बोलती है' तथा 'संकल्पनि' सन काव्य संग्रह एवं ऐतिहासिक रचना क माध्यम सं हुनका सम्मानित स्थान प्राप्त कयने छथि । रचनाकारक रूपमा श्री प्रवासी स्वस्थ बीस समाज सेवीक रूप मे हिन्दी आ मैथिलीक एक दर्जन सं अधिक संस्था सं सम्बद्ध छथि ।

श्री प्रवासी सन कुल-कल्प-रहित, मानिनु, प्रगतिनु, प्रतिभाशाली, विनम्र आ मितभाषी, साहित्यकारकें पुरस्कृत कऽ साहित्य अकादमी वहिह मैथिली क उमर पीढ़ीकें सम्मानित करबाक अछि । ई बहुत नीक पहुंचि अछि, जकरा हमरा लोकनि स्वागत करैत छी । 'देसिल-बयना' परिवार प्रवासी जी कें पुरस्कृत भेला सं अत्यधिक हर्ष आ गौरवक अनुभव क रहल अछि । यदि यशस्वी परिवेश मे आ बसंत क मधुमास क रूप मे परिवार श्री प्रवासी अभिनन्दन करइत अछि आ कामना करइत अछि जे ओ अपन विशिष्ट सर्जनशील प्रतिभा सं अहिना मैथिली भाषा आ साहित्य कें समलंकृत करैत रहथि ।

'देसिल बयना'क अगिला अंक मे पुरस्कृत महाकाव्य 'अगस्त्यायनी' पर श्री बुद्धिनाथ मिश्र क समीक्षात्मक लेख प्रकाशित भऽ रहल अछि ।

बसंत केहन होइछ !

घर क दैवाछ क बहुत फलाफल
खेतिक क सोंध आगिक धुँइ
नहि दैवाछवा चूल्हि
बाड़ी बारी-कारबाद उजाड़ी
पैसैं सागर बाड़ी
बनिया बैंकाक क सगाढ़ा
पीवा-पुवाक भरल धाय-धन
पीमर बन्दय भरि
हम तें नहि बूझे जी
की होइछ फागुन,
की होइछ बसंत !
तें अहाँ बुझैत होइ तें
कने हमरो कहा दिय
बसंत कोन बाट मे
आबि कें
बटकि गेल अछि !

—बुद्धिनाथ मिश्र

□ □

तें ई आवश्यक ध्यान मिल के हम मिथिलावासी कहि संग अवसर पर अलमारीक बहुता-सहयोग-सद्भावनाक सौहार्दपूर्ण करी—जातीय मुक्ति देखिकोक मुक्ति, मिथिलाक मुक्तिक संकल्प ग्रहण करी । आर्थिक विपन्नता, कुरिता-कुसंस्कार-शोषकता आ बाँहि बनल छैक सभी मिथिला-मैथिल विरोधी तथा अधिक सामाजिक शक्ति सं लड़बा, कहि कें अपन न्यायोचित अधिकार प्राप्त करबाक प्रतिज्ञा करी । तेखन स्वाभाविक उत्सव, आनन्द-उमंगक सार्थकता ।

लिखितक विभूति—२

लुइ एवं अन्यान्य पाद लोकनि

मैथिलीक प्राचीन बौद्ध चर्या के आइ-धरि उपलब्ध ग्रन्थक-रूप ताइ मे 'चर्यापद' वा 'चर्यागीति' नाम सँ प्राचीन मानल जाइछ। एहि मे कुल पचास वा तीन कम पाद मे २४, २५ आ ४८ म गीत नष्ट भेल सेहो जानने जाइत अछि। उपलब्ध सैंतालिसटा गीतक रचयिता चौरासी सिद्ध पाद लोकनि छथि, जे काण्ह आ कान्हु पाद सेहो कहल जाइछ, कृष्णाचार्य पाद आ कृष्णवज्र कहल जाइत छथि। ई भिन्न छथि वा एकहि थिक से संख्या चौरासीक मध्य आबि जाइत छथि। पाद लोकनिक नाम आ पद संख्या निम्न प्रकारें अछि :—

नाम		कुल पद
१.	लुइ पाद	२
२.	कुक्कुरी पाद	३
३.	विरुआ पाद	१
४.	गुण्डरी पाद	१
५.	चाटिल पाद	१
६.	भुसुकु पाद	८
७.	कान्हु पाद	१२
८.	कम्बलाम्बर पाद	१
९.	डोम्बी पाद	१
१०.	शान्ति पाद	२
११.	महीधर पाद	१
१२.	वीणा पाद	१
१३.	सरह पाद	४
१४.	शबर पाद	२
१५.	आर्यदेव पाद	१
१६.	ढेण्ढण पाद	१
१७.	दारिक पाद	१
१८.	भादे पाद	१
१९.	ताड़क पाद	१
२०.	कंकण पाद	१
२१.	जयनन्दी पाद	१
२२.	धाम पाद	१
२३.	तन्त्री पाद	१
२४.	लाड़ी डोम्बी पाद	१
२५.	कौशल पाद	१
२६.	आम पाद	१

चर्यापदक रचनाकालक सम्बन्ध मे सर्वसम्मति निश्चित नहि अछि। चर्यागीतक भाषाक सम्बन्ध मे विभिन्न विद्वान लोकनि के विभिन्न मत छनि। कोनो-कोनो विद्वान एकरा आठम शताब्दीक कहैत छथि तँ कोनो विद्वान एकरा बारहम शताब्दीक रचना मानैत छथि। सम्भवतः रचनाकार लोकनिक काल सेहो ताहि सँ निर्धारित होइछ। यदि सरहपाद लोकनिक मे सबसँ प्राचीन मानल जाइछ तँ चर्यागीतिक रचनाकाल आठम सँ बारहम शताब्दीक मध्य मानल जा सकैछ।

बौद्ध धर्म सँ सम्बन्धित रहला कारणे ई गीत धार्मिक दृष्टिकोण सँ सेहो महत्वपूर्ण अछि। चर्यापद मे वर्णित पाद लोकनि बौद्ध धर्मक सहजयानी शाखा सँ सम्बद्ध छलाह। ओहि समयक बौद्ध धर्मक स्वरूप तथा तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितिक ज्ञान एहि गीत सभ सँ होइत अछि।

चर्यागीत पर अनेक विद्वान विचार करैत आबि रहल छथि। बंगाली लोकनि एकरा अपन भाषाक प्राचीनतम रूप मानैत छथि। डा० हर प्रसाद शास्त्री आ डा० सुनीति कुमार चटर्जी सन उद्भट विद्वान लोकनि एकरा बंगला भाषाक रूप मानैत छथि। एकर तुलना मे मैथिल विद्वान लोकनि सेहो मैथिली भाषाक प्राचीन रूप सिद्ध करबाक प्रयास कएलनि अछि। मैथिलीक विद्वान लोकनि एहि पक्ष मे अपन तर्क प्रस्तुत करैत छथि। एकर प्रमाण मे मैथिलीक शब्द, क्रियापद, विभक्ति आदिक उदाहरण दैत छथि।

एहि बौद्ध सिद्ध लोकनिक रचनाकार लोकनि मे अनेक गीत रचल गेल। लुइ पाद, सरह पाद, कान्हु पाद, भुसुकु पाद आदि प्रमुख सिद्ध छथि। हिनक गीत मे सहजयानी साधनाक रहस्यात्मक वर्णन भेटैत अछि। प्रत्येक सिद्ध अपन गुरु परम्परा सँ जुड़ल छलाह।

तखनहुँ एहि मे सन्देह नहि जे चर्यागीत मैथिली साहित्यक प्राचीनतम उपलब्ध रचना थिक। मैथिली साहित्यक इतिहास मे चर्यापदक स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। ई हिन्दी, बंगला, असमिया, उड़िया आदि आधुनिक भारतीय भाषा सभक साझी सम्पत्ति थिक।

आइ युग मे लोकभाषा मे रचना करब सहज नहि छल। पाद लोकनि संस्कृतक स्थान पर जनभाषा मे रचना कएलनि। एहि लोकनिक कार्यक फलस्वरूप लोकभाषा मे साहित्य रचनाक परम्परा प्रारम्भ भेल।

संस्कृति विभागक हेतु ई बहुत आवश्यक अछि जे ओकर कोनो प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित होइक। एहि सँ पहिने कतोक संस्करण प्रकाशित भेल अछि, मुदा मैथिलीक दृष्टिकोण सँ ओकर सम्पादन नहि भेल अछि।

नहि जानि कहिया ओकर उद्धार होएत। हमरा लोकनि के आशा अछि जे विद्वान लोकनि एहि दिस ध्यान देताह — विचार के करत?

—सुलोचना झा

आबह हे शोणितक बुमकार

देव-भूमि कऽ अनेकाक नगरी कहो
ज्वालामुखीक द्वंद्व के ?
भुवन के कर्णधार बनने रहो
बाड़लक नृत्य ?
के मोड़ि सकत गंगाक प्रवाह के ?
कनकनाइत बसात कें रोकबाक सामर्थ्य ककरा छैक ?
के तोड़ा सकत हिमालयक माथ ?
के हँसा सकैत सूर्य कें आकृ ?
आगिक चिनगारी सँ
के खेलबाक सोहरत ? / आगि।
सह सह करैत चिनगारी !!
धधकबाक ज्वाला !!!
चिनगारी बढ़ कें पहाड़ रहलैक
आगाँ-आगाँ।
आ हेरै तुइलह
सोनू लोक, चोबड़ी भुवन के
पिटवैत बड़ रहलो—
हाथक ताकत कहा-सुनि
बढ़ो भरल क हेरै दुनिया के
मोड़ी बोल कऽ देलैं—
अत्याचारक पहाड़ि के
कसकना रहलैक
हैवल-हैव झुमाहो
धार्मिक जड़क सँ मुक्त हेबा लय
आगल तोड़ि रहलैक,
शोणितक बुमकार।
जे गड़ो मे दुबियाए अर्थ
टूटि जाइक फटलैक बचनो,
शोणितक पैनाल बहलैक —जे बढ़ो मे।
कमल-बदन मे जे भुज मे / निर्मल मलक बढ़ल
दाम-धुम-धुम शोणितक धार बहलैक।
बाजलोक नदा खानक पीठ पर
"नाच रे नाचें नोटें" बोलइ सब
सन-सन करैत छनि। / दुर्गाक नाका महिषासुर सँ
भाड़ा-कोटी अवगाह—
सन-सन करैत छनि।
आबह हे शोणितक बुमकार!
निश्चिन्त भऽ कऽ बढ़ऽ तों।
धार्मिक बलाक पड़ल
सराहे सुखा रहल छनि,
खप्पर मे एक बुन्द रक्त बिना
बहु पड़ैत छनि,
पीठ पर गड़ो चढ़ियाहल छनि,
बोरि रहक तखनहि सँ
खप्पर कें भरि दहक कण-कण सब
सुरा बहुत बाजो के,
भरि जाय हबका पिहुक मोट स
कनमल म, करबो काबी—
ताण्डव नृत्य।
आबह !
आबह हे शोणितक बुमकार !!
जल्दी आबह !!!

—रमेश

फगुआक उपाधि

कवि चूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र मधुप—लपट स लिपटिन भेल।
प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'—सुहारी से सिहारी।
महाकवि यात्री—पेट से पुरपुरा कलहक अछ।
कविवर सिरस—हम चारुसे लेब।
श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर—हम पेट्टी एक बात के।
डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणि पद्म—बाप अगिला बाड़।
प्रो० राधा कृष्ण चौधरी—व्याधि सुनबाक सुख।
श्री सोम कान्त—कम बंठल पहल ?
,, सोमदेव—डमरा पर टेकल आतम।
,, कीर्ति नारायण मिश्र—बिहर मे कहै छइ, तकरे धरि।
,, ईशनाथ—मानसरोवर कहिया आयब ?
,, रवीन्द्र गुंजन—बागमहुर चढ़ड़ मुरबाक।
,, धन चक्र—बस चल।
,, धीरेन्द्र दोषी—जनतकरे हमही दोषी नहि।
,, मदन ज्वाला—और मेड़े हे जिवा।
,, सुमन चन्द्र यादव—जिरिक के की होयत ?
डा० धीरेन्द्र (जनकपुर वाली)—लिखि अवते न छक।
श्री महेन्द्र मलंगिया—बमठाकातल रसिया।
,, रामभरोस कापड़ि भ्रमर—गोठ् खाड़ विआहि।
,, धूमकेतु—नव पड़ाठक तैयारो मे।
,, प्रदीप मैथिली पुत्र—वाहह बाछड़ छियौं।
,, चन्द्र चन्द्र झा विनोद—घुन के ओटे कविता तीन हाथक।
,, रमानन्द रेणु—बबल मद्या छे।
,, ललित—कापर कवे सिनाद।
डा० गौरी मिश्र—छिनिया केवल छी।
श्री मायानन्द मिश्र—मार्थक सुंड़।
श्रीमती लीली रे—बाप चुराहल अछि।
श्रीमती शेफालिका वर्मा—निहुरि गुह काटि।
श्रीमती शान्ति सुमन—विवलयुरपताल।
श्रीमती श्यामिला ज्ञान—बदबेआर काना के मामा।
श्रीमती नूनाथा—हटो! मंत्री जी के पहुँ से बोड़ रही हूँ।
डा० सुभद्र झा—विलिप कविता मन अछ।
डा० जयकान्त मिश्र—मैथिली हमरे पारक बढ़ौगा छी।
डा० सुधाकान्त मिश्र—बाप कहठा फूल लगाबी ?
डा० शैलेन्द्र मोहन झा—चरिताहल चढ़िका अछ ?
डा० रामदेव झा—दम्का काटि कोड।
डा० आनन्द मिश्र—चनहि विद्यापति।
डा० आनन्द नाथ शर्मा—मुंहेटी गंडक 'लट'।
डा० धीरानाथ झा श्याम—सुनाराड़ने हेव।
डा० जयकान्त मिश्र—डमरा मे नडुचालन करव।
श्री रमण चन्द्र झा—पछल छोकू छुनि।
,, श्रीकान्त ठाकुर (विद्यालंकार)—आर केतो चाचल छी ?
,, हीरानन्द शास्त्री—बड़ पक्का भार।
प्रो० श्री हरिमोहन झा—कन्हे ता खादा निभि म्हाठ।
श्री भारती प्रसाद सिंह—चहुला कते बेठेब ?
,, सुधांशु शेखर चौधरी—पकड़ल।
,, भीमनाथ झा—हमर बाधाग हुनक कोन दोष ?
,, गोकुलनाथ झा—चिक्कापार।
,, प्रभासी जी—छक स दाढ़ तोरे चढ़ि-दोखर नहेबो हे।
,, राजमोहन झा—दम गुनगुन सर्व छी।
,, कौलेन्द्र नाथ झा न्याय—दुमरा लेखे पान खान।
,, गोविन्द झा—केवल बेड़ल चाह करी।
,, गौरी नन्दन चौधरी कान्त—पोखाबक आदि।
,, कुशकान्त सिंह झा—हम की कान बिन चढ़ुके रहब ?
,, प्रभाष कुमार चौधरी—बने सुलरा लियड।
,, मंत्रेश्वर झा—मायब-पाखी पंजप्रेम।
,, मोहन भारद्वाज—कनी पहुँ बैसी, पक्की।
,, सुधानन्द मिश्र—ई चंद्राका राय ने।
,, श्यामानन्द रमण—सुकुर स खाडल नहि गेड़ौं।
,, बद्रम नारायण झा 'किरणि'—खुदवो ले कनीखा गड़ छी।

डा० इन्द्रकान्त झा—विद्यापतिक बेटा : पबड़ा कुच विशेषय।
डा० भागुको नाथ झा—स्वाद पुरुष गोसाइ।
श्री अग्निपुष्प—जनमलक लोक व्यापारी।
,, पूर्णेन्दु चौधरी—नेहल गुड्डुल्ला नहि छी हम।
,, विभूति आनन्द—छहा रहक पीब सिलक।
,, शिवशंकर झा कान्त—शिव मठ पर।
श्री सिद्धेश्वर—पानी आलूड़ पी मे।
,, हरगुलाब मिश्र—मार न छूओ भागु छी।
,, रवीन्द्र नाथ ठाकुर—सिनेमा मे काज करब छइ ?
,, महेन्द्र झा—गाबि सुनाओले है।
,, फजलुर रहमान हाशमी—हम मिथिले मे रहबै।
लखनौली : नौरोसा—बाम चढ़ु मन मेहल फरीर ?
पं० हेमनारायण झा—कोलिपेडल बड़।
डा० दिनराज शाण्डिल्य—भारती प्रकाशनक सितारा केन्द्र
श्री बाबू साहेब चौधरी—खोड़ छीदिन।
आचार्य रमानाथ—हम मैथिल, हे हम मैथिल।
डा० प्रबोध ना० सिंह—जाचर बलनक नामी सोशल
डा० वीरेन्द्र मल्लिक—प्यास लोचन दिन।
श्री सुकान्त सोम—लाइक्रसे बिसिहोल झुर (सुख)।
,, बुद्धिनाथ मिश्र—बाहाम कलकत्ता पहुँच गये।
,, राम लोचन ठाकुर—हम की को करब ?
,, अजित ठाकुर—हम आगा बलभेल नहि करब।
,, कुमार—बड़ है कोई न करे यहाँ प्यार
,, राजनन्दन लाल दास—पंडी, कलम को नारितवारी।
,, मिथिलेश दास—मांड़ पठौलनि बीरा।
,, जनार्दन झा—'मैथिल बचना' दोस कयल पड़ा।
,, सुशील—बरहो चक्र गेल—सेवक मिथ्या।
,, रामभद्र मिश्र—बाइस को माड़ी सोलव।
,, महेश्वर झा—बसन्त आवय दियो।
,, भद्र नारायण झा—भोड़ा खाओ बाड़।
,, श्रीकान्त मंडल—अबला पान।
,, शरद चन्द्र मिश्र—पड़यो हं भरो दे।
,, योगेन्द्र झा—पवित्र पापी।
,, शिवनन्द झा—हमहूँ छी।
,, कृष्णदेव नारायण यादव—बावलोकक इजोत।
,, राजेन्द्र प्रसाद यादव—हम किसी से कम नहीं।
,, भागवत झा 'आजाद'—ताड़ा कहिया सूतब ?
,, कामेश्वर राय—खेत बढुसे किसान।
,, लक्ष्मी कान्त झा—निर्बल के बल राम।
पं० श्री हरिनाथ मिश्र—धारी से के के भगड़ ना के पड़बी।
श्री जगन्नाथ मिश्र—छुछुइ, हूँ ऽ ऽ ऽ।
,, राजनन्दन झा—हम सन्तोषी माँ।
,, कुमुद रंजन झा—कनही बहब हमहूँ।
प्रो० नागेन्द्र झा—हम बोर्डगार नहि छूटब।
प्रो० रमाकान्त झा—भरे मे बेकल छी।
श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर—बौरिक पूजक।
,, बाबू दे ठाकुर—काटा बबूरा।
,, राज कुमार पूर्वे—भागले रहो।
,, दिगम्बर ठाकुर—बम गुन गोबर भेल।
,, रघुनाथ झा—खरा बोलनाक छी ?
,, विद्याकर कवि—बंड-मैथलोक अन्नाक।

नोट : महानुभाव लोकनि पं आशा जे श्री लोकनि सकल उपाधि पत्र श्रीमान मधुआकान्त श्री महाराजक रंग-भरोक कार्यालय सं पथा सिम लास क छेथि। बाद साहित्यकार नेता लोकनि के वहि बोध उपाधि नहि भेटलनि-हुनका लोकनि पं आशा जे नवका संवत के ध्यान मे रखैत हमरा लोकनिक असुविधा के बुझहि घा हमरे घाप नहि गमा सविनय आगामी प्रतीक्षा करथि।

समाचार-संकलन

दिल्ली सं सूर्यनारायण मंडल

नवकी दिल्ली, १४ फरवरी ८२। अ० भा० मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा इण्डियन मेडिकल एसोसियेशन सभागार मे [illegible] मिथिला विभूति स्मृति समारोहक आयोजन सम्पन्न भेल। [illegible]

[illegible]

विद्यापति [illegible] मिथिला [illegible]

[illegible]

बाल-मंच

स्वर्गलोक मे मजदूर

'लघु' जिनका हम देखल कहैछियनि, [illegible] मजदूर [illegible]

[illegible]

[illegible] Unions आ Trade unions [illegible]

[illegible]

—सुधा झा

दसम वर्ग

फगुआ समाचार

● सुनल मे आयल-ए जे प्रधान मंत्री श्रीमती गान्धी संसद मे [illegible] विधेयक [illegible]

[illegible]

—रामावतार मिश्र

सचिव

मिथिला मंच

[illegible]

× × ×

कलकत्ता, २१-१-१-८२। [illegible]

[illegible] प्रकाशन, ११/५, डा० [illegible] कलकत्ता-७०० ०१३ [illegible] द्वारा प्रकाशित तथा [illegible] नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-१ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री [illegible]

मैथिली मुक्ति मोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

देसिल बयना

वर्ष—२ अंक—४ [illegible] पूस—माघ

संविधान बिनु मैथिलीक की
सम्मान बिनु मिथिला राज
[illegible] हम
विद्रोही मिथिलाक जवान

सम्पादकीय

भीख नहि अधिकार चाही

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रमएव जयते

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मिथिलावासी कें अपन अधिकार चाहिऐक। [illegible]

[illegible]

[illegible]

समएक लगने'''

ठाहग'क सत्ता पैसाक नारो सगर स्वी-स्वार्थ सामन्तक आवसमवृत्याजीत पुष्टि नहि क सकेत। यात मे इन्दिराजी यदि कुछु अब मे सं बहत विवश चाहैत छथि।

आइ देश मे अनेक अन्दर होइ छइ ताइ अन्य लोक बेरोजगार नहि होयत। किन्तु महान नायक सबै मे कम्पीनियो इहलौक संख्या मे बेरोजगार अछि। स्वस्थ भइ मे अलग देश मे पाव निकायक योजना नहि अछि। अतः योजना रहितो त कोनो कम्पीनियर केँ बेरोजगार हैवाक प्रश्न ने उठैत। आओर अपना देशक इन्जीनियर डॉक्टर-टीक हैत बहुतेक बाहरी संस्थाइ आमक मनि आइ नहि होइत।

आज त आज, पूरा देश मे ऐसा आओर ऐतीक संख्या मे रोजीना वृद्धि भ रहल छैक, किन्तु अपना देशक सरकार बेरोजगार अछि। यदि तमाम बाबाजी ओ इन्दिरा गांधी आसक विवश चाहैत छथि त यदि मे हुनकर कौन दोष ?

इन्दिरा गांधी बहुत बाइ लोकतन्त्रक संग अनेक विषय चाहमनिहि, गाही लोकतन्त्रक संग बीस सूत्री केर विकास देखी चाहैत छथि। ओही लोकतन्त्रक संग ओ स्टिल दिन बड़ो कहकनि ओ 'अमीर चाहे आर पैसो अमीर विवश ने भ रहल हो किन्तु गरीब-कमजोर गरीब नहि भ रहल अछि।' बुझि पड़ैत छेना अपना देशक गरीबक हुनका प्रतिफल सुख्मा भेटैत होनि। ओना समाहर दीर्घ दिन सँ ओ यदि बात केँ दोहरा रहल छथि के चीज समूह दाम घटि रहल य। ससंथ समाज धर त ई किछ मे सरकारी-गैरसरकारी आफिस मे प्रत्येक कार्यालय महगाइ भत्ता बढ़ि रहल छैक। मनर जीव-भाइक दाम घटि रहल छैक तखन महगाइ भत्ताक बढ़ताइक मतिया त कैसो ज्योतिषीह क सकैत छथि।

ओना म सन्तेक मैं कोनो दिन लोटै चीज हुतिवैं इन्दिराजी के मन मे ई बात आयल होति जे पहिलका समस्त जात पुरान भ गेल, तें बीसवर सैद्ध के बाद नव कोशपक बनाया छैक। हुनका नागरिक बड़ो मैन होनि जे बाद संस्थाक मे पहिले कोन मन करैं सं हिन्दविकाहरत नहि छल, सतो भाइ-भाजि तारा कैसाहल देखाइ पड़ि रहल य। जेना कि जैन कर्मचारी, कोपका अधीनक वरिष्ट कर्मचारी। हुनका बड़ो दुमायक होनि जे देख के ठेरी सँ समनाइ समक प्रति असन्तोषक कारण किछ। तें सौ तारा देखनि कि हे राष्ट्रीयकृत संस्थानक कर्मचारी लोकनि बाबी बाहीं नम के अन करे मे कलेसक नहि चाही। किएक त मनातरा बीत बने के होइत छैक।

अर्थात आज सब नहि विवशी म सकत। सब सँ ऐम चीज अप किछ। हुनकर यदि नाम केँ यदि सब लोक संधी-ताते हं सहत काय त जेता सुठ आवश्या मे कार बेसो नहीनम छुक कराइ। बेरोजगार नवजुवाल के अर्भाताल आ हुनाधक बारनै साथ दिया मे मैन पड़ा सुबक द

कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर

कविपति विद्यापति केँ सं मैथिली भाषा-साहित्यक जिता व्यापक क्यो त कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर केँ जिनु संकीर्णक व्यापक स्थान पर प्रतिष्ठित करबा का सकैत। दुर्भाग्यक बात ई बहुत भारतीय स्तरक अधिकारी, मिथिला-विभूतिक ज्योतिरीश्वरक परिचय हमरा लोकनि केँ बड़ विलम्ब सँ भेटल, आ आइयोधरि पूर्ण परिचय न हुअ पाय भ सकल। मात्र दिन सँ ई 'मिथिला-मैथिलीक' हेतु पुराकी ओर दिया ने आर मैसी छवित भ आयल। किएक त आज ओकर अपन विषय हैतैक।

यदि समस्त तंग ई। तखन बाड़ीक मन मे भटि सर्वेक मे आम अनक बीत हैतैक त कि पहिने अपना बीत नहि होइतछ छैक? त आइ, हमर एक विषय समाइ मान् जे यदि विषय अपन आर अपन नाम पुनि बनाउ। किएक त हमरा लोकनिक प्रमाण मंत्रीकेँ कहियो फाक रहल 'भारतभूमा' मनाक कल्पक आइति रहलनिहैं।

कोनहुना अपना कोलम नागरिक पुरान परम्परा रहल-अ। सुमाय चीन बड़ी छाइ —सौ हमरा एक है, हम तीसा आबादी देखैत।' एक निर्देश साहक आस कोहु मे छल। कोन एक देशक बेस हेमानी दैत। मनसा आबादी भेटहैत। किन्तु एक देश मे चोईक कहति रहि गेलेक आ हमरा लोकनि केँ से आबादी भेटल से आबादी आबादी नहि, कारण ओ लड़ाई सँ नहि सम्पत्तीता सँ भेटल छल। यही कारणे किछु समाक कहिया नहि हम भ सकल आ हमरा लोकनि केँ मातल देश क भाषा भेटल भेटि गेलाह। आओर मे हेतु मातल देल अपना सीत सुखी आ अपन व्यवस्था नहि स गेलाह आ तकरा उत्साह ने भारत केँ देखे गेलाह, तें उदह व्यवस्था इतिहास दुबारा फेरैत रहल आ कोहु मे बचन एक भेटैक त ओकरा संभव हैं आ ने इतिहासक कहाना देखायत। कोहो नागर पनि सूची लगइत क हमरा लोकनि बाला सायत छल।

आकादीक बाद व्याह मे जिनक 'सरकारी हाथ अन्यायिक अधिकार अछि' कहने छलाह, तकर बाद मातृक नेतालाक समाज कमरोलैनि। तें इन्दिरा गांधी इक-ताल मालोर उचित मौलिक छेल भारत अवकोलाह पर पाबन्दी लगा देलनि। तान बहादुर कहलनि—'जय जवान जय किसान!' 'जय जवान' पर विशवाक छूट नहि कारक प्रतिवादक मातिका छैक, तखन 'जय किसान'क बारे मे त बड़ी कहिया सकैत छो ने ओकर विवाहि बधारी सँ मुकाबला नहि छैक। आज उनका क यदि देहक पेट मानिक्षार किसान कहने सुखी नहि रहलन्ह। यहना डाका ने सँ इन्दिरा गांधी अमक विवश चाहैत छथि त यदि मे हुनकर कोनो दोष नहि।

—अमित ठाकुर

एक विषय विकट रोका दिव मैथिल कहिक विशिष्ट और समावरण सर्व मूनोन्मुखी प्रकृतिक परिचायक। इतिहास ई कहनाइ असंभव नहि रहत जे वर्तमान मैथिली मे हुनको 'विद्वान' पी०एच०डी०, डि० लिट् प्राप्त करैत छथि तकर किनको ध्यान यदि वा रहल कवीको विभूति—अनिष्ठ परिचय बहाली अबात अइ पिछ नहि गेलनि। अपना हमर कहो ने विद्वान नहि मात्र उपाधिक सूचक, मिथिला-मैथिलीक नहि नाम कारन कार्य पूर्ति देख बाहुल्य उपाधिदि विद्वान लोकनि यदि मे अपन अतुल्य समय बेरबाद कैलाह उचित नहि बुझि—विद्यापति, कविता पर बड़ मैसी काम विधक—प्रसाद की मन कालेबुक विषयक नहि हो—जिनका सन पोथ कैलाइ भेलकक कुलेत छथि, कालक विविध पोथी सं दर-बीस कइत नवक क बैसे बहके जैसे पोथा लेखार भ जाहत छनि आ उपाधि मैक हादू सं बैसी कहयें की कहीं!

'धूर्त समागम', पंचसायक तथा रंगशेखरक रचयिता कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर संस्कृत साहित्य मे पूर्ण प्रतिष्ठित आ हरिभित वहिलहु मैथिली काल मे अपरिचित छलाह। १९४० मे जखन म० म० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा नेपाल राज लाइब्रेरी सं प्राप्त विभिन्न मैथिलीक आदि बहुत ग्रंथ वर्ण रत्नाकरक प्रकाशन भासावार्य सुनीति बाबूक प्रसादे हुनकहि सम्पादन मे ऐतिहासिक सोसाइटी सँ भेल—तखन सबो अपन विभूति केँ हमरा लोकनि चीन्हि सकलौं।

'धूर्त समागम'क अनुसार जिनक समय त्रयोदश शताब्दी छल तथा ई रामेश्वरक पौत्र ओ धीरेश्वरक पुत्र छलाह। म० वैद्यनाथ बाबूक अनुसार ई बाबू नाली (नाली मोहन) ग्रामक छलाह। संभवतः वैद्यनाथ बाबूक यदि मान्यताक आधार हिनी उक्त पोथीक हो बाद ने श्रीमात्र्यस्य समाबुध्मिता'''''''' क सर्वं कवि शेखर शर्मा मैसे छथि। ओना नरेन्द्र नाथ दास महाशयक अनुसार ज्योतिरीश्वर ठाकुर कविपति विद्यापतिक पितामह पितियौत छलाह। आस्तिकता ये हो, परन्तु हैरानि एक मैं यदि संदर्भ मे अपेक्षित अनुसन्धानक त कनि की—करों रत्नाकरक बहुतो बीत संस्थानी आइधरि मैथिली मे प्रकाशित नहि भ सकल।

कविशेखराचार्यक विद्वता कुनू एक दिशा मे सीमित नहि छल। दर्शन, साहित्य, संगीत मे हिनक समान अधिकार छलनि तथा कतेको भाषाक प्रकांड पंडित छलाह। पंचसायक मे ई अपना सम्बन्ध मे कहैत छथि—

अथि अज्ञवानधिशातहरसः
खरोलेन दीक्षा गुरुः
श्रीकलाभ्यर्थिताब्दयो श्रुति
श्रुतमधो कवानां शिखा।
संगीताकलाधरणीय रचना

पाठूर्ण चतुरासिका (दंश)"
सदाक: श्रीकविशेखराचिन्तकः
श्री ज्योतिरीश्वरः कवि: ॥

बहितोर्थीक ग्रंथ को निम्न श्लोक सँ बैसे छथि—

मातमनउ काम विद्या द्वारे
हेत्वाकावा निष्पति
यावद् महति मानवस्य तवला
सामवमानिवति।
यावत् कामकला विधर्ध बहुला
वोपीहले वर्नरा
तावत् श्री कविशेखरस्य कृतिना
तावरले शोभताम् ॥

धूर्त समागम मे ओ लिखैत छथि—
तस्योदय-सुकदरतव यहन
स्यामा: दिवसाम्बुरे
वक्त: कर्मभूमातुङ्ग परथी
मिशीहनाचार्यकः।
यो धीरेश्वर वंश धौरितिकयो
दशालवहलाभयम्,
तस्य श्री कविशेखरस्य कविता
अविश्रमासमस्तो ॥

तत्रनैव सकल संगीत विशेष विशोद-आनिमल मनोल पुराकान-यदातविन्न दृष्टाभवा-वक्सरलकैन लिखिता आभोगसवा तुर्भ-भाङ्ग हाक्ती कलापालेन अपरसलबोध-रसबाहुकाएकैकस्त कनूकीनो उत्पादन मीमांसा महोत्सवेन शर्मिकारस्य शैलेश तथ व्याता पत्रित कीर्ति श्रीरैकसमानकलेन महाकाल मेलोकीभरु प्रमाणकि (श्रीकलापुष्टि-Nepal N.S.) बन्यसूचिका कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरेन मिश्राकुलम विरचित धूर्त समागम नाम नाटकम् । महासमिति-विद्याविद्योतिस।

अतः कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक व्यक्तिक आकृतिक परिचय हमरा लोकनि केँ हुनके लेखन द्वारा प्राप्त होइछ।

वर्णरत्नाकर मैथिलीक आदि गद्य-ग्रन्थ हेवाक गौरव बाइ गोनो केँ प्राप्त छैक से किछ वर्ण-रत्नाकर—कविशेखरक एकमात्र मैथिली कृति मे आइधरि हमरा लोकनि केँ प्राप्त भ सकलाह। ओना बहुतो विद्वान जिनक 'धूर्त समागम' केँ सेहो मैथिलीक नाटक कहला मैथिलीक प्रथम नाटिका कहैत छथि, परन्तु यदि पर मतैक्य नहि भ सकलाह।

वर्ण-रत्नाकर मात्र मैथिलीक आदि गद्य-ग्रन्थ नहि, अपितु समस्त नव भारतीय भाषाक आदि गद्य ग्रन्थ थिक कारण आइ धरि कुनू भाषा मे यदि सँ पहिलुक वा समकालीन गद्य-ग्रन्थ नहि प्राप्त भ सकलाह।

म० म० हरप्रसाद शास्त्री तथा सुनीति बाबू द्वारा 'वर्णन रत्नाकर' कहने छथि आ यही सँ बढ़ल महत्व ओ विषय वस्तुक परिचय प्राप्त होइछ। हिनका लोकनिक मतानुसार यदि पोथीक 'उद्देश्य'-थानी कवि भी कामक लोकनिक विशिष्ट वर्णना एकत्रीक कान समादन करलनि, तथा, यदि

(शेषांश पृष्ठ पाँच पर)

नारी, विधवा कानून आ हमर समाज

"आ, विवाहक दुइए-तीन वर्षक बाद कहुना विधवा भ' गेलीह। कानून मुताबिक, कानून विधवा सभ आ पतन पहि महा-सप्तदशीया विधवा के देखैत छी त' मोन होइत अछि जे आगि लेसि दी सेह आ कुरान जे आ नयुत्पत्ति ने आ यदि देखने कहाँ कानून सन ओहि धारीक देखभाल आगिमे भसम क' देल जाइत अछि! ओहि दिन कानूनक संग बात आइलि छलीह त' मनोवैज्ञानिक अवसाद निहुरने बैसल विनोद कोठामे सुखाय सलि छलथिन, कोनो हुसार करैत रहलि छलीह। ओहिमे बैसल मानुष छलनि—ओहि निहुरलोसे देखल सन ताहू दुनू समक विवाहक दहिन अंग-अंगमे दुखमोसे, नहुएँ-नहुएँ देह करैत कानून बड़लोभ दयाभाव क' हुने संविधा आइल छथि—जीवनक अन्दर आकांक्षा मे अभिशापक आइल जकरूप उमर सेष सन कानून।

"…सेना विम रंगक, विम मादि पहु-क्षेत्र समानहीन-मुक्ति कतहु रहीवा" छेकब मारल, दुखमाक देह, कोठरमा, देखब-देखब आँखि, ज्योतिहीन, मन्द-पक्षिम दृष्टि, मैक, परम मैस सूखा आ सेसो हबार सँ पेयरी आगक आ तेसर हबार सन कानून सुखल जीवनक परि-हता, देहक दरिद्रता, अधिकारक वंचिता, पददलित होइत।

"…बाद निर्मला दीदी मैथका छथि, कहि कानून देलीह, परन्तु कपूर'र दाह देलीह कोनो कपूर'र एलई हितोई आ कोनो कथ सुपि नहि देवाइ आ मेनका यन्त्रलाल रहल करैथ। कम विवाहित छेलाह, मेनकाक शरीर सँ वात्सल्यमक सम्पदक अम्पाइ' करवाना, कम दुषपने देलाह, मेनका पुनीव देह-दान-सेवा करबबा…"

तब समाक भौगोलिक रूप कथा "बहुत मेनका" सँ सेहे ई तीन कमलाल भिक। यदि समाक तीन शालक स्थानीय मेल तीन सँ अवतरण मे एकर्ता करत छेक, एक गोट पीड़ा छेक। ई पीड़ा हमार-आक वर्गक पीड़ा भिक। यदि पीड़ाक कोनो मानवीय समाधान नहि अछि। कम पीड़ाक हक छेक, मुदा यदि नीड़ाक कोनो हक तकवाक कोनो प्रभाव आइयो नहि भ' रहल अछि।

मिथिला आइ नवयुग - रतुमायक अछि। दरिद्रता छेक। अशिक्षा छेक। कुरीति छेक। धर्म आ धार्मिक कर्मकाण्डक उपाय कहवाले बीकाइत बनल छेक। दहिक शोषण होइत छेक।

दरिद्रोमे दरिद्र छथि मैथिल नारी। शिक्षा नहि बन नहि। आर्थिक रूप से व्यावहारिक हक नहि। अपन रोजगार कर-बाक छूटि नहि। नोकरी आ दोकानदारी करबाक कोनो सामाजिक व्यवस्था नहि।

मैथिल नारीक ओहेन शोषण आ दमन दुइ रहल अछि। तकर ओकरा प्रतिकार करबा साहस, कोनो साहसे नहि भेटल।

संयुक्त राष्ट्रसंघक मानवाधिकार कमिटि बेहिन-बेहिन घोषणा दिये विश्व-मानवताक ध्यान आकृष्ट करैत अछि, ताहिमे नवजातक आ मानवीय ई घोषणा भिक। मुदा संयुक्त राष्ट्रसंघो हमरा ध्यान नहि देल, तकर कारण छेक जे मनु महराजक सिद्धांत मे कहि कड़ मजाड़ल दैविक नारी कर्मक अभिनुदंक मे नीकि कड़ामोल आइत अछि। वर्तिक समाज-रेखामे राजनीति, न्यायालय, सर्वोच्चल पौरुषिकता मे डेराइल अछि।

ओतह कहैत अछि जे अहाँ ओकरि समाजक बैसा छी। अहाँ ओकनिक समाजमे नव धार्मिक अछि। समाज के सुधारु। व्यवस्था-प्रचार इमका करू। विधवा-विवाह लेल समाज के प्रेरित करू।

हम कहैत छियैक जखन कुमारि कन्याक विवाहमे कतेक हजार-लाख परैत छेक, त' विधवाक विवाहमे कतबा करैत पड़तैक।

कुमारी कन्याक जल-जुग-विवाहक कोनो सूत्र कतबा यदि समाज मे नहि छेक, त' विधवाक सूत्र के सूझत? ते विधवा-विवाहक सांस्कृतिक-सामाजिक समाजो कम-कामर कोनो काम होनवाक संभावना नहि अछि। कोनो कक दोषि समाजक हमरा दुनने सम्भव नहि करैत अछि।

लोक कहैत अछि जे व्यवस्था-प्रथा आवश्यक मानि गेल। कथा धन समृद्धि मेल आ बहुत अछि। यदि व्यवस्थाक कोनो आ कानून करत छैक की नहि?

हमरा दुनने एखन आ यदि स्थिति मे ई प्रथा हकार बहुत आ एकर अन्त एखन सम्भव नहि अछि।

कानून-प्रथा आदि सब मे एखन प्रच-लित अछि, ओकर इतिहास बड़ पैघ। पहिने, आइ सँ तीन-चारि सय वर्ष पूर्व धार्मिक मूल पुराणोक आइत छलैक। ओ सर्वविवाह परम्परे नहि छलैक, कन्योक मूल्य छलैक। आ मे जो बाजल छलैक आ ने कन्यामूल्य छलैक, ओ धार्मिक मूल छलैक। यदि मे नगदीक कानून मेथो छलैत छलैक आ नहियो भड़ कलैत छलैक। ते एक प्रकारेँ ई धार्मिक विवाहक मूल्यांकन आ स्वीकार छलैक। ई बहु आ दबाव नहि छलैक। ई समाजक अभिशाप नहि छलैक।

विवाहक प्रचार-प्रसार, युरोपीय शिक्षाक व्यापक होयबा सँ हम आधुनिक व्यवस्था-प्रथा के जोड़ैत छी।

आचरि भर कानून-इंजीनियर नहि होइत छलाह, जोकरीक कोनो योग्यता-समता दुनका मे नहि रहैत छलनि, शहिदा पारि ओक आदि सँ कुल सँ लेख मूलक आइत छल। आधुनिक लोक धन सँ, धन कमयाक क्षमता सँ, पद सँ पैघ बूझल जाइत अछि।

अहिंसा यदि लोक आइ कहाँ युरोपीय पुस्तिका सँ सीखित नहि छल, तँ हुनका यदि

अजगुत-अनटोटल

● जेना कि पता चलल, मिथिलांचलक संगहि सम्पूर्ण बिहार-प्रदेश (बिहार) मे प्राथमिक कक्षाक छात्र ओकनिक बीच पोथीक लेल हाहाकार मचल अछि। मार्च मास बीति गेलेक पछाति पोथीक कमी पता नहि छेक। बिहार मे यदि लड़क पोथी बिहार टेक्स्ट बुक कॉर्पोरेशन छपैत आ ओकरे द्वारा एकर बिक्रयो करल जाइत। ई संस्था बिहार सरकारक निजी संस्था थिक। ओना यदि संस्थाक सेहो ई कुनू नव घटना नहि। प्रायः प्रति वर्ष बढ़िया होइत छेक। विशेषता यदि सेहो ई छेक जे मैथिलीक संगहि आनो भाषाक पोथी उपलब्ध नहि छेक जखन कि आन-मेर भाषा-भाषा भाषाक पोथी त समय पर भेटि जाइत छलैक मुदा मैथिली पोथी आसा-पिपासा सँ पहिने नहि भटकैत जाइत छल। न सबेर मैथिलीक प्रव-क्तिनक दुखवागी पर फेर से कहीं मैथिली विरोधक भावोत आवाज आ ते 'लोप वाहित बहुआयाम जगत।

ओना बिहार मे छात्र ओकनिक लेल ई एकमात्र समस्या नहि छेक, एखन कतेको समस्या छेक। जखा मध्यमाक पोथी सम सुलभ पोथीक दोकान सँ विद्यार्थी प्राप्त करैत। मुदा ई पोथी ओकरा तखनहि दोकानदार देत छैक जखन कि ओ कोइ विषय नोटक पोथी कीने लेल तैयार हो। नोटक पोथी त बहुते पईक के ओकरा

हको पोथी छुड़ नहि रहैत छेक आले देखलक सँग कुनू समर्थ। दाम टेक्स्टबुक सँ सम्पहि दोगुन-तेबर रहैत छेक। समस्य से नहि कोनो से छुड़ दोकानदार टेक्स्ट बुक देतेक नहि तँ बाबू भ ओक के कोनो कामहिए पड़ैत छैक। समाज मे टेक्स्ट बुक कमिटीक संग मुखरा निर्णय छात्रक आठि-पाठि रहैत छेक आ रहैत छेक मोट निबन्धिहार छपनिहारक। आ यदि स' गठित पड़यंत्रक शिकार करैत बाद छात्रक अभि-भावक छथ। सरकार कम करैत बाद—कानूनक ओकरा मिलेँ छथ त।

मैथिलीक मामला मे बहुविहार तथा मैथिली पढ़बिहार छात्रक मेल त ओकरो समस्या ई छेक जे जखन कि ओहो बर्ग आन भाषक पोथीक दाम दू-तीन गुणा रहैत छेक ताहू दाम मैथिली पोथीक दाम सम्पहि दोगुन रहैत छेक आ से सीमित रोजक आइत छेक ताकि लोक मैथिली नहि पढ़ि हिन्दी वा अन्य भाषा पढ़य।

टेक्स्ट बुक कमिटी आ बिहार सर-कारक ई सम्मिलित षड़यन्त्र सर्वो' ल' यदि लक्ष्य आ दाम मे आदियाहि जाबो रहल। समस्यक बाद त ई ते सेवो छात्र अभिभावक ओकनिक बात बाड़ नहि होइत छनि के यदि दुनिया षड़यन्त्रक विरोध करता। शिक्षाक सहायक एक रेप

(शेषांश पृ० पाँच पर)

व्यवस्था-प्रथा ट्रटैक समाजक नहि मेल छलैक। जेना-जेना हमरा ओकनिक युवक नोकरी तथा शिक्षा करैत गेलाह, नीक धन बटोरइ तथा पद आ नोकरी करैत गेलाह, दुनक दाम बहुत बढ़लनि। आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा आ विवाहक बाद नोकरी लगलाक ई दोइ व्यवस्था के बढ़ो-लक अछि, मुदा बहुत अछि आ आधुनिको बढ़लोत। लोक शिक्षाक प्रति आकांक्ष-कायवाल मेल अछि; लोक नोकरी मे बाद कमायवाला पदक प्रति आकांक्ष मेल अछि। तेँ लोक व्यवस्था आ वर-पुरुषक प्रति विनायुक्ति मेल आवाक मेल आ बहुत अछि। तेँ हम देखैत छी जे व्यवस्था प्रथा पहलाक स्थान पर बढ़ैत अछि।

लोक कहैत अछि जे शिक्षा बढ़तैक, जागरण बढ़तैक, लोक व्यवस्थाक बूझत, असमानहीनता आ अनुदारेसता के बूझत आ कानून-प्रथा समाप्त भड़ जायत। हम एकर उनटा देखैत छी, शिक्षा बढ़लाक संग संग कानून-प्रथा बढ़ैत अछि, घटैत नहि अछि।

हम आधुनिक प्रचलित शिक्षा-प्रणाली के, युरोपीय शिक्षा प्रणाली के दुखिया कहैत अछि, ते हम मानि कड़ कहैत अछि। आधुनिक शिक्षा नोकरी बाद बढ़ा लोक बनबा रहल अछि, विवेकशील मनुष्यक निर्माण नहि कड़ रहल अछि। प्रचलित शिक्षा सँ लोक धन-लोलुप मेल

अछि। विवेकशील नहि, नहुँमी पढ़लोक लोक नोकरी पैदा करबा समय मे दुरि-दुरि नगर छेक, ई लोक सेहो शिक्षा उत्पन्न करबाक अछि। कारणक लोभ आ नोकरी द्वारा मेल बलेल ढंग सँ अर्जित करबा आय तथा एकर लोभ के हम व्यवहार नहि बुझैत छी।

आचरि ई शिक्षा विकासो, कोनो, समाज-चेतना सँ विहीन लोकक निर्माण करैत रहैत, तावत ई शिक्षा दुखिया रहबे करत। दुखिया ओ थिक जे व्यक्ति के वैयक्तिक लाभ-हानिक चिन्ता सँ ऊपर उठा कड़ ओकरा सामाजिक हानि-लाभक चिन्ता सँ उदार, बलिदानी आ श्रेष्ठ बनाबय।

मिथिला मे हाथा-माटीक मूल्य छेक, मकान-महीसक मोल होइत छेक, कुमारि कन्याक कोनो मोल नहि छै। जखन कुमारि कन्याक मोल नहि छेक, तखन विधवा स्त्री आ साधारण स्त्रीक की मोल होयतैक?

मिथिलाक स्त्री एखन मनुष्य नहि छथि। कन्यादान हमरो सूचित करैत अछि जे नारी दान मे देबाक वस्तु थिक। मनानी लोक नहि थिक। मनानी गाय, चादर, गाछ आ तुलसी-बरकन्दी कहाँ दान देबा योग्य दुनक वस्तु थीक। विवाहा बेटी कहाँ एक गोट वस्तु, एक गोट "कनोहीरी" थीक।

● जीवकान्त

लालबुझक्कड़क चिट्ठी

श्रीमान् सम्पादक जी सादर
सप्रेम नमस्कार।

आशा [illegible] छी जे अहाँक पत्रिकाक पहुला अंक मे [illegible] लेख [illegible] नहि देखि [illegible] हम लाल बुझक्कड़ मे सेहो। [illegible] की? सम्पादक जी, [illegible] मैथिल छथि। [illegible]

[illegible]

सम्पादक जी, [illegible] मैथिली [illegible] बिहार सरकार [illegible] सम्बन्धी [illegible] विचार करब आवश्यक।

सम्पादक जी, [illegible]

ने लाल बुझक्कड़ [illegible] होयत। [illegible] मैथिली [illegible] नेता [illegible] सम्पादक [illegible]

[illegible] 'सहानुभूति पूर्वक' विचार करबाक आवश्यकता देखा रहल छथि। [illegible] 'गम्भीरता पूर्वक' विचार करबाक माथ [illegible]।

त से कहै छी सम्पादक जी, [illegible] लाल बुझक्कड़ के [illegible] मैथिली [illegible] मैथिली-भाषी [illegible] मैथिली [illegible] मातृभाषा [illegible]

[illegible] मैथिली [illegible]। [illegible]

[illegible]

हँ त कहैत छलहुँ, [illegible] लाल बुझक्कड़ [illegible] रचना [illegible]।

[illegible] निश्चय [illegible] 'मिथिला-मिहिर' [illegible]

[illegible] सहयोग [illegible] बनल रहै।

[illegible]

श्रीमान् लाल बुझक्कड़
[illegible]

★

कविता

मीताक नाम

लिखथ ते बैसै छी
गंगा [illegible]
[illegible] जाइत छी
[illegible]

स्वाभाविक
[illegible]

अभिशापित [illegible]
आर्त्तनाद कोलाहल
[illegible]
क्रन्दन [illegible]
[illegible] श्मशान मे
[illegible]

घंटा ध्वनि
शंखनाद

रसहीन, मानहीन
कंकालक देश
हमर मातृभूमि ~~मिथिला~~ [illegible]
'विश्वाता सुजलाम्'
मिथिला ई—
बिसरल भि जाइत अछि—
मानै छी मीत
हमर [illegible]
[illegible] हमर, सहय
लिखि नहि सकै छी आब
अर्थ करै छी प्रलाप
संकुचित विचार बोध [illegible] जाइत अछि
किन्तु
हम बाध्य छी
जखन त [illegible] छी
आइक आलोक मे
निराशाक बिहरी
[illegible] चलि जाइत अछि
लिखथ ते बैसै छी
कथा आजादी के
व्यथा बेरबादी के
[illegible] चलि जाइत अछि।

—राम लोचन ठाकुर

अब्दुल अनटोटल…

[illegible] हेतु यदि [illegible] से [illegible] अछि—[illegible] बिनु [illegible] बैनाइ सकै—

× × ×

** [illegible] 'शासा-शिक्षा' [illegible] अछि [illegible]। [illegible] रेन्टू [illegible] शिक्षा। [illegible] हेनाक [illegible] सकै अछि, [illegible] टाका [illegible] रहलक।

सरकारक [illegible] शिक्षा [illegible] बिनु [illegible] शिक्षा [illegible] चाहैत। [illegible] लाइसेन्स [illegible] नहि छलैक। [illegible] शिक्षा [illegible] बिनु [illegible] लाइसेन्स [illegible] छलैक। [illegible] बिनु [illegible] नहि [illegible]। [illegible] सरकार लाइसेन्स [illegible] शिक्षाकों [illegible] रहलक। [illegible] नहि [illegible] सकैत [illegible] छलैक।

यदि [illegible] शिक्षोत्थान [illegible] नहि। [illegible] छैक [illegible] छैक। [illegible] नहि [illegible] शिक्षा [illegible] देलैक?

[illegible] शिक्षा [illegible] चाहइ। [illegible] शिक्षा [illegible] नहि [illegible] शिक्षाकेंद्र [illegible] अछि। [illegible] नेता—[illegible] सोचनिहार।

[illegible] शिक्षा [illegible] छथि [illegible] जे सरकारी [illegible] छथि। [illegible] हो त यदि [illegible] दृष्टिकोण [illegible] शिक्षा [illegible] हएत। यदि [illegible] दृष्टिकोण [illegible] चाही। [illegible]

शिक्षा [illegible] अछि, [illegible] रोटी-रोटीक [illegible] व्यवस्था त [illegible] करब चाहिऐक।

× × ×

[illegible] विद्यापति [illegible]—दक्षिणांचल [illegible] केन्द्र [illegible] अछि। [illegible] अछि। [illegible] रहल छैक। [illegible] रचनात्मक रचना [illegible] नहि होयत। [illegible] केन्द्र [illegible] अछि।

[illegible] दक्षिणांचल केन्द्र [illegible] अछि। [illegible] रचनाकार [illegible] रचना [illegible] अछि। [illegible] रचनाकार [illegible] अछि। [illegible] अछि।

[illegible] रचनात्मक [illegible] रचनाकार [illegible] होइछ। रचनाकार द्वारा [illegible] रचनाकों [illegible] कवित, [illegible] कवित [illegible] कवित [illegible]।

यदि केन्द्र [illegible] नहि रहैछ। मिथिलाक भाषा मैथिली [illegible] मैथिली [illegible] चाही। [illegible] मैथिली [illegible] कार्यालय [illegible] बाधित [illegible] अछि।

यदि केन्द्रक कर्मचारी [illegible] नहि [illegible] नहि [illegible]। [illegible] कर्मचारी [illegible] चाहइ।

[illegible] केन्द्रीय सूचना [illegible] ध्यान [illegible]। [illegible] आदि [illegible] रचनाकार [illegible] केन्द्रक [illegible] होयत। [illegible] आवश्यक नहि [illegible]? [illegible] ध्यान देत।

कवि शेखराचार्य…

[illegible] वर्णन [illegible] हो तँ कौन-कौन [illegible] वर्णन [illegible] हो तँ [illegible] आवश्यक।

वर्णरत्नाकर [illegible] अछि। यथा—(१) नगर वर्णन (२) नायिका वर्णन (३) आस्थान वर्णन (४) ऋतु वर्णन (५) प्रयाणक वर्णन (६) भट्टादि वर्णन (७ श्मशान वर्णन। [illegible] वर्णन अछि। [illegible] वर्णनक [illegible] लिखि।

वर्णरत्नाकर [illegible] होइछ। [illegible] मैथिली भाषा साहित्यक [illegible] होइछ।

[illegible] कवि शेखराचार्य [illegible] मैथिली रचना [illegible] नहि [illegible]। [illegible] 'वर्ण-रत्नाकर' आ 'विद्यापति पदावली'क [illegible]; [illegible] सांस्कृतिक [illegible] हो, [illegible] हो। [illegible] नहि [illegible] होइछ। [illegible] मिथिला-मैथिलीक [illegible] शिक्षाकाल मे सहायक।

—मुजतबा काजी

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय

मिथिला [illegible], [illegible] धाम, दरभंगा, द्वारा आयोजित [illegible] परीक्षा यथा :—[illegible] विशारद, [illegible] विशारद, आयुर्वेद विशारद, [illegible] विशारद, [illegible] विशारद, [illegible] विशारद, कृषि विशारद, [illegible] विशारद, [illegible] विशारद, शिक्षा विशारद, विधि विशारद, पत्रकारिता विशारद, [illegible] विशारद, ज्योतिष विशारद, [illegible] विशारद, [illegible] (मात्र [illegible] हेतु), [illegible] शास्त्री [illegible] शास्त्री [illegible] शास्त्री [illegible] आचार्य [illegible] आचार्य [illegible] विशारद [illegible] चिकित्सा [illegible] चिकित्सा [illegible] चिकित्सा विज्ञान [illegible] चिकित्सा विज्ञान [illegible] परीक्षा मे सम्मिलित होयबाक हेतु [illegible] परीक्षा संचालकक नाम सँ [illegible]।

डा० [illegible]
कुलपति

डा० [illegible] ठाकुर
कुल सचिव

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली [illegible] केन्द्रीय विश्वविद्यालय [illegible] दरभंगा [illegible] शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना [illegible] मान्यता [illegible] नियमावली [illegible] विस्तृत विवरण [illegible] करथि।

डा० [illegible] कुलपति

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, [illegible], दरभंगा द्वारा आर० एम० पी० ए० पी०, आर० [illegible] तथा आर० एम० ए० क प्रमाण पत्र [illegible] परीक्षाक [illegible] टाका मे नियमावली [illegible] सकैछ।

डा० [illegible] शर्मा सचिव

(विज्ञापन)

वैदिल बयना

संरक्षक सदस्य

१६. श्री कन्हैयालाल झा,	कलिकाता	२७. " श्याम नारायण झा	बर्दपुर
१७. " मोहित मिश्र	"	२८. " कृष्ण बिहारी झा	[illegible]
१८. " रामचन्द्र झा	"	२९. " [illegible] नन्द झा	[illegible]
१९. " विष्णुकान्त झा	"	३०. " दुर्गानन्द राय	"
२०. " देव कुमार झा	"	३१. " [illegible] झा	[illegible]
२१. " कृष्ण कान्त चौधरी	"	३२. " श्रीनन्द चौधरी उमानगर, [illegible]	
२२. " गौरी कृष्ण झा	"	३३ " हेम झा	" "
२३. " [illegible] राय	"	३४ " [illegible]	[illegible]
२४. " [illegible] झा	"	३५. श्रीमती [illegible] झा	" "
२५. " [illegible] राय	"	३६. श्री [illegible] झा	[illegible]
२६. " [illegible] झा	"	३७. [illegible] 'पुस्तकालय, [illegible], [illegible]'	

विशेष-सूचना

मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ताक एक आवश्यक बैसार आगामी १८ अप्रैल १९८२ के बेरिया ४-३० सँ उमानगर स्कूल मे होयत। मोर्चाक प्रत्येक सदस्य तथा सहयोगी लोकनि सँ यदि बैसार मे उपस्थित हैबाक अनुरोध कयल जाइछ।

यदि बैसार सँ आय-व्यय हिसाब देहो प्रस्तुत कयल जाइछ तँ प्रत्येक सदस्य सँ निवेदन जे हुनका पास जे रसीद बही व्यवहृत/अव्यवहृत होनि तथा चन्दाक पाइ होनि से ११ मार्च १९८२ धरि संयोजक लग (वैदिल बयना कार्यालय मे) अथवा श्री जनार्दन झा, उमानगर लग जमा कै देथि। यदि कन्दर्भ मे प्रत्येक सदस्य सँ १५ मार्च १९८२ क भेटल कार्ड देहो लिखल जा चुकल छनि। पुनः [illegible] नहि भेटल होनि से ११ अप्रैल १९८२ धरि रसीद बही तथा चन्दाक पाइ जमा क देथि।

पुनः कारण बश जँ [illegible] रसीद बही आ पाइ जमा करबा मे असुविधा होनि तँ [illegible]। अथवा बैसार मे उपस्थित होयबा मे असुविधा होनि तँ ओ तकर पूर्ण सूचना 'वैदिल बयना' कार्यालय मे लिखित रूप मे पठाबथि से अनुरोध। बैसार मे विचारणीय विषय रहत—

१. आय-व्यय हिसाब
२. अगिला कार्यक्रम निर्धारित तथा
३. [illegible]

विनीत :
रामलोचन ठाकुर
संयोजक

'वैदिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५०) पइसा
१ वर्षक	५) टाका
५ वर्षक	२०) टाका

पाइ पठेबाक पता —

श्री जनार्दन झा,
१७/५, उमा नगर,
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सँ :—

वैदिल बयना मे अपन विज्ञापन दय लाभ उठाउ। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सँ अधिक प्रचार एक मात्र माध्यम।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
अरुणोदय प्रकाशन,

बाल गीत

झिझिर कोना

झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ
मिथिला के आङन मे सगतरि धैताउ -
उत्तर हिमालय आ दक्षिण मे गंगा छइ
कोशी आ गंडक मे हेद नहाउ।
उत्तर आ दक्षिण के भेद बिसराउ
मिथिला के सन्तति छी मैथिल कहाउ
कन्हा स कान्ह जोड़ि जाति-पाति अगड़ि तोड़ि
मिथिला के माटि उठा माथ सँ लगाउ॥
माय, मातृभूमि, मातृभाषा महान
कखनो ने होमय एकर अपमान
मायक जे बोल सुनि बाजै मे लाज करी
अपनो बाबू आ अनको सिखाउ॥
राष्ट्र नमस्कार कोठी के कान्ह
चीन्हल ने जायत के अपन आ आन
भेंट जखन होइ वा जायट जहाँ छी
'जय मैथिली' केर आदति लगाउ॥

— रामलोचन ठाकुर

* ई गीत एहि सँ पहिनहुँ एकबाज प्रकाशित भेल छल। 'वैदिल बयन'क पाठक लेल पुनः प्रकाशित कयल जाइछ।

'वैदिल बयना'क पाठकक लेल विशेष उपहार

राम लोचन ठाकुरक तीन गोट बहुचर्चित पोथी—

१. इतिहासहंता (कविता संग्रह)
२. बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य रचना)
३. प्रतिध्वनि (विदेशी कविताक मैथिली रूपान्तर)

चारू टाकाक पोथी मात्र चारू टाका मे।
सदियायाक सदस्यक हेतु मात्र सात टाका मे।
बी० पी० खर्च अतिरिक्त।

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करथि—

अरुणोदय प्रकाशन
३३/१, डा० देवदार रहमान रोड,
कलकत्ता-७०००३३

कहु लोचन कबिराय

सरकारी फरमान छिक श्रमिक मजूरक नाम
है उत्पादन वर्ष छिक सुनू सोरि सभ कान
सुनू सोरि राम कान न बिलरु एसमा नाला
मुँह बाबि ककू काज, न हो अधिकार-तमाशा
कहु लोचन कबिराय श्रमिक कारक सरकारी
शासक मालिक मात्र शोषक छिक अधिकारी

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/१, देवदार रहमान रोड, कलकत्ता-७०००३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पारमिल आर्ट प्रिन्ट, ३२-बी, इन्द्रावर मेवाल स्ट्रीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित। सम्पादक : श्री जनार्दन झा

मैथिली मुक्तिमोर्चाक प्रमुख मासिक पत्र

[illegible]

वर्ष—१ अङ्क—८ | मा. १९८[illegible] | मूल्य—पचास पइ

सम्पादकीय

मैथिली आन्दोलन आ मादि-पानिक प्रश्न

[illegible]

—जय मैथिली

> संविधान बिनु मैथिलीक औ
> मान्यता बिनु मिथिला धाम
> काहि लागि सूझाह कथ हम
> विद्रोही मिथिलाक सन्तान

मिथिलाक विभूति—४

कवि विद्यापति

[illegible]

(१) कीर्तिलता
(२) भू परिक्रमा
(३) कीर्ति पताका
(४) पुरुष परीक्षा
(५) शैव सर्वस्वसार
(६) गंगा वाक्यावली
(७) विभागसार
(८) दान वाक्यावली
(९) दुर्गाभक्ति तरंगिणी
(१०) [illegible] तरंगिणी
(११) विद्यापति पदावली

[illegible]

[illegible]

कविपति विद्यापति महान [illegible]

[illegible]

कविपति विद्यापति कैं [illegible]

[illegible]

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्या[illegible]

मिथिला [illegible], दरभंगा द्वारा आयोजित [illegible]

[illegible]

डा० [illegible]
कुलपति

डा० [illegible]
कुल सचिव

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैथिली [illegible] केन्द्रीय विश्वविद्यालय [illegible] दरभंगा [illegible]

डा० [illegible], कुलपति

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, [illegible], दरभंगा द्वारा [illegible]

डा० [illegible], सचिव

(विज्ञापन)

दू गोट कविता

(गत अक्टूबर मे कलकत्ता मे मैथिलीक एक पत्रिका दूटि रहल छल आ दोसर पत्रिकाक जन्म देबाक लेखक आ अधिकारीक मध्य रहल छल। अक्टूबरक अन्तिम सप्ताह मे वही मनःस्थिति मे लिखल दू गोट कविता)

(१)

हमरा लोकनि भाषाकेँ
भाखा नहि रहए दए कए म्याउजिया खुरचनि बनौने छी
यदि खुरचनि केँ कहीं पूजने पिपेने छी
हम ओकरा परिवहनमे लिपेने छी
बचौल बर्खमे यदि खुरचनि पर गहय करैत
हमरा लोकनि अपन-अपन कोइ बहार करने
इच्छनि रहल छी
अथवा कोनो मन्दिरमे स्थापित करैत अछि
तथा हमरा लोकनि सम्पूर्ण लोक पर हकने
फिरैत छी
यदि ईहाक सुनासुन होइ
झुलैक भारी मे चलैत अछि
ई झुलिक भारी अनुशासित तँ रहने अछि
जे दिन-राति मिथिलाक बोरा ढबैत अछि
प्रत्येक झुलिक भारी
फिफिमे हिय बनैत अछि

(२)

हमरा लोकनि भाषा केँ आइयो गाछी बना देल छी
यदि गाछीकेँ सिखबा लेल सब कमी तैयार होइत छी
गाछी आबत गाड़ी पर रहैत अछि,
हमरा लोकनि कबात मे कठमारि सुसबैत छी
गाछामे बसान पानि मे घड़ डिबैत
तँ बेसी काल रहुइ तमाशा होइत अछि
कोक कठमारि केँ पानि मे
चन्द्रमाक गहवा मे
ओकरा खोहिया पहुँचैत अछि
गाछी मे आगाँ आइब, मे पाछाँ
बो टामहि हाम
चन्द्रमाक देखइ-अर्पैत अछि
चारक कड़ेर पर ठाढ़ बरेखो कोक
बेर-बेर पढबे तमाशा देखैत अछि
ई गाछी आइयो कोनो मोड़लिमे नहि
सुकमाक बाहु पर टुकइ अछि
प्रत्येक बेर पुड़ी खाय
मिथिलाक बोरामे सुइक अछि

—जीवकान्त

•

मैथिली दोहा/पद्य कीतु आ पद,
नेपाल सँ प्रकाशित मैथिली द्वैमासिक

कर्णामृत

संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर
सरस्वती सदन, जनकपुरधाम, नेपाल

ग्वालियर सँ प्रकाशित मैथिली + हिन्दी द्वैमासिक नाटिक

मिथिला दीप

सम्पादक : प्रवास बिहारी
१६६, हरिशंकर कोलोनी ग्वालियर-४७४००६

मृत्यु अभिमन्युक

(जीवकान्तक शिशिर—हुनक वृत्तु कविताक संदर्भ मे)

मृत्यु निश्चित
चारू-कात सँ चक्रव्यूह तोड़ि
अपराजेय अभिमन्यु
अखन आपद अछैत
त
आडिहान लेल आतुर
हजार-हजार सशस्त्र हाथ
ओकरा आबद्ध क लैत छैक
आ तैखन
पहुँच लैत ओकरा पीठ पर
जयद्रथक
एक नहि अनेक हुरा—
की आर्तनाद त नहि करैत
कहि केँ तकैया अछि
आ कहि पड़ैत—
कोना
महाभारतक की कथा
पुत्रहु नहि
आकर्षक बनबैत छैक
जे
आतम द्वार भेदनक कला सँ अनभिज्ञ
शत्रु सँ घेरल
असहाय अभिमन्यु
मृत्यु केँ प्राप्त भेल छल
आ भविष्यहु
अभिमन्युक मृत्यु
पहिचान होइत छैक।

—राम लोचन ठाकुर

मिथिलांचलक विकास

मिथिलांचलक प्राय: स्वतन्त्रता भी कही आजादी केँ तीस बरख भोजकी प्राप्त नहि होइत छैक। प्रति अंगीक आजादीक सेवा-भोजन मे बात होइत अछि जे एकताक कोनो भाग सँ आजादीक दमन होइ छल मे बेसी अछि। भारत देश मे प्रत्येक अछि जे मिथिलांचलक सामाजिक प्रशासन प्रकृति रहल अछि। स्वतन्त्रताक पूर्व मे रोक अछि। गाई-गामक स्थान पर गामीणताक आर्थिक भोजा-पानिक व्यवस्था नहि अछि। सामाजिक समाज तीन नहि रहल अछि। बहुत रेखो रंग बुझला जाइत छथि। आम, भात, मखान आदि कहु लेल आ कहु नहि होइत अछि। देश सँ लोकक कार्यक्रम तथा सुख्य उत्पादन, विवाह, काम, दर्शन आदि एक परिस्थिति अछि मे समाजक भ रहल अछि। समाजक लोक केँ एक दोसर केँ संकल्प दृष्टि सँ देखैत छथि विचारक नामक चीज गलाल नहि रहल अछि। पाहुन केँ पानि विश्राम देइ आवइ काम लोक छोड़ि रहल छथि। एहि प्रकार समाजक मे एक एकता उठ टूटि रहल अछि। बुझा ई सब मिथिला, कोनू समाजक प्रयोजन अछि? एकेरा उत्तर अछि जे आध्यात्मिकताक निश्चयक एवं भौतिक वादी विचार धारा मे समझ समाज अछि रहल अछि। एका कोनो सुख-सुविधा प्राप्त करबाक साधन भावनात्मक सुख शान्ति कतनो नहि रहल, नहि होएत। सर्वत्र एकर समन्वय होइ आवश्यक अछि। जीवन स्तर, रहन सहन, शिक्षा-दीक्षा, खान-पान, आमोद-प्रमोद, हास्य-विनोद, संगीत-नृत्य, कला-कौशल, साहित्य, आचार आदि कलयुगी रूप धारण कए लेने अछि। विवेक, त्याग, शील, सहिष्णुता, अनुशासन, परोपकार, संत सेवा, शुद्ध भोजन आदि केँ पेंच दैत छैक आदि देखा देखी मे अपन संस्कृति केँ नष्ट क रहल छथि। किछु लोक अपन बच्ची आ परिवारक सदस्य सँ मैथिली बिसरि शुद्ध हिन्दी मे बजैत छथि। मैथिली बजबा मे लजाइत छथि।

शीघ्रे पुरान अछि बुझा अन्यत्र आदि शुरुआत अछि जे मिथिलांचलक विकास कार्य गतिशील बनाबक चाही। एहि लेल सामाजिक आदि मे ग्राम, प्रखंड, क्षेत्र, अंचलक आओर राज्य स्तर पर विचार गोष्ठीक आयोजन हो आ गोष्ठी द्वारा पारित प्रस्ताव केँ कार्यान्वित कएल जाए। गोष्ठी द्वारा एक कार्य प्रस्ताव पारित कएब आवश्यक अछि।

लाल घुमक्कड़क नाम

(मजगर दैनिक बयना)

श्रीमान् लाल घुमक्कड़ जी—महाराज,

अहाँ मैथिली आवाज करै !

अजगुत-अनटोटल

आद्यपुरुष पुरुषे कुलमांगी श्रीमान अंशुके साहित्य बाद सभाएं मिथिलाक्षर मुख्य मंत्री छथि बिहारक स्वयंभू अमेरिकन डा० श्री रामाश्रम मिश्र। ओहेना हिन्दी मे बड़-बड़ पुरुष अछि—श्री मद्वोद कहा अमरभू—नामक सभा वैस गुण—जेना कि पमचार सीधमेरे बड़ैत छथि—छनि, पुलि मखम मे प्रतिभा। मिथिला मे एही मह प्रतिष्ठित कहबा छैक—प्रमाण, कारण ओ औषाप, सब त काव्य की मरि छत। बोलक कहब छैक जे वे अवरोधे तीनू, मैथीक खोज लगहि बाम बानिजो काम किन्हु अनुक एकोतो अा आप मे बानित (इ) क मैता मिलई छल नहि मानि सकेत छथि। आ ले एकाव सोठे भूप सं एक-अाद सब बानिजो लेकि ऐसी अनामन्त्रण डा० मदेव त सात नहिने दा मानि सकेत छथि। जेना कि सुलबा मे अनेक, मुख्य संगीत ग्राम लेखा सं पहिने डा० साहेब दू गोट महत्वपूर्ण बयाम से हो लेने छलाह। पहिल त मिथिला, मैथिल-मैथिलीक मिला-हक आ दोसर छल नहि भवनान। पहिल कायक निर्णय ई नीक कर्म करैत आयल छथि—से त सयाबे हुवे छनि परन्तु दोसरोक निर्णय मे ई शम्भू नहि छथि तखन हुनके उदाहरण लिय—नपुरनी मे अबर एतक नवनक उद्घाटनक समय हिनका द्वारा देल गेल भाषण। एहिठाम ई कहबनि जे हिनक अलग मैथिलीक संवैधानिक मान्यता देल 'पुर सम्मान' अछि तथा मैथिली अकादमी मे एहि बर्ष बारि लाख सरकारी अनुदान देल गेल ए। पहिलक संदर्भ मे जेना कि ई अपने बयेब छथि हमी व्यक्तिगत मिही प्रधान मंत्री के लिखने छथि.......बहाँ भरि बोसल बात अछि मिथिला मिहिरक सम्पादकीय को सबू पता चलेत जे माम मधइली हुनक उनका अनुदान अकादमी मे देल गेलेह। ओना ई लिम बाद मेल जे जगनाथ मिश्र बारि बोटि मोबक मामाक जनमक नाम पर अनेक अकादमी के (ओना बाजल छैक ई अकादमी किनके स्वकाल पोषण करेछ) जे अनुदान देत अनि एहन छथि तहु अनुदान मे भोजपुरी अकादमी, एमी प्रति-शत मैथिल भाषा नहि रहैत हिन्दी अकादमी आ दुनिके बहुला 'देश प्रतिशत मैथिल भाषा' उर्दू अकादमी के बचैत अनुदान देल छथि मे नहि कहेत छथि। से जे हो, किन्तु हमरा भौतिक सुझाव जे 'नोबेल पुरस्कार कमिटी' मानव त ओकरा कृषि बड़तिहारक लेल ऐहो पुरस्कार बोषणा करब साहित्य का एकर पहिल पुरस्कार डा० श्री बिहारक मुख्य मंत्री श्री जगनाथ मिश्र साहेब के देबाक चाहियेक।

नवकी-दिल्ली, १३ मइ १९८२ केन्द्रीय शासन-दल कैंप मंत्र बरिष्ठ देलक जे संविधानक अष्टम अनुच्छेद मे आर कोनो भाषा कें शामिल नहि कएल जाएत। ओना तरितोषक लेल, जो पहिलका दे तखन सरकार मध्य-अबल-भाषा एकक कोइ भाषा सब कें, जे संविधान मे शामिल भए गेल अछि, प्रिन्सिपल सुझन दुनेल देल रहल हे उचित।

एतक उक्त अनेक मैथिली, नेपाली, डोंगरी आ मणिपुरी भाषाक संवैधानिक मान्यताक। नेपालीक लेल ८० सांसदक बरबर विधान बना संघ पहि संदर्भ मे अबाम बात कइ केन्द्र सं बहुत पहिने अनुरोध कैल मुख्य बाद तथा नेपाली भाषा अंचल मे सरकारी तन्त्र कायम मान्यता प्राप्त सन जे एकरा मान्यता भो व्यावहारिक रूप दे मुख्य अइ। मणिपुरीक लेल सेहो ओकर तरकार लेने छैक। पाछू भइ डोंगरी आ सब सं पाछू मैथिली। मैथिली नाम बिहार सरकार द्वारा, मनोविनोदहु नहि भइ, अपितु पुलित पड़बंत्रक शिकार भेल अछि। ओना बनता के अपनो पासने सुभम साहित्य के कल्याण मिलक करोड़ जनो भाषा मे बोलै सबका छैक मइ हुनका नीक दरियहुँ परिणामी लोक सं भेटी नहि।

भावुक मुख सं राजकीय मान्यता अंतर्राष्ट्रिय बिहु कुछु भाषा संस्कृति विकास बनलाक आ बिहार सरकार त पहिलहि साथ क देने अछ जे मैथिली संविधान मे नहि अछ, तें एकर सरकार ओकरा मान्यता नहि देत। पता नहि ई समाचार कतबाक बात सुलन मानी छाहिय बरिष्ठ इव मैथिलीक विकासक लेल 'पुरस्कार' बहु की माफत आ की कला। ओना एहि सं पूर्व विधान-सभाध्यक्ष राधानन्दन झा एतबाक सुवि-धार करैत मैथिलीक विकासक एवं पड़बंत्रक मीसारोपण करइ चुकल छथि। की एहा प्रावुक भाषा केन्द्र सरकारक निर्णय तथा बिहार सरकारक भाषायी सामान्तिक पूर्वाग्रह थिक?

आत मध्य कइ जे बारि कोटि मिथिला बासी कि चुनेबाक दोसर सदस्य नागरिक बन सरकारी कोनो आ कोनेह रहलइ से कहेत भोगाइ?

—रुचित बक्षा



सारदा देवी

पुत्री : स्व० पं० गणेश झा
कोकन

पत्नी : स्व० सुरति ठाकुर
बाबूपाली

मैथिलीक युवा साहित्यकार एवं मैथिली मुक्ति मोर्चा भवानीपुरक संयोजक श्री राम सोचन ठाकुरक पुजनीया मा श्रीमती शारदा देवीक आकस्मिक देहावसान श्यामा शाहि कालेज अस्पताल मे अपन ग्राम बाबूपाली मे दिनांक ९ अप्रैल १९८२ कें भए गेलनि। ई मुख सर्व सं मैथिल म्यानि छल छलीह। ई मिथिला-महिला, शील-भाव मे पूर्ण भद्र व्यवहार कुशल आ धर्मपरायण महिला छलीह। स्व० सारदा देवी अपना पाछां एक मात्र पुत्र, पुत्रवधु, तीन पौत्र आ दू पौत्री कें छोड़ि गेल छथि।

'देसिल बयना' चन्दाक दर :—

१ प्रति	५०, पइसा
१ वर्षक	५) टाका
५ वर्षक	२०) टाका

पत्र मनीआर्डरक पता :—

श्री जनार्दन झा,
१०६।६, उषा नगर,
बखियरपुर-८०००१६

विज्ञापन दाता सोचनि सँ :—

'देसिल बयना' मे अपना विज्ञापन देब अवस्य चाही। एक सर्वे मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचार एहि माध्यम सं।

सम्पर्क करू
विज्ञापन व्यवस्थापक
भवानीपुर प्रकाशन,

देसिल बयना

राजकीय परिवारक (प्रतिमाहा) सदस्य

३८. श्री रामचन्द्र झा, उषानगर, कलकत्ता
३९. ,, मनोज झा ,, ,,
४०. ,, कमला नारायण कर्ण ,, ,,
४१. ,, सुरेन्द्रलाल मिश्र, उषा नगर, ,,
४२. " कमलनारायण झा " "
४३. " कान्ति बिहारी मिश्र ,, "
४४. " सुरेन्द्र नाथ झा, टेकहा, "
४५. " सुशीलाल झा, मधुआसहा, "
४६. " राम नारायण मिश्र, उषा नगर, "
४७. " बहुरेन्द्र लाल दास, कलकत्ता
४८. " शंकर मिश्र, तरही, दरभंगा
४९. " निलम्बर मिश्र, " "
५०. " कुमारी ज्योति झा, कलकत्ता
५१. " भवनाथ झा, बालदेवा

मिथिलाक्षरक विकास

भैया, मैथिल कायस्थ बुझू, मैथिलीक दर्शन कतहु नहि छैक!!! मैथिलीक विकास आ सर्वेक बचैला उचन विद्या—मैरे अंग्रेजी में हुलहाए धय रहल है???

तन ड्रामाक मुह जका अगरे बढ़बा छल अछि से अपन मन कें सन्तोष करैत अपने सं कहइ अनेका कइ तहु सी-सी लाल्हुलकही, बहां के जे सोन हो से लिखू—वे बाही ले प्रदर्शन मे कहल भानु नीक पर्यन्त लिख कहेन की बुझा गाइने—भगवानभक्तक विरोध के लिखू जहि किछी भी मैथिल मिथिलक, बुझक माहुमा-मैथिली छोड़ि मने ओ बाहीं अपना सोन छथि ते अपन तोल के देखाए बेल उचिक नहि। ऐह कुवक।

अदीक
—विलम पंडित

मिथिलावासिक माङ

१. मिथिला राज्यक निर्माण हो।
२. मैथिली कें अबिलम्ब विधान संविधानक अष्टम अनुच्छेद मे स्थान हो।
३. समस्त सरकारी। अर्ध-सरकारी प्रति-योगितामूलक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
४. मिथिला मे शिक्षाक सं उच्चतम स्तर धरि शिक्षाक माध्यम मैथिली हो।
५. मिथिलाक प्रधान राजभाषा मैथिली हो।
६. मिथिला मे सरकारी कल-कारखानाक स्थापना ओ विकास हो।
७. मिथिलाक कृषिक अवस्था मे सुधार हो आ एहि मिथिला मैथिली मे सुविधा व्यवस्था हो तथा सहायतार्थ सुव्यवस्था हो।

—रामाधार मिश्र
बाले—मैथिली युक्तिमोर्चा,
कलकत्ता

सभा-समिति

● कलकत्ता, १८-४-८२। पूर्व घोषणाक अनुसार मैथिली-सुधि मौलाभि वैसार ... [illegible]

(द्वारा—जनार्दन झा, सह-संयोजक)

● [illegible] ... [illegible]

(द्वारा—वैद्यनाथ मिश्र)

● कलकत्ता-१-५-८२। ... [illegible]

चिट्ठी-पुरजी

"वैदिक मयला" ... [illegible]

—भारती महात्म सिंह, पटना

... [illegible]

—श्री देव झा, हिन्द-मोटर

... [illegible]

—आशीष कुमार झा, ... [illegible]

बालगीत

मामा, आब बुझेछी !

मामा, अहाँकी पोथिया से आब बुझैछी।
... [illegible] से आब बुझैछी॥
मामा आब बुझैछी।
... [illegible]
... [illegible]
... [illegible]
मामा आब बुझैछी।
... [illegible]
... [illegible]
... [illegible]
मामा, आब बुझैछी।
... [illegible]
... [illegible]
... [illegible]
मामा आब बुझैछी॥
मामा, अहाँकी पोथिया से आब बुझैछी।

... [illegible] 'भ्रमर'

कहइ लोचन कविराय

इएक ... [illegible] पुरान ... [illegible]

... [illegible] प्रकाशित ... [illegible] कलकत्ता ... [illegible] सम्पादक—श्री जनार्दन झा